अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
	मित्रता की सीख (चित्रकथा)	5
1.	उठो धरा के वीर सपूतों (कविता)	9
2.	पुस्तकालय (कहानी)	17
3.	विमुद्रीकरण (लेख)	23
4.	तीर्थयात्रा (कहानी)	31
5.	जग जीवन में जो चिर महान (कविता)	43
6.	शल्य चिकित्सा के जनक (कहानी)	49
7.	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (साक्षात्कार)	58
8.	भीष्म (कहानी)	67
9.	कृतयुगी विनोबा (जीवनी)	74
10.	भिक्षुक (कविता)	81
11.	मास्टर जी (एकांकी)	88
12.	हिरोशिमा की आग (सत्यकथा-कहानी)	95
13.	बाघा जतिन (जीवनी)	105
14.	भारत की सांस्कृतिक एकता (निबंध)	114
15.	हिंद महासागर का मोती 'मॉरीशस' (यात्रा-वृतांत)	123
	अभ्यास प्रश्न पत्र-1	133
	अभ्यास प्रश्न पत्र-2	135

अध्याय

मित्रता की सीख
(चित्रकथा)

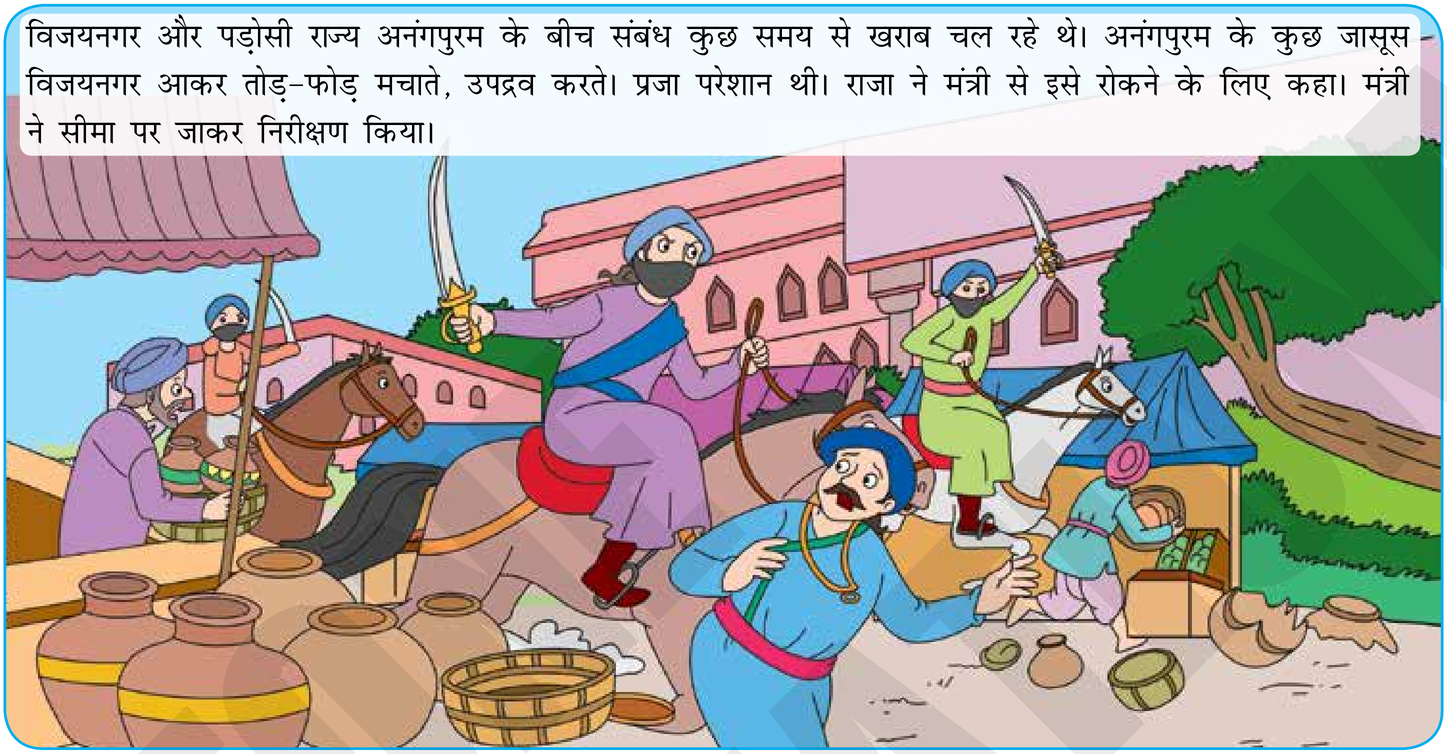

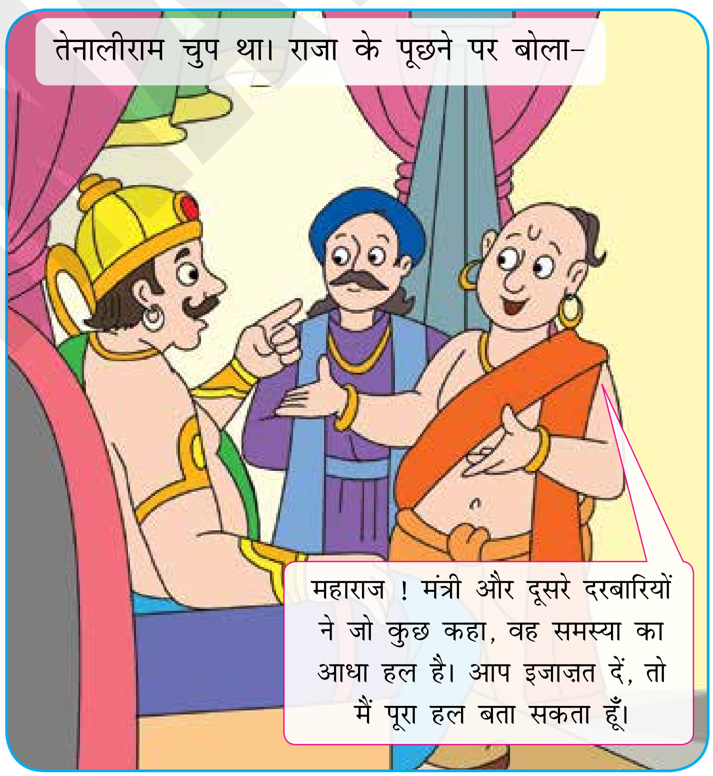

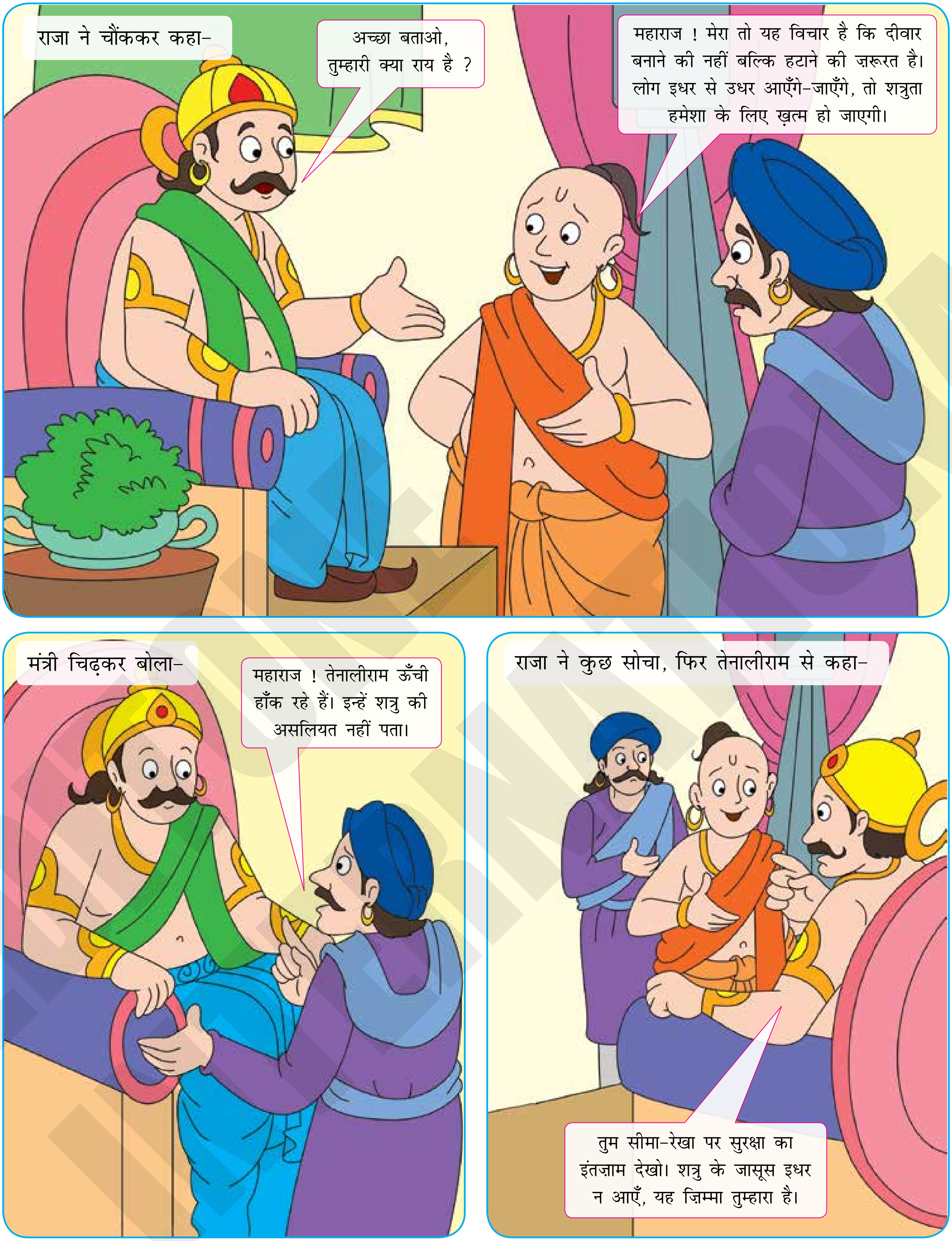
राजा ने चौंककर कहा–
अच्छा बताओ, तुम्हारी क्या राय है ?
महाराज ! मेरा तो यह विचार है कि दीवार बनाने की नहीं बल्कि हटाने की ज़रूरत है। लोग इधर से उधर आएँगे-जाएँगे, तो शत्रुता हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगी।
मंत्री चिढ़कर बोला–
महाराज ! तेनालीराम ऊँची हाँक रहे हैं। इन्हें शत्रु की असलियत नहीं पता।
राजा ने कुछ सोचा, फिर तेनालीराम से कहा–
तुम सीमा-रेखा पर सुरक्षा का इंतज़ाम देखो। शत्रु के जासूस इधर न आएँ, यह ज़िम्मा तुम्हारा है।

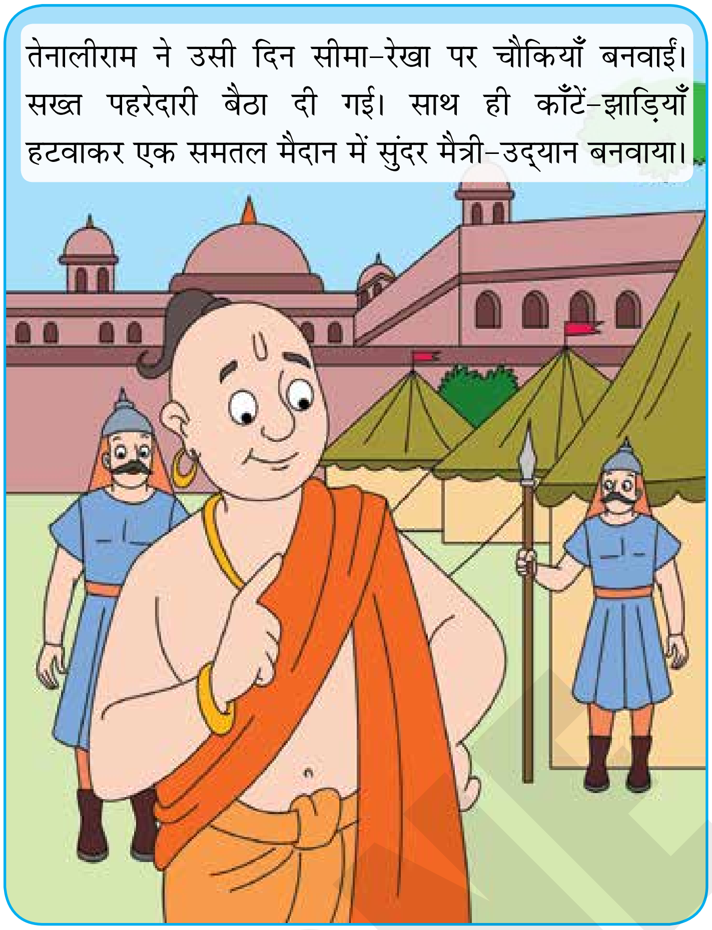
तेनालीराम ने उसी दिन सीमा-रेखा पर चौकियाँ बनवाईं। सख्त पहरेदारी बैठा दी गई। साथ ही काँटें-झाड़ियाँ हटवाकर एक समतल मैदान में सुंदर मैत्री-उद्यान बनवाया।

फिर पड़ोसी राजा को संदेश भिजवाया गया–
आपके यहाँ से गायक, संगीतकार और कलाकार इस मैत्री उद्यान में आएँ, तो हमें खुशी होगी।

अगले पंद्रह दिनों में अनगिनत कवि, लेखक, कलाकार आए। बड़ा अनोखा मेला जुड़ा, जिसमें मिलकर गायकों ने दोनों देशों के लोकगीत गाए, नृत्य और अन्य कार्यक्रम हुए और सभी ने दोस्ती की कसमें खाईं।
वाह! क्या बात है।
वाह!
वाह!

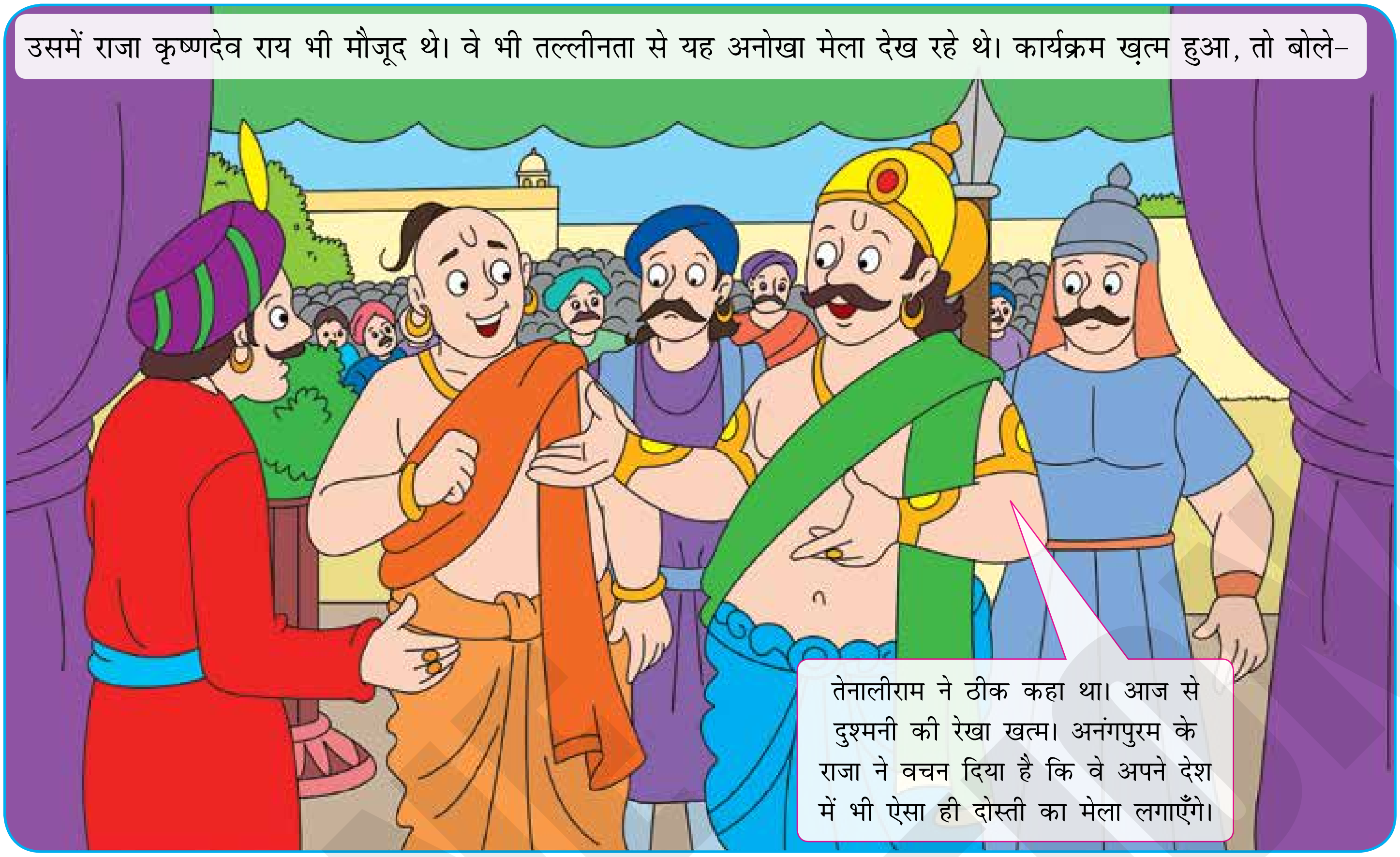

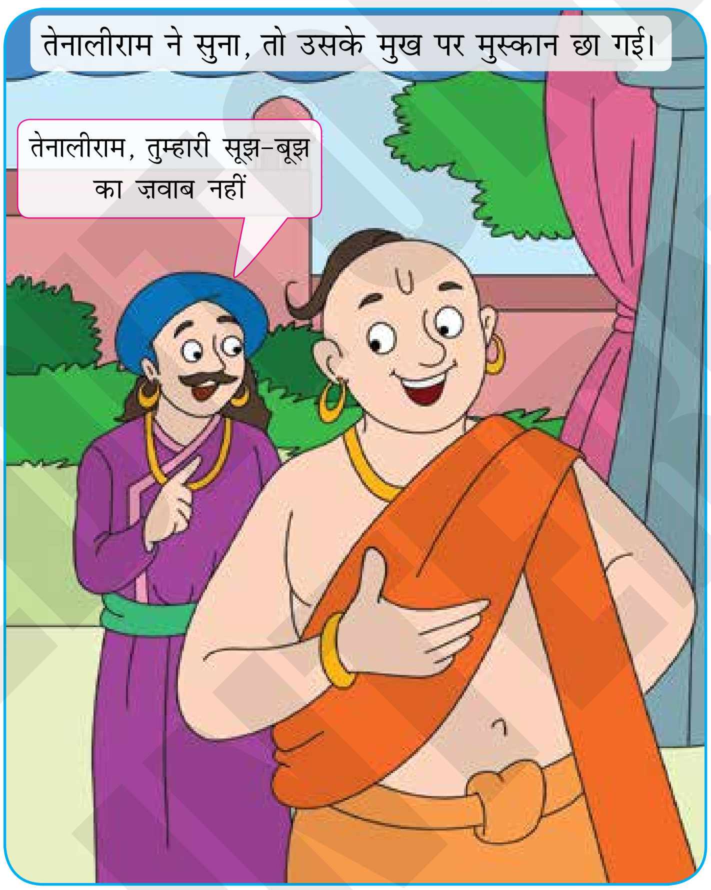

शिक्षा – मैत्रीपूर्ण व्यवहार से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

अध्याय 1

उठो धरा के वीर सपूतों
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

✣ प्रकृति द्वारा हमें किस प्रकार नव चेतना का संदेश प्रतिदिन दिया जाता है? कक्षा में बच्चों से इस विषय पर टिप्पणी अध्ययन पूर्व करवाएँ।

कविता का मूल तत्व

स्वयं में नई चेतना व जागृति भर कर नवयुग में नवराष्ट्र का निर्माण करना।

उठो, धरा के अमर सपूतों!
पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से,
नव-स्फूर्ति, नव प्राण भरो।

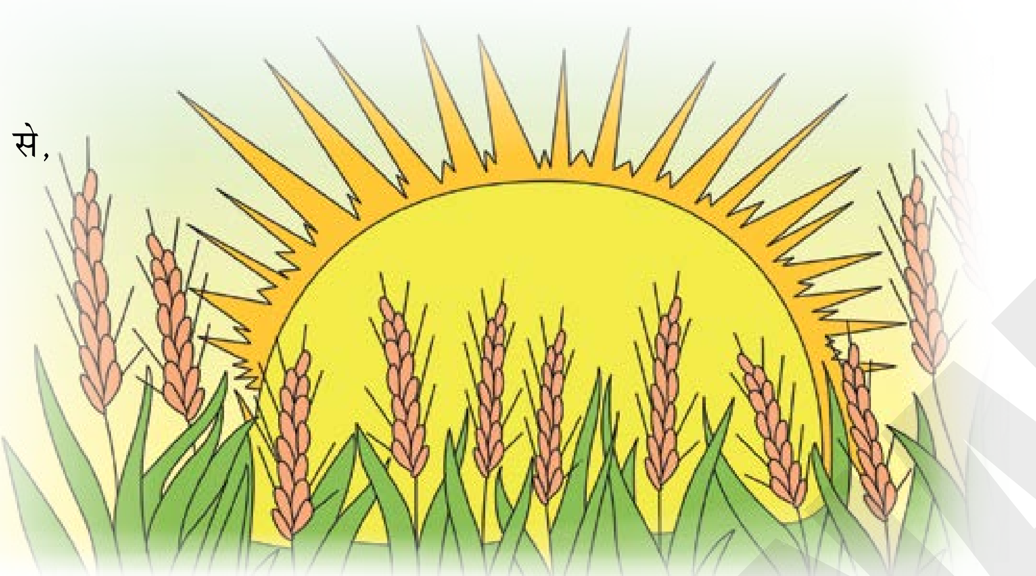

नया प्रातः है, नई बात है,
नई किरण है, ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगें,
नई आस है, साँस नई।

युग-युग के मुरझे सुमनों में
नई-नई मुस्कान भरो।
उठो, धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ,
नए स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे,
मस्त उधर मँडराते हैं।

नवयुग की नूतन वीणा में,
नया राग, नव गान भरो।
उठो, धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

कली-कली खिल रही इधर,
वह फूल-फूल मुस्काया है।
धरती माँ की आज हो रही,
नई सुनहरी काया है।

नूतन मंगलमय ध्वनियों से,
गुंजित जग-उद्यान करो।
उठो, धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

सरस्वती का पावन मंदिर,
शुभ संपत्ति तुम्हारी है।
तुममें से हर बालक इसका
रक्षक और पुजारी है,

शत्-शत् दीपक जला ज्ञान के
नवयुग का आह्वान करो।
उठो, धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

—द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

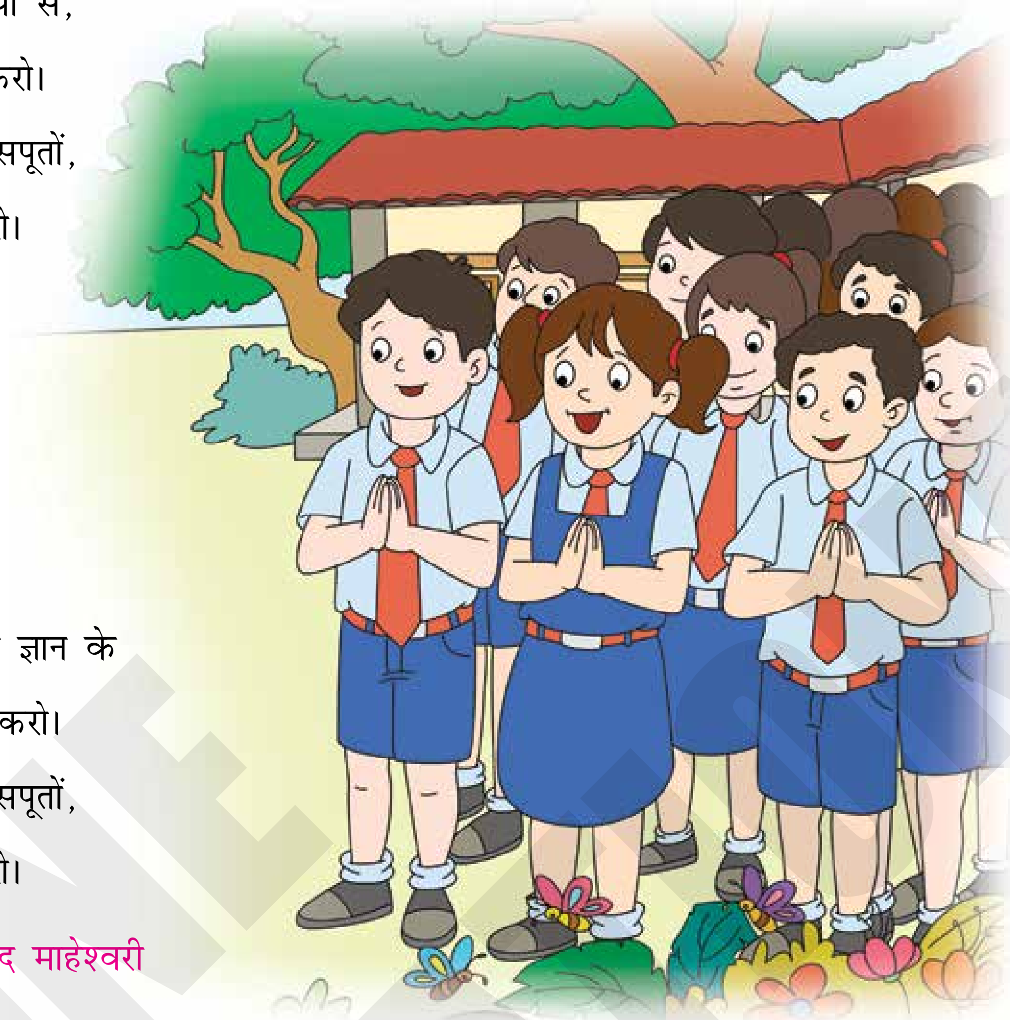

शब्दार्थ

आह्वान	= आमंत्रित करना	नूतन	= नया
निर्माण	= रचना	स्फूर्ति	= उमंग
अमर	= जो कभी न मरे	नवयुग	= नया युग

उच्चारण करें

मंगलमय ध्वनियों उमंग विहग गुंजित
संपत्ति पुनः

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कविता के माध्यम से चेतना एवं जागृति के संबंध में विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए
Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) प्रस्तुत कविता में पक्षी क्या कर रहे हैं?

(ख) कवि ने किसे संबोधित किया है?

(ग) प्रस्तुत कविता के रचयिता कौन है?

(घ) नवयुग की नूतन वीणा में कवि क्या भरने को कह रहा है?

ज़रा लिखिए
Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) धरती माता की काया कैसी हो रही है?

....

(ख) कवि संसार-रूपी बगीचे को किस प्रकार गुंजित करने को कह रहे हैं?

....

(ग) कवि धरती के वीर सपूतों को उठने के लिए क्यों कह रहे हैं?

....

(घ) कविता का केन्द्रीय भाव क्या है?

....

3. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) कवि ने नई-नई मुस्कान भरने कहा है-

☐ मुरझाए फूलों से ☐ भौरों से ☐ पक्षी से ☐ सभी से

(ख) प्रस्तुत कविता के रचयिता कौन है?

☐ भगवती प्रसाद वाजपेयी ☐ रामधारी सिंह दिनकर

☐ निराला ☐ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

(ग) कविता का मूल भाव क्या है?

☐ चेतना का निर्माण ☐ जागृति की आवश्यकता

☐ पुन:निर्माण की आवश्यकता ☐ अन्य

EDUTONE INTERNATIONAL

4. सही मिलान कीजिए।

(क) अमर	मुस्कार
(ख) सुमन	स्वर
(ग) विहग	राग
(घ) वीणा	सपूतों

5. दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

स्फूर्ति   नवयुग   धरती   स्वर

(क) डाल पर बैठे पक्षी नए .... में गाते हैं।

(ख) जन जीवन में नई .... और प्राण भरो।

(ग) .... माँ की काया सुनहरी हो रही है।

(घ) ज्ञानदीप जलाकर .... का आह्वान करें।

6. कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा कीजिए।

(क) युग-युग के ....

....

....

.... निर्माण करो।

(ख) सरस्वती ....

....

....

.... पुजारी है।

7. दिए गए शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) संपत्ति – ....

(ख) आह्वान – ....

(ग) भौंरे – ....

(घ) ज्योति – ....

(ङ) स्फूर्ति – ....

(च) नूतन – ....

(छ) उमंग – ....

(ज) प्रकाश – ....

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

8. संपूर्ण भारत ने ज्ञान की देवी 'माँ सरस्वती' के जन्म दिवस को बसंत पंचमी के उत्सव रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक जन माँ सरस्वती की अराधना कर क्या आशीर्वाद माँगना चाहेंगे? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

9. क्या धर्म एवं जाति के आधार पर देश में नव निर्माण संभव है? कक्षा में चर्चा कर अपनी सहमति/असहमति को कारण सहित प्रस्तुत कीजिए।

EDITIONE INTERNATIONAL

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

10. दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

(क) नूतन – .... (ख) भगत – ....

(ग) आस – .... (घ) उमंग – ....

(ङ) सपूत – ....

11. अशुद्ध शब्दों को शुद्ध कर पुनः लिखिए।

(क) ग्यान – .... (ख) उधयान – ....

(ग) सर्फुती – .... (घ) निृमान – ....

12. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।

(क) निस्संकोच – ....

(ख) दु:शसन – ....

(ग) निष्फल – ....

(घ) पुनर्जन्म – ....

13. दिए गए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बनाइए।

(क) जो नया हो – ....

(ख) जो देखने योग्य हो – ....

(ग) शक्ति के अनुसार – ....

(घ) जो देखा न जा सके – ....

14. दिए गए शब्दों में लगे कारक चिह्नों के आधार पर वचन बदलें–

(क) फूल को – ....

(ख) देव से – ....

(ग) उमंग पर – ....

(घ) धरा के – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

15. प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

16. प्रस्तुत कविता के कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी के विषय में जानकारी एकत्रित कर दस पंक्तियाँ लिखिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

17. हमें जीवन में नई चेतना, उमंग और विश्वास के साथ बढ़ना चाहिए। आप अपने जीवन का नव निर्माण किन मूल्यों पर करना चाहेंगे?

EDITONE INTERNATIONAL

अध्याय 2

पुस्कालय
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

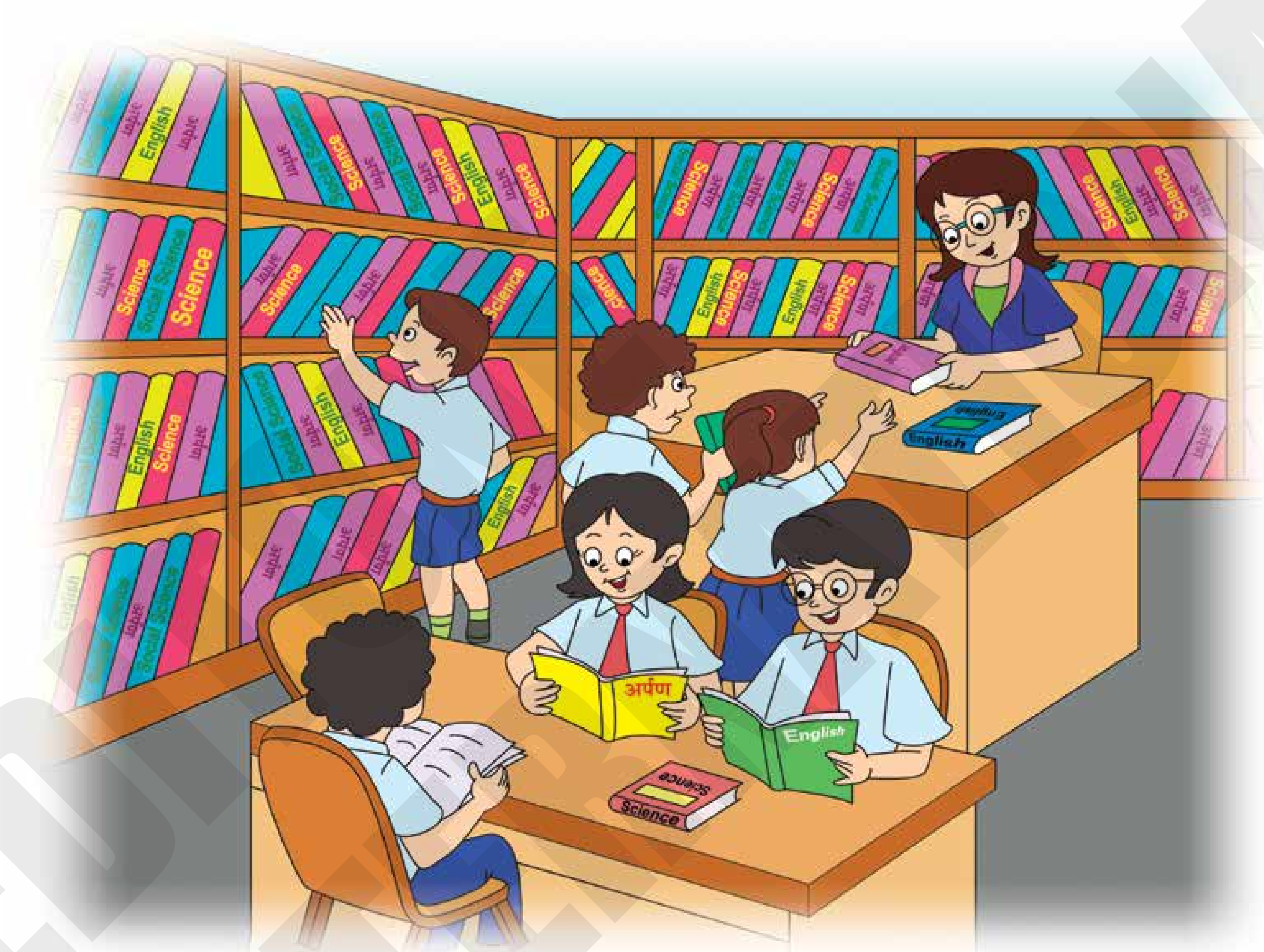

- शिक्षक/शिक्षिका उपरोक्त चित्र आधार पर बच्चों से यह टिप्पणी करवाएँ कि एक अच्छा पुस्तकालय कैसा होना चाहिए?

कहानी का मूल तत्व

पुस्तकों के माध्यम से हमें ज्ञान में वृद्धि करते रहना चाहिए।

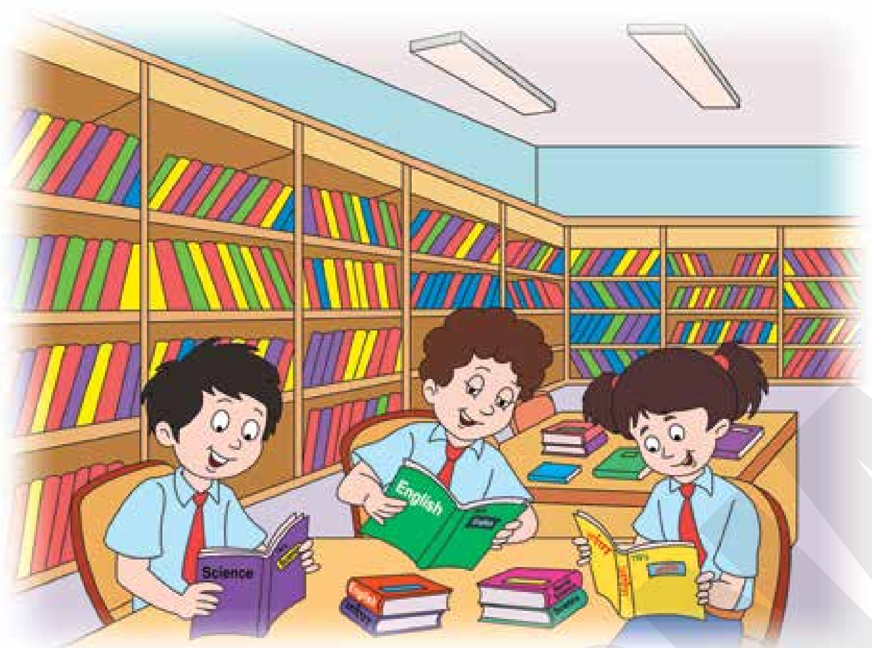

पुस्तकालय को पुस्तकों का घर कहते हैं। प्राय: प्रत्येक विद्यालय या छात्रावास में एक पुस्तकालय होता है। यह वह स्थान होता है, जहाँ पर विषय के अनुरूप पुस्तकों का चयन और संग्रह किया जाता है। पुस्तकालय की पुस्तकों को करीने से रैक में सुरक्षित रखा जाता है। उन सारी पुस्तकों की विषय के अनुसार ही सूचियाँ बनाई जाती हैं और उन्हें किसी रजिस्टर में दर्ज किया जाता है। उस रजिस्टर से ही पता चलता है कि कौन-सी पुस्तक किस रैक में किस नंबर पर रखी है।

पुस्तकों के लेन-देन और पुस्तकालय की देखभाल के लिए एक या दो व्यक्ति नियुक्त किए जाते हैं, जिन्हें पुस्तकालयाध्यक्ष या लाइब्रेरियन कहा जाता है। उनकी सहायता के लिए एक-दो कर्मचारी भी नियुक्त किए जाते हैं, जो पुस्तकें निकालकर देने में सहायता करते हैं और पुस्तक को वापस सही स्थान पर रखते हैं। पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। पुस्तकों से हमारा ज्ञानवर्द्धन होता है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों; यथा-कला, विज्ञान, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, आयुर्वेद और कथा कहानियों आदि की पुस्तकें संग्रहित की जाती हैं।

पुस्तकालयों को तीन प्रकार से बताया गया है, प्रथम प्रकार के निजी पुस्तकालय होते हैं। जिसमें कोई भी व्यक्ति जिसकी रुचि होती है उसी अनुसार पुस्तकों का संग्रह करता है। द्वितीय प्रकार के पुस्तकालय सार्वजनिक होते हैं जिसमें समाज के संपूर्ण वर्ग के लिए पुस्तकों को संग्रहण किया जाता है। तृतीय प्रकार का पुस्तकालय संस्थागत या वर्ग विशेष के लिए होता है।

'निजी पुस्तकालय' व्यक्ति की निजी संपत्ति होती है, जबकि 'सार्वजनिक पुस्तकालय' पर जनता या सरकार का स्वामित्व होता है। निजी पुस्तकालय के स्वामी का यह अधिकार होता है कि वह अपनी पुस्तकें किसी को दे या न दे। जबकि सार्वजनिक पुस्तकालय में से कोई भी व्यक्ति पुस्तकालय के नियमों के अनुसार पुस्तकालय का सदस्य बनकर, पुस्तकें प्राप्त कर सकता है और उसका उपयोग करके उसे वापस कर सकता है।

स्कूलों में स्थापित पुस्तकालय यद्यपि स्कूल की निजी संपत्ति होते हैं, किंतु सभी छात्र-छात्राएँ और आस-पास रहने वाले व्यक्ति भी, उस पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं। ऐसे पुस्तकालयों को 'संस्थागत पुस्तकालय' भी कहा जा सकता है। ये उनकी निजी संपत्ति होते हैं। विभिन्न संस्थाएँ भी पुस्तकालय स्थापित करती हैं।

द्वितीय श्रेणी के पुस्तकालय जो सार्वजनिक होते हैं, वहाँ सामान्यत: आम जन जीवन से जुड़ी पत्र-पत्रिकाओं को भी मँगाया जाता है। जिनका अध्ययन पुस्तकालय में बैठकर शांति के साथ किया जाता है। इस प्रकार

के पुस्तकालय में बिना रोकटोक या भेद-भाव के कोई भी आ-जा सकता है। हालाँकि उन लोगों को वहाँ की मर्यादा का ख़्याल करना पड़ता है।

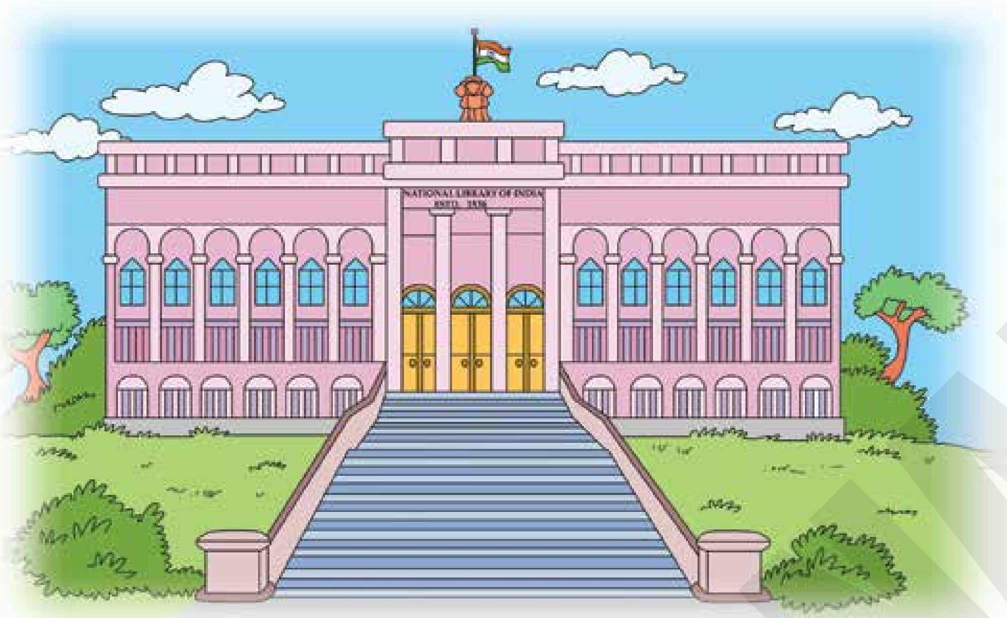

पुस्तकालयों से सबसे बड़ा लाभ यह है कि वे व्यक्ति या वे छात्र, जो महँगी पुस्तकें नहीं खरीद सकते या संग्रह करने में असमर्थ हैं, पुस्तकालयों से पुस्तकें लेकर अपनी पढ़ाई कर सकते हैं।

केवल इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी होता है कि पुस्तकों को किसी प्रकार की क्षति न पहुँचाई जाए। उस पर कुछ लिखें नहीं, उसके किसी पृष्ठ या तस्वीर को फाड़े नहीं और उसे छुपाकर चोरी से घर न ले जाएँ। पुस्तकें सार्वजनिक संपत्ति होती हैं। उनकी सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। इन पुस्तकालयों के माध्यम से हम अपने देश की ही नहीं, अपितु देश-विदेश की संस्कृति को सुरक्षित रखते हैं। ये पुस्तकालय ज्ञान का संचित कोष अपने भीतर समेटे रहते हैं। ये राष्ट्र की धरोहर होते हैं। और राष्ट्र की इस धरोहर का उपयोग करने तथा इसे सुरक्षित रखने का सभी को अधिकार है।

शब्दार्थ

छात्रावास	= ऐसी इमारत जिसमें विद्यार्थी रहते हैं।	कर्मचारी	= वेतन पर काम करने वाला
संपत्ति	= धन दौलत	संग्रहण	= एकत्रित, इकट्ठा
मर्यादा	= सीमा	सार्वजनिक	= सबके लिए उपयुक्त
धरोहर	= अमानत	कर्तव्य	= करने योग्य कार्य

उच्चारण करें

संग्रह   ज्ञानवर्द्धक   आयुर्वेद   संग्रहित   सार्वजनिक
राष्ट्र   अध्ययन   संस्थागत

अध्यापन संकेत-

पुस्तकालय सामाजिक तथा मानसिक क्रियाओं की अभिवृद्धि का स्थान होता है, पुस्तकालय जाने के लिए छात्रों को प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) पुस्तकालय को कितने प्रकार में वर्गीकृत किया गया है?

(ख) मानव का पुस्तकों से क्या संबंध है?

(ग) सार्वजनिक पुस्तकालय किसकी संपत्ति है?

(घ) पुस्तकों के संग्रहण के स्थान को क्या कहते हैं?

(ङ) पुस्तकालय की देख-रेख कौन करता है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) पुस्तकों का संग्रहण पुस्तकालय में किस प्रकार से होता है?

(ख) पुस्तकालयों के द्वारा हमें किस प्रकार के लाभ होते हैं? लिखिए।

(ग) तृतीय श्रेणी तथा द्वितीय श्रेणी के पुस्तकालयों में कोई दो अंतर लिखिए।

(घ) निजी पुस्तकालय से आपका क्या तात्पर्य है? लिखिए।

3. उचित विकल्प का चयन करके सही (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) पुस्तकालय का शब्दिक अर्थ क्या होता है?

☐ पुस्तकों का घर ☐ पुस्तक रखने का स्थान

☐ पुस्तक बिक्री का स्थान ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) सार्वजनिक पुस्तकालय पर किसका स्वामित्व होता है?

☐ व्यक्ति विशेष का ☐ सरकार और जनता का

☐ पुस्तकालय अध्यापक का ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) पुस्तकों का संग्रहण कहाँ होता है?

☐ घर में ☐ पुस्तकालय में ☐ अलमारी में ☐ देवालयम में

(घ) पुस्तकालय में किसको संरक्षित करके रखा जाता है?

☐ धन को ☐ ज्ञान को ☐ पैसे को ☐ पूंजी को

4. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) प्राय: प्रत्येक विद्यालय या छात्रावास में एक .... होता है।

(ख) मनुष्य की सबसे अच्छी पुस्तकें .... होती हैं।

(ग) पुस्तकालय .... प्रकार के होते हैं।

(घ) सार्वजनिक पुस्तकालयों में बिना .... के कोई भी व्यक्ति जा सकता है।

(ङ) पुस्तकें सार्वजनिक .... होती हैं।

5. अध्याय में प्रयुक्त शब्दों के प्रयोग से वाक्य निर्मित कीजिए।

(क) ज्ञान-वर्द्धक – ....

(ख) शांति – ....

(ग) संपत्ति – ....

(घ) पुस्तकालय – ....

(ङ) ज्ञान – ....

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

6. संस्थागत पुस्तकालय निजी भी होते हैं और सार्वजनिक भी ऐसा क्यों? सोच-समझकर बताइए। पुस्तकें व्यक्ति की सच्ची मित्र होती हैं? कैसे?

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

7. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) संग्रह – .... (ख) मित्र – ....

(ग) रुचि – .... (घ) सार्वजनिक – ....

(ङ) नियुक्त – .... (च) महँगी – ....

(छ) संचित – .... (ज) समर्थ – ....

8. दिए गए वाक्यों में उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए।

(क) तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा। – ....

(ख) वह कितना सुंदर दृश्य है। – ....

(ग) स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकता है। – ....

(घ) मानव शरीर में रक्त कणों का क्या काम है – ....

(ङ) बीजक कबीरदास के द्वारा रचित ग्रंथ है – ....

9. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) कर्मचारी – ....

(ख) नितांत – ....

(ग) संस्था – ....

(घ) संस्कृति – ....

(ङ) कोप – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

10. पुस्तकालय राष्ट्र की धरोहर होते हैं? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

11. आपके स्कूल के पुस्तकालय में किन कवियों की रचनाओं का संग्रह है सूची बनाकर कक्षा में चर्चा कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए — Brain Storming Activity

12. दिए गए पुस्तकालों को पहचान करके बताइए कि ये सभी कहाँ स्थित हैं?

स्टेट लाइब्रेरी ऑफ विक्टोरिया – ....

लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस – ....

रॉलय डैनिश लाइब्रेरी – ....

रसियन स्टेट लाइब्रेरी – ....

ट्रिनिटी कॉलेज लाइब्रेरी – ....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

13. पुस्तकें मानव के आध्यात्मिक जीवन का आधार होती हैं? क्या आप इससे सहमत हैं? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

अध्याय 3

विमुद्रीकरण
(लेख)

अध्ययन से पूर्व

लेख का मूल तत्व

देश हित में बनाए गए नियम एवं कानून का पालन कर सरकार को सहयोग प्रदान करना।

विमुद्रीकरण या नोटबंदी एक प्रक्रिया है जिसमें मुद्रा का कानूनी दर्जा। निकाला जाता है और यह सिक्कों के लिए भी लागू होती है। पुराने नोटों या सिक्कों के बदले नये नोट या सिक्के बाज़ार में लाए जाते हैं। नोटबंदी के बाद पुराने नोटों की कोई कीमत नहीं रहती। पुराने नोट बदलवाने के लिए निर्धारित समय दिया जाता है। पुराने नोट बैंकों से बदलवाए जा सकते हैं।

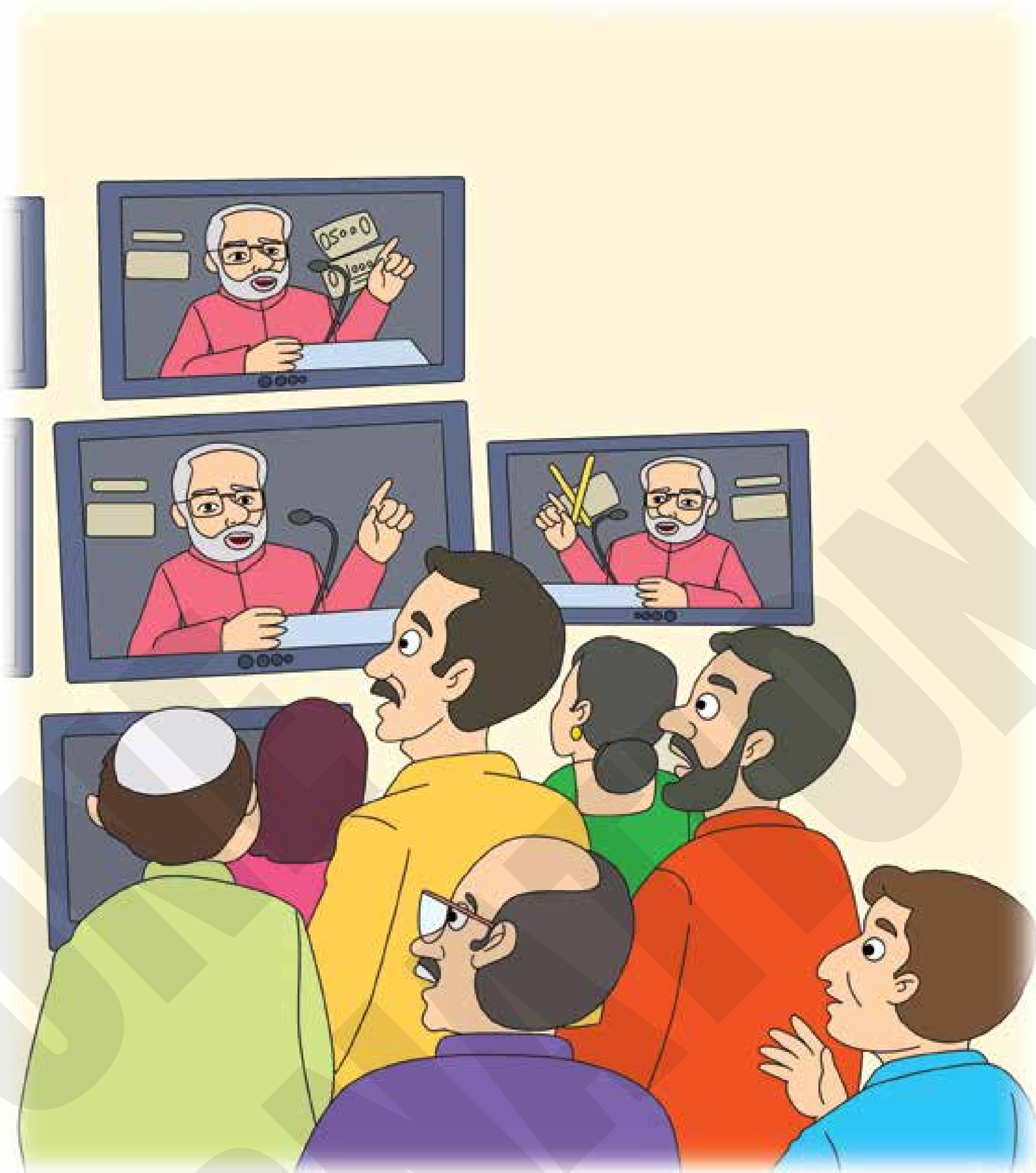

विमुद्रीकरण का उपयोग भ्रष्टाचार, कालाधन, नकली नोट, महंगाई व आतंकवादी गतिविधियों पर नियंत्रण के लिए किया जाता है। भ्रष्टाचारी लोग अपना कालाधन नकदी (कैश) के रूप में छुपाकर रखते हैं, ताकि वह उस पर लगने वाला 'कर' बचा सकें। यही कालाधन आतंकवादी कारणों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। आज़ादी की लड़ाई के बाद संभवत: नोटबंदी ही ऐसा कदम है, जिससे समूचा भारत व्यापक स्तर पर प्रभावित होता है। क्या गरीब, क्या अमीर, क्या छोटा, क्या बड़ा, क्या बुजुर्ग, क्या महिलाएं हर एक व्यक्ति नोटबंदी के फैसले से बहुत प्रभावित होता है।

जब 8 नवम्बर, 2016 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने नोटबंदी की घोषणा की तो सारे भारत में भूकंप सा आ गया। कुछ लोगों को लगा कि प्रधानमंत्री जी भारत व पाकिस्तान के कड़वे होते रिश्ते के बारे में बोलेंगे या शायद दोनों देशों के बीच युद्ध का ऐलान ही न कर दें। लेकिन यह घोषणा तो कुछ लोगों के लिए युद्ध के ऐलान से भी घातक सिद्ध हुई। उनकी रातों की नींद उड़ गई। कुछ लोग होशोहवास खोते हुए ज्वैलर्स के पास दौड़े व उल्टे-सीधे दामों में सोना खरीदने लगे। अगले दिन से ही बैंक व ए.टी.एम. लोगों के स्थाई पते बन गए। लाइनें दिनों-दिन भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या को दिखाने लगीं। सरकार भी कभी लोगों को

राहत देने के लिए व कभी काला धन जमा करने वालों के लिए नए-नए नियम बनाती दिखी। कभी बैंक व ए.टी.एम. से पैसे निकलवाने की सीमा घटाना व बढ़ाना तो कभी पुराने रुपयों को जमा करवाने के बारे में नियम में सख्ती करना या ढील देना आदि।

विपक्षी दल पूरी एकजुटता से सरकार के निर्णय को असफल व देश को पीछे ले जाने वाला सिद्ध करने में लग गए। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानों किसी ने उनकी दुखती रग पर हाथ रख दिया हो। लगभग पूरा विपक्ष सरकार के इस अन्याय के खिलाफ खड़ा हो गया। मोर्चे, प्रदर्शन, रोष प्रकट किये गए। फिर भी अनेकता में एकता का भाव सार्थक हुआ।

दूसरी तरफ सरकार अपने इस निर्णय को सही साबित करने में लगी रही। कभी प्रधानमंत्री जी व उनकी टीम लोगों को इस नोटबंदी के फायदे गिनाने में लगे रहे तो कभी पचास दिन का समय मांगते नज़र आए। लोगों के अंदर भी बहुत भाईचारा देखने को मिला। अमीर दोस्तों को उनके गरीब नकारा दोस्त याद आए। अमीर रिश्तेदारों को अपने गरीब रिश्तेदारों के महत्व का एहसास होने लगा। अमीर बेटे की गरीब माँ का बैंक खाता जो की पिता की मौत के बाद मर चुका था, अचानक जिन्दा हो गया। ऐसा लगा मानों पूरी मानवता जिन्दा हो गई।

मीडिया वालों का भी बहुत शानदार रोल रहा। कुछ नोटबंदी पर सरकार के फैसले के पक्ष में खड़े दिखाई दिए व कुछ विपक्ष में। कुछ न्यूज चैनल्स को लोग लाइनों में मजे लेते दिखाई दिए दूसरी तरफ कुछ को मरते। कुछ चैनल्स के अनुसार लगभग सौ लोगों ने लाइनों में खड़े होकर अपनी जान गवाई। परंतु प्रश्न यह है कि ये लोग कुछ वर्ष पहले सिलेंडर की सुबह चार बजे से ही लगने वाली लाइनों से कैसे बचे या फिर जब फिल्म या मैच की टिकट के लिए खड़ा होना पड़ता है, तब कोई पहाड़ क्यों नहीं टूटता।

नोटबंदी की वज़ह से पुराने जमाने से सफल बार्टर पद्यति फिर से कारगर सिद्ध हुई। लोगों ने बिना पैसे के भी दिन गुजारने सीख लिए। सच कहूं हमें तो किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। बस थोड़ा समायोजन करना पड़ा। देश के लिए थोड़ी-बहुत तकलीफ ज़रूरी भी है।

यहाँ कुछ लोगों की बुद्धिमत्ता देखने को मिली। उन्होंने अपने कालेधन को छिपाने के लिए नए-नए तरीके अपनाए। जैसे-गरीब दोस्तों व रिश्तेदारों के बैंक खातों में पैसे डालना, मजदूरों को तीन सौ-चार सौ रुपयों में हायर करना, 20 से 30 प्रतिशत के लालच पर पुराने नोटों के बदले नए नोट प्राप्त करना, कुछ बैंक व डाक कर्मचारियों की अवैध सेवाएं लेना इत्यादि। सरकार का दावा है कि ऐसे तरीके अपनाकर लोगों का कालाधन बैंक में अपनी जगह बनाने में कामयाब रहा। अब सरकार व इनकम टैक्स वालों की ऐसे बैंक खातों पर पूरी नज़र है।

इस नोटबंदी की वज़ह से जैसा कि कुछ अर्थशास्त्रियों और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय अर्थ संबंधित संगठनों ने दावा भी किया है कि भारत की आर्थिक वृद्धि दर कुछ समय के लिए प्रभावित हो सकती है लेकिन इसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम निकलेंगे। कुछ और जानकारों के अनुसार नोटबंदी की वज़ह से नकली नोट छापने का कारोबार खत्म हो गया जिसकी वज़ह से देश में से बहुत मात्रा में नकली नोट व उनसे संबंधित अवैध कारोबार भी खत्म हो गए। चाहे नोटबंदी के परिणाम जो भी हो पर एक बात स्पष्ट है कि नीयत ठीक थी।

केंद्र सरकार के इस निर्णय से सबसे बड़ा असर फिलहाल आम लोगों पर पड़ा है। लोगों ने घर में रखी जमा रकम को बैंक में जमा कराया। सुबह से लेकर शाम तक बैंकों के बाहर लंबी कतार में वक्त गुजारा। ऐसे में

देश में मुद्रा की तरलता पर काफी सकारात्मक असर पड़ा। बैंकों के पास पर्याप्त मात्रा में कैश जमा हो गया। असंगठित क्षेत्रों मसलन लघु उद्योग में हलचल मच गई। बड़ी करेंसी बंद हो जाने से काम प्रभावित हो गया। हालांकि, कैश मुहैया होने के बाद इस समस्या से मुक्ति मिल गई। धीरे-धीरे इसका असर भी सकारात्मक तौर पर दिखने लगा। हालांकि, दिहाड़ी मजदूरों की दिनचर्या पूरी तरह से चरमरा गई। इन हालातों में यह कहना उचित है कि बजट सत्र के इस क्वार्टर में इसका नकारात्मक असर सकल घरेलू उत्पाद (जी डी पी) पर देखने को मिला। मगर इस क्वार्टर के बाद लघु उद्योगों में आने वाली तेज़ी से जी. डी. पी. में उछाल मिला, जिससे हालातों में दिखने वाली नकारात्मकता लोग भूल गए।

भारत सरकार ने भ्रष्टाचार और अवैध रूप से नकदी रखने वालों को काबू में करने के लिए 500 और 1000 के पुराने नोटों को रद्द करने का फैसला किया था। लेकिन इस फैसले से ज्यादातर कम आय वाले लोग, व्यापारी और बचत करने वाले साधारण लोग जो नकदी अर्थव्यवस्था पर निर्भर हैं, वे बुरी तरह से प्रभावित हुए। सरकार के इस फैसले से बैंकों के बाहर भगदड़ की स्थिति हो गई थी।

बैंकों और ए.टी.एम. के बाहर घबराए हुए लोगों की भारी भीड़ जुट रही थी। लोग या तो रद्द होने वाले नोटों को बदलवाने के लिए पहुंच रहे थे या फिर अपनी जिंदगी चलाने के लिए पैसे निकालने के लिए आ रहे थे। सारा देश इस बात से परेशान था कि अब रोज़मर्रा की जरूरतों का सामान कैसे खरीदा जा सकेगा, हालांकि बीच-बीच में कालेधन और भ्रष्टाचार के खिलाफ उठाए गए इस कदम की तारीफ़ के स्वर भी सुनाई देते रहे।

'नोटबंदी' की ख़बर आते ही जिनके पास नोट थे उन्होंने किसी न किसी तरह इन्हें भुनाने की कोशिश करने के साथ-साथ शॉपिंग शुरू कर दी जो दुकानदारों के लिए बहुत फायदे का सौदा रहा।

एक दुकानदार के अनुसार उसने मात्र दो घंटों में उतना सामान बेच दिया जितना उसने पूरी दीवाली के सीज़न में नहीं बेचा था। कई होटल वालों ने 500 और 1000 रुपए में 'जितना चाहो खाओ और पिओ' जैसी स्कीम

लागू करके ग्राहकों को खुश करने के साथ-साथ अपनी तिजोरियाँ भी भरीं। श्मशानघाट में कुछ राजनीतिज्ञों द्वारा नोटों से भरे डिब्बे फेंकने की अफवाह फैलते ही बड़ी संख्या में लोग वहां से डिब्बे उठाकर ले गए, लेकिन खोलने पर उनमें कटे-फटे कपड़े देखकर उनकी उम्मीदों पर पानी फिर गया। दो बाइक सवार लुटेरों ने एक मजदूर का पर्स छीन लिया लेकिन पर्स खोलते ही वे पर्स में 500-500 के तीन नोट देखकर गुस्से में मजदूर को पीटने लगे और पर्स उसके मुँह पर दे मारा। एक कूड़ा बीनने वाली महिला को एक गली में फेंके हुए बैग में 1000 रुपए के 52 नोट लावारिस पड़े मिले, गंगा नदी में बड़ी संख्या में 500 व 1000 रुपए के नोट बहते देखे गए जिन्हें लूटने के लिए लोग नदी में कूद पड़े।

ऐसे निराशाजनक माहौल में यदि कहीं हमदर्दी की भावना देखने को मिली तो वह दिल्ली के श्मशानघरों में। इनके कर्मचारियों ने पुराने नोटों को स्वीकार करने के अलावा जिन लोगों के पास अंतिम संस्कार की रस्में निभाने व सामान आदि खरीदने के लिए खुले पैसे नहीं थे, उन्हें बिना पैसे लिए यह कहते हुए अंतिम संस्कार करने दिया कि वे पैसे बाद में दे जाएं।

इस आक्रामक अभियान का उद्देश्य कालाधन रखने वालों को सबक सिखाना और नशे के कारोबार, तस्करी, आतंकवाद और उग्रवाद की गतिविधियों के लिए अवैध लेन-देन इत्यादि को समाप्त करना था। जाहिर है सवा सौ करोड़ आबादी इसी कालेधन को नष्ट किए जाने के लिए इतना कष्ट उठा रही थी और प्रधानमंत्री जी की तारीफ़ भी कर रही थी। देश के उज्जवल भविष्य के लिए प्रधानमंत्री जी का यह कदम निश्चित रूप से सराहनीय है।

शब्दार्थ

व्यापक	= विस्तृत या बहुत बड़ा	विपक्षी	= विरोधी पक्ष
एकजुटता	= एकसाथ	सार्थक	= सफल
कारगर	= लाभदायक	इनकम टैक्स	= आयकर
दूरगामी	= दीर्घकालीन	मसलन	= उदाहरण के लिए
अवैध	= जिसका कोई मालिक न हो	सकल	= समस्त, कुल
आक्रामक	= हमलावर		

उच्चारण करें

बुद्धिमत्ता अंतर्राष्ट्रीय सकारात्मक पद्यति अर्थशास्त्रियों

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका लेख के माध्यम से बच्चों को भ्रष्टाचार के विभिन्न तत्वों से अवगत करवाएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कालाधन किस रूप में छुपाकर रखा जाता है?

(ख) प्रधानमंत्री श्री नरेंद मोही जी ने नोटबंदी की घोषणा किस दिन की थी?

(ग) पुराने नोट कहाँ से बदले जा सकते हैं?

(घ) विमुद्रीकरण का उपयोग क्यों किया जाता है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विमुद्रीकरण करने का क्या उद्देश्य था?

....

(ख) विपक्षी दल क्या सिद्ध करने में लग गए?

....

(ग) विमुद्रीकरण के द्वारा लोगों में मानवता का एहसास कैसे जाग गया?

....

(घ) नोटबंदी की वज़ह से पुराने जमाने की कौन-सी पद्धति कारगर सिद्ध हुई?

....

3. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) नोटबंदी ने किसका प्रभावित किया?

☐ अमीर को ☐ गरीब को ☐ विपक्षी दल को ☐ सभी को

(ख) विमुद्रीकरण करने का उद्देश्य क्या था?

☐ नकली नोटों की रोकथाम ☐ कालाधन खत्म करना

☐ विपक्षी दलों को नीचा दिखाना ☐ केव (पहला) और (दूसरा)

(ग) नोटबंदी की वज़ह से किस तरह के कारोबार बंद हो गए?

☐ अवैध कारोबार ☐ वैध कारोबार ☐ दोनों ☐ कोई भी नहीं

4. **सही मिलान कीजिए।**

(क) बार्टर	कारोबार
(ख) दूरगामी	उत्पाद
(ग) सकल	पद्यति
(घ) अवैध	परिणाम

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

5. **विमुद्रीकरण द्वारा देश की जनता को किस प्रकार के लाभ व हानि हुई? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।**

....

....

....

....

....

6. **नोटबंदी की वज़ह से बैंक और ए.टी.एम. के बाहर लंबी कतारें सभी ने देखी। यदि आप मीडियाकर्मी होते तो आम जनता से किस तरह के सवाल पूछते? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।**

7. **क्या देश हित के लिए विमुद्रीकरण जैसा निर्णय कभी पूर्वकालिक सरकारों द्वारा भी लिया गया था? यदि हाँ, तो किस सरकार के कार्यकाल में? बच्चे, शिक्षक/शिक्षिका के साथ संवाद स्थापित कर इस विषय में लिखें।**

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

8. **दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।**

(क) भाषण प्रधानमंत्री देते हैं। ....

(ख) उसने पानी में सारी उम्मीद फेर दी। ....

(ग) सब लोग ने दिखाई मानवता। ....

(घ) भगदड़ की स्थिति बैंकों के बाहर हो गई थी। ....

9. दिए गए शब्दों के वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) भ्रष्टाचार – ....

(ख) अनेकता – ....

(ग) मुहैया – ....

(घ) मुहैया – ....

10. दिए गए वाक्यों में उचित स्थान पर उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए।

(क) अमीर गरीब बूढ़ा जवान महिलाएँ सभी ने नोटबंदी की तारीफ़ की

(ख) विपक्षी दलों ने मोर्चे प्रदर्शन रोष प्रकट किया

(ग) जितना चाहे भेंट भर खाओ

(घ) लोग कहने लगे भई वाह तुम तो उस्ताद हो

11. दी गई लोकोक्तियों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) नया नौ दिन पुराना सौ दिन – ....

....

(ख) नौ नकद न तेरह उधार – ....

....

(ग) जिसकी लाठी उसकी भैंस – ....

....

(घ) ढाक के तीन पात – ....

....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. विमुद्रीकरण के निर्णय से देश कैसे प्रभावित हुआ? अपने शब्दों में लिखिए।

14. भ्रष्टाचार और कालेधन पर नियंत्रण हेतु आप क्या सुझाव देना चाहेंगे? बताइए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. 'देश हित, स्वयं हित से बड़ा होता है।' आप देश हित के संबंध में किस स्वयंहित का त्याग करना चाहेंगे?

तीर्थयात्रा
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

अपने सुख का त्याग कर दूसरे के दुख को सुख में परिवर्तित करना ही जीवन का सच्चा सुख है।

हेमराज लाजवंती का एकमात्र सहारा था। उसका मुँह देखकर वह अपने सारे दुःख भूल जाती थी। इससे पहले उसके कई पुत्र पैदा हुए, मगर सब-के-सब बचपन में ही मर गए। यद्यपि हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों-सा ही था, मगर लाजवंती की आँखों में वैसा बालक सारे संसार में न था। माँ की ममता ने उसकी आँखों को धोखे में डाल दिया था। लाजवंती को उसकी इतनी चिंता थी कि दिन-रात उसे छाती से लगाए रहती थी। मानो वह दीपक हो, जिसे बुझाने के लिए हवा के तेज़ झोंके बार-बार आक्रमण कर रहे हों। वह उसे छिपा-छिपाकर रखती थी कि कहीं उसे किसी की नज़र न लग जाए। गाँव के लड़के प्रायः खेतों में खेलते-फिरते थे, मगर लाजवंती हेमराज को घर से बाहर न निकलने देती थी और अगर कभी वह निकल भी जाता, तो घबराकर उसे ढूँढने लग जाती थी।

गाँव की स्त्रियाँ कहतीं, "हमारे भी तो बच्चे हैं। तू ज़रा-ज़रा सी बात में यों पागल क्यों हो जाती है?" लाजवंती यह सुनती, तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगते। भर्राए हुए स्वर में उत्तर देती, "क्या कहूँ? मेरा जी डर जाता है!"

मगर इतना सावधान रहने पर भी हेमराज बुरी नज़र से न बच सका। प्रातःकाल था, लाजवंती दूध दुह रही थी। इतने में हेमराज जागा और जागते ही मुँह फुलाकर बोला, "माँ!"

आवाज़ में उदासी थी, लाजवंती के हाथ से बरतन गिर गया। दौड़ती हुई हेमराज के पास पहुँची और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली, "क्यों हेम! क्या है बेटा? इतना घबराया हुआ क्यों है तू? इस तरह क्यों बोलता है।"

हेमराज की आँखों में आँसू डबडबा आए, रुक-रुककर बोला, "सिर में दर्द हो रहा है, बहुत तेज दर्द है।"

बात साधारण थी, मगर लाजवंती का नारी-हृदय काँप गया। यही दिन थे, यही ऋतु थी, जब उसका पहला पुत्र मदन मरा था। वह भी इसी तरह बीमार हुआ था।

लाजवंती को अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती-सी मालूम होने लगी। जिस तरह विद्यार्थी एक बार फ़ेल होकर दूसरी बार परीक्षा में बैठते समय घबराता है, उसी प्रकार हेमराज के सिरदर्द से लाजवंती व्याकुल हो गई।

गाँव में दुर्गादास वैद्य अच्छे अनुभवी वैद्य थे। लोग उन्हें लुकमान समझते थे। सैकड़ों रोगी उनके हाथों से स्वस्थ होते थे। आस-पास के गाँवों में भी उनका बड़ा नाम था। लाजवंती को देखकर उन्होंने पत्र हाथ से रख दिया और आँखों से ऐनक उतारकर बोले, "क्यों बेटी! क्या बात है?"

लाजवंती ने चिंतित होकर उत्तर दिया, "हेम बीमार है।"

वैद्य जी ने सहानुभूति के साथ पूछा, "कब से?"

"आज ही से। कहता है, सिर में दर्द है।"

"बुखार तो नहीं है?"

"मालूम तो नहीं होता। आप चलकर देख लेते, तो अच्छा होता।"

वैद्य जी का मनोरथ सिद्ध हुआ। उन्होंने जल्दी से कपड़े बदले और लाजवंती के साथ चल दिए। जाकर देखा, तो हेमराज बुखार से बेसुध पड़ा था। वैद्य जी ने नाड़ी देखी, माथे पर हाथ रखा और फिर कहा, "चिंता

की कोई बात नहीं। दवा देता हूँ, बुखार उतर जाएगा।"

लाजवंती के डूबे हुए हृदय को सहारा मिल गया। उसने दुपट्टे के आँचल से अठन्नी निकाली और वैद्य जी को भेंटकर दी। वैद्य जी ने मुँह से 'नहीं-नहीं' कहा, मगर हाथों ने मुँह का साथ न दिया। उन्होंने पैसे ले लिए।

कई दिन बीत गए, हेमराज का बुखार नहीं उतरा। वैद्य जी ने कई दवाइयाँ बदली, परंतु किसी ने अपना असर न दिखाया। लाजवंती की चिंता बढ़ने लगी। वह रात-रात भर उसके सिरहाने बैठी रहती थी। लोग आते और धीरज दे-देकर चले जाते थे, परंतु लाजवंती का मन उनकी बातों की ओर न दौड़ता था। वह डरी-डरी रहती और अपने मन की पूरी शक्ति से हेम की सेवा में लगी रहती थी।

एक दिन उसने वैद्य से पूछा, "हकीम जी! आखिर क्या बात है, जो यह बुखार उतरने का नाम नहीं लेता?"

वैद्य जी ने उत्तर दिया, "मियादी बुखार है।"

लाजवंती चौंक पड़ी। उसने तड़पकर पूछा, "मियादी बुखार क्या?"

"अपनी मियाद पूरी करके उतरेगा।"

"पर कब तक उतरेगा?"

"इक्कीसवें दिन उतरेगा, इससे पहले नहीं उतर सकता।"

"आज ग्यारह दिन तो हो गए हैं।"

"बस दस दिन और हैं। किसी तरह ये दिन निकाल दो, भगवान भला करेगा।"

लाजवंती का माथा ठनका। हिचकिचाते हुए बोली, "कोई अंदेशा तो नहीं? सच-सच बता दीजिए।"

वैद्य जी थोड़ी देर चुप रहे। इस समय वे सोच रहे थे कि उसे सच-सच बताएँ या न बताएँ? अंत में बोले, "देखो! बुखार सख़्त है, हानिकारक भी हो सकता है। मेरी राय में तो हेम के पिता को बुलवा लो तुम।"

लाजवंती सहम गई। रेत के स्थलों को मीठे जल की नदी समझ कर जब हिरण पास पहुँचकर देखता है कि नदी अभी तक उतनी ही दूर है, तो जो दशा उसके मन की होती है, वही दशा इस समय लाजवंती की हुई। उसे आशा नहीं, निश्चय हो गया था कि हेम एक-आध दिन में ठीक हो जाएगा। फिर उसी तरह खेलता

फिरेगा, फिर उसी तरह नाचता फिरेगा। माँ देखेगी, खुश होगी। लोग बधाइयाँ देंगे। मगर वैद्य की बात सुनकर उसका दिल बैठ गया। आशा के साथ निराशा भी सामने आकर खड़ी हो गई।

उसका पति रामलाल मुल्तान में नौकर था। उसने उसे तार भेजा, वह तीसरे दिन पहुँच गया। इलाज दुगनी सावधानी से होने लगा। यहाँ तक कि दस दिन और भी बीत गए। अब इक्कीसवाँ दिन सिर पर था। हेम की देह अभी तक आग की तरह तप रही थी। लाजवंती और रामलाल दोनों घबरा गए। सोचने लगे, "क्या बुखार एकाएक उतरेगा?"

वैद्य ने आकर नाड़ी देखी, तो घबराकर बोले, "आज की रात बड़ी भयानक है। सावधान रहना, बुखार एकाएक उतरेगा।"

लाजवंती और रामलाल दोनों के प्राण सूख गए। वैद्य के शब्द किसी आने वाले भय की पूर्व सूचना थे। रामलाल दवाएँ सँभालकर बेटे के सिरहाने बैठ गया परंतु लाजवंती के हृदय को चैन न था। उसने संध्या समय थाल में घी के दीपक जलाए और मंदिर की ओर चली। इस समय उसे आशा अपनी पूरी जीवन-शक्ति के साथ सामने नाच करती हुई दिखाई दी। लाजवंती मंदिर पहुँची और देवी के सामने देर तक रोती रही। जब थककर उसने सिर उठाया, तो उसका मुख-मंडल शांत था; जैसे तूफ़ान शांत हो जाता है। उसे ऐसा लगा मानो कोई दिव्य शक्ति उसके कान में कह रही है-'तूने आँसू बहाकर देवी के पाषाण हृदय को मोम कर लिया है।' लाजवंती ने देवी की आरती उतारी, फूल चढ़ाए, मंदिर की परिक्रमा की और प्रेम के बोझ से काँपते हुए स्वर से मनौती मानी, "देवी माता! मेरा हेम बच जाए तो मैं तीर्थ-यात्रा करूँगी!"

यह मनौती मानने के बाद लाजवंती को ऐसा जान पड़ा, जैसे उसके दिल पर से किसी ने कोई बोझ हटा दिया है, जैसे उसका संकट टल गया है। वह निश्चिंत हो गई कि अब उसके हेम को कोई भय नहीं है। लौटी, तो उसके पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे। उसके हृदय-सागर में आनंद की तरंगें उठ रही थी। वह दौड़ती हुई घर पहुँची तो पति ने कहा, "लो बधाई हो! तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया। बुखार धीरे-धीरे उतर रहा है।"

लाजवंती के मुख पर प्रसन्नता थी और आँखों में आशा की झलक। झूमती हुई बोली, "अब हेम को कोई डर नहीं है। मैं तीर्थ-यात्रा की मनौती मान आई हूँ।"

रामलाल ने तीर्थ-यात्रा के खर्च का अनुमान किया, तो हृदय बैठ गया परंतु पुत्र-स्नेह ने इस चिंता को देर तक न ठहरने दिया। उत्तर दिया, "अच्छा किया! रुपए का क्या है, हाथ का मैल है, आता है, चला जाता है। परमेश्वर ने एक लाल दिया है, वह जीता रहे। यही हमारी दौलत है।"

लाजवंती ने स्वामी को सुला दिया और आप रात भर जागती रही।

प्रभात हुई, तो हेम का बुखार बिल्कुल उतर गया था। लाजवंती के मुख-मंडल से प्रसन्नता टपक रही थी; जैसे "संध्या के समय गौओं के स्तनों से दूध की बूँदें टपकने लगती हैं।"

वैद्य जी ने आकर देखा, तो उनका मुँह भी चमक उठा। अभिमान से सिर उठाकर बोले, "अब कोई चिंता नहीं। तुम्हारा बच्चा बच गया।"

लाजवंती ने हेम की कमज़ोर देह पर हाथ फेरते हुए कहा, "क्या से क्या हो गया!" वैद्य ने लाजवंती की ओर देखा और रामलाल से बोले, "यह सब इसी के परिश्रम का फल है।"

लाजवंती ने उत्तर दिया, "देवी माता की कृपा है।"

"मैं तुम्हें दूसरी सावित्री समझता हूँ। उसने मरे हुए पति को जिंदा किया था, तुमने पुत्र को मृत्यु के मुँह से निकाला है। तुम यदि दिन-रात एक न कर देती, तो हेम का बचना असंभव था। यह सब तुम्हारी मेहनत का फल है। बच्चा बचा नहीं-दूसरी बार पैदा हुआ है।"

रामलाल के होठों पर मुस्कराहट थी, आँखों में चमक। उसके सातवें दिन वे अपनी नौकरी पर चले गए और कहते गए कि तीर्थ-यात्रा की तैयारी करो।

तीन महीने बीत गए। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए तैयार हुई। अब उसके मुख पर फिर वही आभा थी, आँखों में फिर वही चमक, दिल में फिर वही खुशी। हेम आँगन में इस तरह चहकता फिरता था जैसे फूलों पर बुलबुल चहकती है। लाजवंती उसे देखती, तो फूली न समाती थी।

तीर्थ-यात्रा पर जाने से पहले की रात उसके आँगन में सारा गाँव इकट्ठा हो रहा था। झाँझें और करतालें बज रही थीं। ढोलक की थाप गूँज रही थी। स्त्रियाँ गाती थीं, बजाती थीं, शोर मचाती थीं। दूसरी तरफ कहीं पूड़ियाँ बन रही थीं, कहीं हलुवा। उनकी सुगंध से दिमाग तर हुए जाते थे। लाजवंती उधर से इधर दौड़ी फिरती थी, मानो उसके यहाँ ब्याह हो।

लोग खा-पीकर आराम करने लगे। जो बचा हुआ था, वह गरीबों में बाँट दिया गया। लाजवंती ने लोगों को विदा किया और चलने की तैयारी में लगी। उसने टीन के एक बक्से में ज़रूरी कपड़े रखे, एक बिस्तर तैयार किया, गले में लाल रंग की सूती माला पहनी, माथे पर चंदन का लेप किया। गऊ एक पड़ोसिन को सौंपी और उससे बार-बार कहा, "इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना। मैं जा रही हूँ, मगर मेरा मन अपनी गऊ में रहेगा।"

सहसा किसी की सिसकी भरने की आवाज़ सुनाई दी। लाजवंती के कान खड़े हो गए। उसने चारों तरफ़ देखा, मगर कोई दिखाई न दिया। इस समय सारा गाँव सुख-स्वप्न में बेसुध पड़ा था। इस समय यह सिसकी भरने वाला कौन है? यह सोचकर लाजवंती हैरान रह गई। वह आँगन में निकल आई और ध्यान से सुनने लगी। सिसकी की आवाज़ फिर सुनाई दी।

लाजवंती छत पर चढ़ गई और पड़ोसिन के आँगन में झुककर ज़ोर से बोली, "माँ, हरो!"

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। फिर एक चारपाई पर से उत्तर मिला, "कौन है? लाजवंती?" आवाज़ में आँसू मिले हुए थे।

लाजवंती जल्दी से नीचे उतर गई और हरो के पास पहुँचकर बोली, "माँ, क्या बात है? तू रो क्यों रही है?"

हरो सचमुच रो रही थी परंतु अपना रोना लाजवंती के सामने कहते हुए उसके नारी-दर्प को बट्टा लगता, इसलिए अपनी वास्तविक अवस्था को छिपाती हुई बोली, "कोई बात नहीं है।"

"तू रो क्यों रही है?"

हरो के रुके हुए आँसुओं का बाँध टूट गया।

लाजवंती ने फिर पूछा, "अरी! बात क्या है, जो तू इस समय रो रही है? मैं तेरी पड़ोसिन हूँ, मुझसे मत छिपा।"
हरो ने कुछ उत्तर न दिया। वह सोच रही थी कि इसे बताऊँ या न बताऊँ, प्रभात हो चला था, कुछ-कुछ प्रकाश निकल आया था। लाजवंती चलने के लिए आतुर हो रही थी। मगर हरो को क्या दुःख है, यह जाने

बिना चले जाना उसके लिए कठिन था। उसने तीसरी बार फिर पूछा, "माँ, बता दो ना, तुम्हें क्या दु:ख है?"

हरो ने दु:खी होकर पूछा, "क्या तुम उसे दूर कर दोगी?"

"हो सका, तो ज़रूर कर दूँगी।"

"यह असंभव है।"

"संसार में असंभव कोई बात नहीं। भगवान सब कुछ कर सकता है।"

हरो थोड़ी देर तक चुप रही, फिर धीरे से बोली, "कुँवारी बेटी का दु:ख खा रहा है। रात-रात भर रोती रहती हूँ। जाने, यह नाव कैसे पार लगेगी?"

"यह क्यों? उसके ब्याह का खर्च तो तुम्हारे जेठ ने देना मंज़ूर कर लिया है।"

"ऐसे भाग होते, तो रोना काहे का था? "

लाजवंती ने अकुलाकर पूछा, "तो क्या यह झूठ है?"

"बिल्कुल झूठ भी नहीं। उसने दो सौ रुपए के गहने-कपड़े बनवा दिए हैं, मगर मिठाई आदि का प्रबंध नहीं किया। अब चिंता यह है कि बारात आएगी तो उसके सामने क्या धरूँगी, बाराती मिठाई माँगेंगे, पूड़ियाँ माँगेंगे, हलवा माँगेंगे। यहाँ सत्तू खिलाने की भी हिम्मत नहीं। यह सोच-सोचकर सूखती जाती हूँ।"

लाजवंती ने कुछ सोचकर उत्तर दिया, "क्या गाँव के लोग एक गरीब कन्या का ब्याह नहीं कर सकते और यह उनकी दया न होगी, उनका धर्म होगा।"

हरो की आँखें भर आईं। वह इस समय गरीब थी, परंतु कभी उसने अच्छे दिन भी देखे थे। लाजवंती के

प्रस्ताव से दु:ख हुआ; जैसे नया-नया भिखारी गालियाँ सुनकर ज़मीन में गड़ जाता है। उसने धीरे-से कहा, "बेटी! मुझसे भी तो यह अपमान न देखा जाएगा।"

"परंतु इस तरह तो गाँवभर की नाक कट जाएगी।" हरो ने बात काटकर कहा।

"मैं भी तो इसे सहन नहीं कर सकूँगी। किसी के सामने हाथ फैलाना भी तो बुरा है।"

"तो क्या करोगी? कन्या कुँवारी बैठाए रखोगी?"

"भगवान की यही इच्छा है, तो मेरा क्या बस है? उसे लेकर कहीं निकल जाऊँगी। न कोई देखेगा, न कोई बात करेगा।"

लाजवंती हरो की अवस्था देखकर काँप गई। उसे ऐसा लगा जैसे कोई कह रहा है कि अगर यह हो गया, तो ईश्वर का कोप गाँवभर को जलाकर राख कर देगा। लाजवंती अपने-आपको भूल गई। उसका हृदय दु:ख से पानी-पानी हो गया! उसने जोश में कहा, "चिंता न करो, तुम्हारा संकट मैं दूर करूँगी। तेरी बेटी का ब्याह होगा और बारात के लोगों को भोजन मिलेगा। तेरी बेटी, तेरी ही बेटी नहीं, मेरी भी है।"

हरो ने वह सुना, जिसकी उसे इच्छा थी, परंतु आशा न थी। उसकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलकने लगे। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए अधीर हो रही थी। वह सोचती थी—हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन के मंदिरों को देखकर हृदय कली की तरह खिल जाएगा। मगर जो आनंद उसे इस समय प्राप्त हुआ, वह उस कल्पित आनंद की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़-चढ़कर था। वह दौड़ती हुई अपने घर गई और संदूक से दो सौ रुपए लाकर हरो के सामने ढेर कर दिए। यह रुपए जमा करते समय वह प्रसन्न हुई थी, पर इस समय वह उससे भी अधिक प्रसन्न हुई। जो सुख त्याग में है, वह ग्रहण में कहाँ ?

—सुदर्शन

शब्दार्थ

पाषाण	=	पत्थर	परिक्रमा	=	चक्कर लगाना
अंदेशा	=	संदेह	व्याकुल	=	बेचैन
आक्रमण	=	हमला	वास्तविक	=	सची बात
संकट	=	दुख	कृतज्ञता	=	आभार प्रकट करना

उच्चारण करें

प्रसन्नता   स्नेह   परमेश्वर   मुस्कुराहट   तीर्थ-यात्रा
स्वप्न   असंभव   हिम्मत

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कहानी के माध्यम से बच्चों को संवेदनशीलता और त्याग जैसी भावनाओं से परिचित करवाएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लाजवंती का किसके प्रति अधिक लगाव था?

(ख) लाजवंती ने तीर्थयात्रा का निश्चर्य क्यों किया?

(ग) हरो क्यों रही थी?

(घ) लौक पैद्य जी को लुकमान क्यों समझते थे?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) लाजवंती तीर्थयात्रा पर क्यों न जा सकी?

....

(ख) लाजवंती की व्याकुलता का क्या कारण था?

....

(ग) अपनी वास्तविक अवस्था को कौन छिपा रहा था और क्यों?

....

(घ) लाजवंती ने हरो के दुख को किस प्रकार ग्रहण किया?

....

3. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) लाजवंती ने वैद्य जी को भेंट की–

☐ चवन्नी ☐ इकन्नी ☐ अठन्नी ☐ दवन्नी

(ख) वैद्य जी ने मियादी बुखार की अवधि कितने दिन की बताई।

☐ पन्द्रह दिन की ☐ इक्कीस दिन की ☐ दस दिन की ☐ एक सप्ताह की

(ग) लाजवंती ने हरो को रुपए लाकर दिए।

☐ सौ ☐ पाँच सौ ☐ दो सौ ☐ तीन सौ

4. दिए गए शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) व्याकुलता – ....

(ख) अंतिम – ....

(ग) स्वप्न – ....

(घ) अपेक्षा – ....

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

5. सती-प्रथा मानवता के लिए एक अभिशाप है कैसे? लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

6. यदि लाजवंती हरो के दखु का निवारण न करती तो क्या हरो समाज में दहेज प्रथा जैसी कुरीति का विरोध कर पाती? हाँ तो कैसे? नहीं तो क्यों नहीं? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

EDITONE INTERNATIONAL

7. 'जो सुख त्याग में है, वह ग्रहण में कहाँ? भाव सहित तुष्टिकरण कर लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

8. दिए गए शब्दों का लिंग निर्धारित कीजिए।

(क) लाजवंती – .... (ख) मानवता – ....

(ग) रात – .... (घ) अठन्नी – ....

(ङ) बरतन – .... (च) यात्रा – ....

(छ) बुखार – .... (ज) जीवन – ....

(झ) प्राण – .... (ञ) सुख – ....

(ट) प्रभात – .... (ठ) सहानुभूति – ....

9. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए।

(क) ईमानदारी – .... (ख) ठंड – ....

(ग) प्यास – .... (घ) चिंता – ....

(ङ) जोश – .... (च) नियम – ....

(छ) नगर – .... (ज) काँटा – ....

10. दिए गए मुहावरों का अर्थ सहित वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) आँखों का तारा – ....

....

(ख) अँधेरे घर का उजाला – ....

....

(ग) आँसू पोंछना – ....

....

(घ) गंगा नहाना – ....

....

11. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों में प्रयुक्त कारक का नाम लिखिए।

(क) बालक ने अपने पिता को ज़ोर-ज़ोर से पुकारा – ....

(ख) हे राम! तेरा ही सहारा है। – ....

(ग) युवती ने वैद्य को अठन्नी भेंट की। – ....

(घ) हरो ने लाजवंती को वास्तविकता बताई। – ....

12. दिए गए शब्दों की संधि कीजिए।

(क) दया + आनंद – .... (ख) नै + इका – ....

(ग) सदा + एव – .... (घ) पर + उपकार – ....

EDITONE INTERNATIONAL

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

13. लाजवंती की जगह आप होते तो हरो के साथ कैसा व्यवहार करते? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

14. समाज से किन प्रथाओं को जड़ से मिटाने की आवश्यकता है? प्रत्येक प्रथा का नाम लिखिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. त्याग की भावना व्यक्तित्व को महान बनाती है। आप अपने व्यक्तित्व से किस बुराई का त्याग करना चाहेंगे?

EDITONE INTERNATIONAL

अध्याय 5

जग जीवन में जो चिर महान
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

हमारी प्रार्थना सदैव मानव हित में होनी चाहिए।

जग जीवन में जो चिर महान,
सौंदर्य पूर्ण और सत्य प्राण,
मैं उसका प्रेमी बनूँ, नाथ!
जिससे मानव हित हो समान!

जिससे जीवन में मिले शक्ति,
छूटे भय-संशय, अंध-भक्ति,
मैं वह प्रकाश बन सकूँ, नाथ!
मिल जावें जिसमें अखिल व्यक्ति!

दिशि-दिशि में प्रेम-प्रभा-प्रसार,
हर भेद-भाव का अंधकार,
मैं खोल सकूँ चिर मुँदे, नाथ!
मानव के उर के स्वर्ग-द्वार!

पाकर, प्रभु! तुमसे अमर दान
करने मानव का परित्राण,
ला सकूँ विश्व में एक बार
फिर से नव जीवन का विहान।

–सुमित्रानंदन पंत

शब्दार्थ

हित	= भला, उपकार	संशय	= शंका, संदेह
अखिल	= संपूर्ण, समस्त	प्रभा	= प्रकाश, ज्योति
चिर	= बुहत दिनों से	द्वार	= दरवाजा
परित्राण	= पूर्ण रक्षा, बचाव	विहान	= सवेरा, सुबह, नया दिन

उच्चारण करें

सौंदर्य   प्रसार   अंधकार   संशय   सत्य   परित्राण

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका विद्यार्थियों को पाठ का सारांश बताएँ। संपूर्ण मानव के कल्याण की प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए — Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कवि निष्कपटता से परिपूर्ण क्यों बनना चाहता है?

(ख) कवि कौन सी प्रभा के अनुरूप चलना चाहता है?

(ग) प्रस्तुत कविता में कवि के द्वारा मानव-हृदय के द्वार खोलने की कल्पना क्यों की गई है?

(घ) कविता का मुख्य केंद्र-बिंदु क्या है? बताइए।

ज़रा लिखिए — Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रस्तुत कविता में कवि किस चीज़ को पाने का इच्छुक है?

....

(ख) सदा महान रहने की कामना कवि के द्वारा क्यों की गई है?

....

(ग) कवि क्यों और किसकी पूर्ण रक्षा करना चाहता है?

....

(घ) नए जीवन के लिए कवि नया सवेरा क्यों चाहता है?

....

3. कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा कीजिए।

(क) जिससे जीवन में मिले शक्ति,

....

....

मिल जावें जिसमें अखिल व्यक्ति।

EDITONE INTERNATIONAL

(ख) ....

हर भेद-भाव का अंधकार,

....

मानव के डर के स्वर्ग-द्वार।

4. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) कवि किस प्रकार के प्रेम का इच्छुक है?

☐ प्रकृति ☐ असत्य प्राण ☐ सत्य प्राण ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) किसके हृदय को विच्छेदन करने की कल्पना कवि ने की है?

☐ मानव ☐ जानवर ☐ ईश्वर ☐ राक्षस

(ग) कवि अपने नूतन जीवन में किसकी उम्मीद रखता है?

☐ नए दिनों ☐ नए सवेरों ☐ नई शाम ☐ नई रात

(घ) प्रस्तुत कविता में प्रयुक्त शब्द चिर महान से क्या तात्पर्य है?

☐ सदा सोने वाला ☐ सदा जागने वाला

☐ सदा महान रहने वाला ☐ सदा ठहरने वाला

5. दिए गए वाक्यों में सही के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) हमें सदैव मानव हित के लिए प्रयास करना चाहिए। ☐

(ख) संपूर्ण जगत में निष्कपटता सदैव महान रहती है। ☐

(ग) कवि के द्वारा हृदय के द्वारों को खोलने से मना किया गया है। ☐

(घ) हमें तर्कहीन आस्था को बढ़ावा देना चाहिए। ☐

(ङ) कवि नया सवेरा को चाहता है। ☐

ज़रा सोचिए Critical Thinking

6. भेदभाव का अनुसरण करने से मानसिक विकृतियाँ बढ़ती हैं। सभी ज़गह भेद-भाव रूपी अंधकार प्रसारित हैं आप इसे किस रूप में देखते हैं? सोच-समझकर बताइए।

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए शब्दों वे समानार्थी शब्दों को लिखिए।

(क) विहान – ………………………… (ख) अखिल – …………………………

(ग) परित्राण – ………………………… (घ) डर – …………………………

(ङ) प्रसार – ………………………… (च) अंधकार – …………………………

(छ) नव – ………………………… (ज) संशय – …………………………

8. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेदन कीजिए।

(क) निश्चेष्टा – ……………… + ………………

(ख) उल्लास – ……………… + ………………

(ग) अत्याचार – ……………… + ………………

(घ) मतैक्य – ……………… + ………………

(ङ) दुर्दशा – ……………… + ………………

9. दिए गए शब्दों के वचन परिवर्तित करके लिखिए।

(क) व्यक्ति – ………………………… (ख) दिशा – …………………………

(ग) प्रेमी – ………………………… (घ) शक्ति – …………………………

(ङ) मानव – ………………………… (च) हित – …………………………

10. दिए गए शब्दों के माध्यम से वाक्य निर्मित कीजिए।

(क) सौंदर्य – ……………………………………………………

(ख) जग – ……………………………………………………

(ग) नाथ – ……………………………………………………

(घ) संशय – ……………………………………………………

(ङ) उर – ……………………………………………………

11. रचना की दृष्टि से वाक्यों के भेद लिखिए।

(क) जो सदा सत्य बोलते हैं? वे कभी नहीं डरते हैं। …………………………

(ख) क्या तुम खेलने चलोगे? …………………………

(ग) बाप रे! कैसा था वो आँधी-पानी का तूफ़ान। …………………………

(घ) दादी माँ संदूक से कंगन निकाल लाई। …………………………

(ङ) हो सकता है वह मेरे पास आए। …………………………

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

12. दी गई पंक्तियों के भावार्थ लिखिए।

(क) ज़रा जीवन में जो चिर महान,
सौंदर्य पूर्ण और सत्य प्राण,
मैं उसका प्रेमी बनूँ, नाथ।
जिससे मानव हित हो समान।

(ख) दिशि-दिशि में प्रेम-प्रभा-प्रसार,
हर भेद-भाव का अंधकार,
मैं खोल सकूँ चिर मुँदे, नाथ।
मानव के डर के स्वर्ग-द्वार।

13. प्रस्तुत कविता के रचयिता सुमित्रानंदन पंत जी है। इनके बारे में जानकारी एकत्रित करके लिखिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

14. नीचे कुछ रचनाओं के शीर्षक दिए गए हैं, इन्हें देखिए और बताइए कि सुमित्रानंदन पंत की रचना कौन-कौन सी है?

लोकायतन, मधुशाला, ग्रंथि, अग्निपथ, मुक्ति-यज्ञ, साए में धूप, पतझड़

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. हर व्यक्ति को नए दिन की शुरुआत नए सिरे से करनी चाहिए। आप इसे अपने जीवन में किस प्रकार नई शुरूआत करना चाहेंगे?

अध्याय 6

शल्य-चिकित्सा के जनक-सुश्रुत
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

चरक

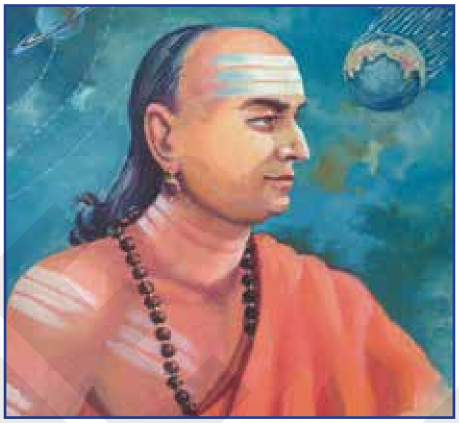
वराह मिहिर

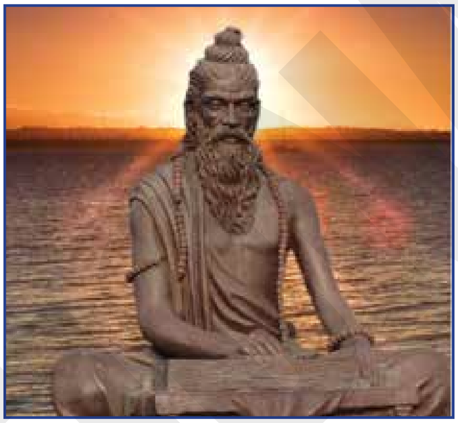
पतंजलि

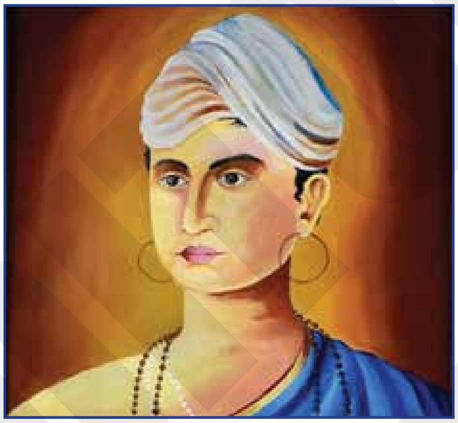
वाग्भट्ट

धन्वंतिरि

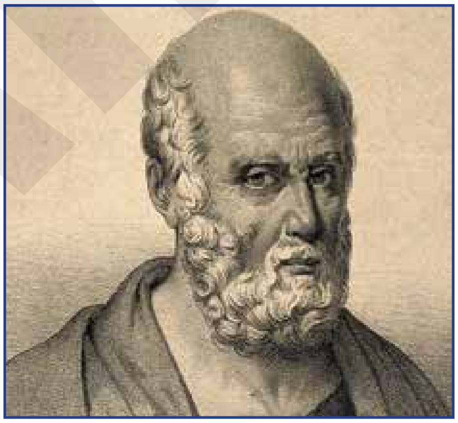
हिफोक्रेटस

- उपरोक्त चित्रो को पहचान करके बताइए कि चिकित्सा के क्षेत्र में इनका क्या योगदान है?

कहानी का मूल तत्व

नागरिकों के प्रयास से ही देश की प्रगति संभव है।

भारतीय चिकित्सा विज्ञान प्राचीन काल से ही श्रेष्ठता के गुण को हासिल किए हुए है। इस पवित्र भारत भूमि पर सुश्रुत, मात्रेय जीवक, चरक ओर वाग्भट्ट जैसे यशस्वी चिकित्सा शास्त्रियों का जन्म हुआ। ये सभी शल्य क्रिया के महान विचारक थे। जिन्होंने असाध्य रोगों को सफलतापूर्वक ठीक कर दिखाया।

भारत की एक प्राचीन नगरी है – वाराणसी। गंगा की निर्मल धारा सहस्रों वर्षों से इसके आँचल में मचल-मचलकर बहती रही है। इस नगरी का अपना सैकड़ों वर्ष पुराना वैभवशाली इतिहास है। हमेशा से यह नगरी शिक्षा का बड़ा केंद्र रही है। प्राचीन काल में यह काशी राज्य की राजधानी थी।

आज से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पहले की बात है। गंगा तट से थोड़ी दूर एक पाठशाला थी। वहाँ आयुर्वेद की शिक्षा दी जाती थी। दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ आते और शल्य-चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करते।

इस पवित्र मंदिर के द्वार केवल उनके लिए खुले थे जिनका मन मानव-सेवा और प्रेम से ओत–प्रोत होता था जिनमें साधना और कठोर परिश्रम करने की लगन होती थी।

इस पाठशाला के आचार्य थे–महर्षि सुश्रुत। शल्य-चिकित्सक के रूप में उनका यश चारों दिशाओं में दूर-दूर तक फैला हुआ था। वे स्वयं काशी के राजा दिवोदास के शिष्य थे। दिवोदास को भगवान धन्वंतरि का अवतार कहा गया है।

महर्षि विश्वामित्र के पुत्र आचार्य सुश्रुत के प्रारंभिक जीवन से हम सभी ऐतिहासिक रूप से अनभिज्ञ हैं, जिनके जीवन को लेकर कुछ भ्रांतियाँ प्रचलित हैं, जैसे-बाल्यकाल में वह गंगा की लहरों में खेले तत्पश्चात् उन्होंने काशी के राजा और महान चिकित्सा शास्त्री दिवोदास की देख-रेख में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। अपने जीवनकाल में कई प्रकार की शल्य-तकनीकों की खोज़ करके उन्होंने अद्वितीयता हासिल की। उनके द्वारा की गई खोज़ें चिकित्सा शास्त्रियों के लिए प्रेरणा के रूप में उभरीं। उनके द्वारा रचित 'सुश्रुत संहिता' एक जीवंत प्रमाण है, जो कि प्राचीन भारत के चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अपने समय से बहुत आगे है। सुश्रुत-संहिता से हमें शल्य-चिकित्सा की विशद् जानकारी मिलती है। इसमें कुल मिलाकर 120 अध्याय हैं और इन्हें छह भागों में बाँटा गया है–सूत्रस्थान, निदानस्थान, शरीरस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान और उत्तरस्थान।

इस ग्रंथ में शल्य-चिकित्सा की विधियों और उसमें काम आने वाले यंत्रों तथा शस्त्रों के बारे में व्यापक जानकारी दी गई है। शरीर के किसी भाग में मवाद पड़ जाने पर चीरा लगाना आवश्यक होता है, यह महत्त्वपूर्ण तथ्य सुश्रुत से छिपा न था। उन्होंने इस बारे में स्पष्ट जानकारी दी है कि इस स्थिति में चीरा कैसे और कहाँ लगाएँ। इसी तरह जब शरीर के कुछ अंग जलवृद्धि के कारण फूल जाएँ तो उनका जल सुई द्वारा कैसे खींच लेना चाहिए। यह विधि भी उपयुक्त रूप से बताई गई है। मूत्राशय की पथरी, भगंदर, बवासीर और मोतियाबिंद की शल्य-क्रिया के साथ-साथ, जरूरत पड़ने पर माँ के गर्भ में चीरा लगाकर शिशु को जन्म देने

की शल्य-क्रिया और दंत-चिकित्सा तथा अस्थि-चिकित्सा की बारीकियों का अनूठा वर्णन भी सुश्रुत-संहिता में मिलता है। इसके अलावा काया श्रृंगार (प्लास्टिक सर्जरी) से जुड़े तरह-तरह के ऑपरेशन भी विस्तार से वर्णित हैं।

सुश्रुत-संहिता में शल्य यंत्रों की संख्या 101 बताई गई है। इन यंत्रों को हिंसक पशु तथा पक्षियों के मुँह के आकार के अनुसार नाम दिए गए हैं; जैसे– सिंहमुख (सिंह के मुँह जैसा), गृध्रमुख (गिद्ध के मुँह जैसा) ये यंत्र आधुनिक शल्ययंत्रों से किसी भी तरह कम न थे। इनके साथ ही 20 और शल्ययंत्र भी वर्णित हैं। इनके नाम हैं – मंडलाग्र, करपत्र, मुद्रिका, बृहिमुख आदि। ये शल्य औज़ार प्राय: लौह धातु या चाँदी से बनाए जाते थे। इन्हें इस ढंग से बनाया जाता था कि इनकी धार कभी कमज़ोर न पड़े और इनमें कभी जंग न लगे। इन्हें रखने के लिए खासतौर से लकड़ी के डिब्बे भी तैयार किए जाते थे।

टाँके लगाने के लिए त्वचा और विभिन्न ऊतकों की मोटाई और रचना को ध्यान में रखते हुए तरह-तरह के धागे भी विकसित किए गए थे। कुछ का आधार रेशम की डोर होती थी तो कुछ सूत से बनाए जाते थे। कुछ घोड़ों के बालों से। इसी प्रकार कई किस्म की सुइयाँ भी उपयोग में लाई जाती थीं–कुछ पतली, कुछ अधिक घुमाव लिए हुए, तो कुछ कम और कुछ बिल्कुल सीधी। उन दिनों तरह-तरह की रुई, रेशम और मलमल से बनी पट्टियों का भी प्रचलन था।

दुर्घटनाओं में अथवा शस्त्र के वार से फट गई आँतों के दो किनारों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए सुश्रुत ने एक विलक्षण तकनीक खोज निकाली थी। इसके लिए वे एक किस्म के चींटों का उपयोग किया करते थे। फटी हुई आँत के दो किनारों को साथ मिलाकर उस पर चींटे छोड़ दिए जाते। वे चींटे अपने दाँतों से उस पर चिपक जाते, जिससे फटी हुई आँत के दो किनारे आपस में

सिल-से जाते। अब चींटों का शेष भाग काटकर अलग कर दिया जाता और उदर के बाहरी ऊतकों और त्वचा पर टाँके कस लिए जाते। कुछ ही दिनों में आँत का घाव भर जाता। साथ ही चींटों का सिर भी ऊतकों में अपने आप घुल-मिल जाता था।

आजकल शल्य-चिकित्सक शरीर के भीतरी अंगों के टाँके लगाने के लिए भेड़ की आँत से बनाए गए धागे का उपयोग करते हैं। उद्देश्य यह रहता है कि टाँके भीतर ही भीतर घुल जाएँ जिससे टाँके निकालने के लिए कम-से-कम का वह भाग दोबारा न खोलना पड़े। सुश्रुत-संहिता में शल्य-चिकित्सा के लगभग हर महत्त्वपूर्ण पहलू पर विस्तृत जानकारी दी गई है; जैसे – ऑपरेशन के बाद क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए, रोगी का आहार कैसा होना चाहिए, घाव भर जाए इसके लिए कौन-कौन सी औषधियाँ देनी चाहिए आदि।

प्राचीन भारत के चिकित्सकों को औषधि विज्ञान के बारे में भी जानकारी थी। उन्होंने बहुत-सी जड़ी-बूटियों की खोज़ की थी। साथ ही रसायन भी खोज़ निकाले थे। ये रोगी का दु:ख-दर्द दूर करने में काम आते थे। शल्यक्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न हो, इसके लिए कुछ ऐसी सक्षम जड़ी-बूटियाँ भी खोज़ निकाली गई थीं जिनके देने से रोगी गहरी नींद में सो जाता था।

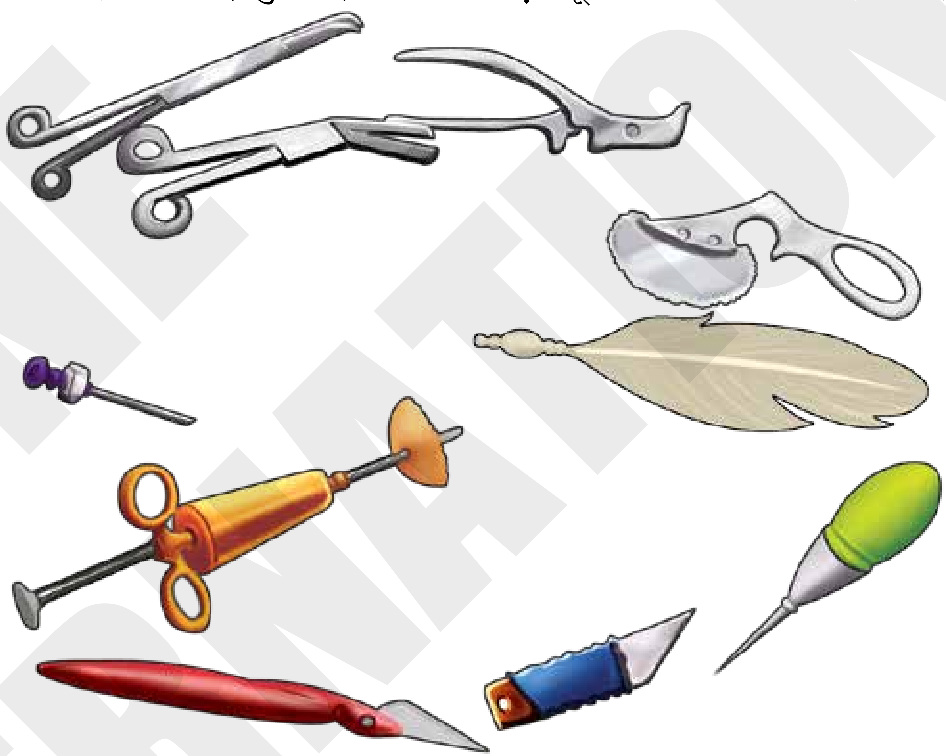

मानव शरीर के भीतरी अंगों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सुश्रुत ने एक अनूठी विधि खोज़ निकाली थी। मृत शरीर को पहले किसी वज़नदार वस्तु के साथ बाँध कर किसी छोटी-सी नहर में डाल ऊतक फूल जाते, तब झाड़ियों और लताओं से बने बड़े-बड़े ब्रुशों द्वारा उन्हें शरीर से अलग कर दिया जाता था। इससे शरीर के आंतरिक अंगों की रचना स्पष्ट हो जाती थी।

सुश्रुत जितने बड़े शल्य-चिकित्सक थे, उतने ही श्रेष्ठ गुरु भी थे। शल्यकला का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए वे अपने शिष्यों को कंद-मूल, फल-फूल, पेड़-पौधों की लताओं, पानी से भरी मशकों चिकनी मिट्टी के ढाँचों और मलमल से बने मानव-पुतलों पर दिनोंदिन अभ्यास करवाते। चीरा कैसे लगाना है, उसे कितना लंबा, कितना गहरा रखना है—इसका अभ्यास प्राप्त करने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज जैसे फलों और सब्ज़ियों पर कई-कई दिनों तक अभ्यास करना पड़ता था। किसी घाव की गहराई कैसे पहचानें और उसे भरने के लिए क्या तकनीक अपनाएँ—यह प्रशिक्षण दीमक खाई लकड़ी के द्वारा दिया जाता, जिससे कि शिक्षार्थी रुग्ण शरीर की स्थिति का सही अंदाज़ा लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के फूल की डंडी, शिरा (रक्तवाहिनी) बन जाती थी जिसे शिष्य को सुई द्वारा बेधना पड़ता था। इसी तरह टाँका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के

कपड़ों और चमड़े पर दिया जाता। खुरदरे चमड़े पर, जिस पर से बाल न हटाए गए हों, खुरचने की कला सिखाई जाती थी। पट्टी बाँधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलों का सहारा लिया जाता था।

इस प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने के बाद ही शिष्य के प्रशिक्षण का दूसरा चरण शुरू होता। अब उसे किसी कुशल शल्य-चिकित्सक की देखरेख में रख दिया जाता था। वह तरह-तरह की शल्यक्रियाएँ देखता और उनसे सीखता जाता। फिर कुछ समय बाद जब वह पूरी तरह परिपक्व हो जाता, तब उसे गुरु की देखरेख में स्वयं ऑपरेशन करने की अनुमति दी जाती थी। इस तरह पूर्ण प्रशिक्षण और अनुभव पाकर ही वह पाठशाला से बाहर निकलता था।

सुश्रुत मूलतः शल्य-चिकित्सक थे किंतु उन्होंने क्षय रोग, कुष्ठ रोग, मधुमेह, हृदय रोग एवं विटामिन सी की कमी से होने वाले रोग-स्कर्वी के बारे में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। ईसा से 600 वर्ष पूर्व और 1000 ई. तक का समय भारतीय चिकित्सा विज्ञान के लिए स्वर्णिम युग था। आत्रेय, जीवक, चरक और वाग्भट्ट जैसे बहुत से यशस्वी चिकित्सा शास्त्रियों ने भारत की पावनभूमि पर जन्म लिया। काशी के साथ-साथ नालंदा और तक्षशिला के प्राचीन विश्वविद्यालय भी सैकड़ों वर्षों से उच्चकोटि की शिक्षा के लिए विश्वविख्यात रहे। यहाँ दूर-दूर से विद्यार्थी आते और चिकित्सा विज्ञान में निपुण होकर मानव कल्याण की प्रतिज्ञा लेते। चिकित्सा विज्ञान के कुछ इतिहासकारों का तो यह भी कहना है कि यूनानी चिकित्सा पद्धति के बहुत-से सिद्धांत प्राचीन भारतीय चिकित्सकों के विचारों पर ही आधारित हैं।

शब्दार्थ

पाठशाला = विद्यालय
शल्य-चिकित्सा = चीर-फाड़ द्वारा इलाज
टाँके = त्वचा को सिलना
रुग्ण = बीमार, अस्वस्थ
बेधना = भरना, बंद करना
जीवंत = जीता-जागता
प्रशिक्षण = ट्रेनिंग
परिपक्वता = समझदारी, पहचान करना
प्राचीन काल = पौराणिक काल, कई शताब्दियों से पहले का समय
आँत = अँतड़ी, पेट के भीतर की लंबी नली जिसमें भोजन की पाचन क्रिया होती है।

उच्चारण करें

वाग्भट्ट शल्य-क्रिया सुश्रुत सूत्रस्थान चिकित्सा शास्त्री
परिपक्वता

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को उस क्षेत्र में किए गए विभिन्न चिकित्सकों और प्रयासों के बारे में जानकारी दें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) आचार्य सुश्रुत को किस कला में प्रवीणता हासिल थी?

(ख) चिकित्सा शास्त्री दिवोदास का सुश्रुत के जीवन काल में क्या योगदान था?

(ग) सुश्रुत संहिता में शल्य यंत्रों की संख्या कितनी बताई गई है?

(घ) शल्य क्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न देने के लिए किन उपायों को अपनाया जाता था?

(ङ) भारतीय चिकित्सा काल को स्वर्णिम युग किसे माना गया है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रस्तुत पाठ में वाराणसी के महत्व को किस प्रकार प्रदर्शित किया गया है?

....

(ख) प्राचीन भारत के कौन-कौन से विद्यालय उच्च कोटि की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे?

....

(ग) सुश्रुत द्वारा खोज़ी गई शल्य यंत्रों की संख्या कितनी बताई गई है, आकार के अनुसार नाम भी बताइए।

....

(घ) सुश्रुत संहिता में चिकित्सा विज्ञान के किन-किन महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी दी गई है?

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) सभी चिकित्सा शास्त्री .... के महान विचारक थे।

(ख) महर्षि विश्वामित्र .... के पिता थे।

(ग) विभिन्न प्रकार की चिकित्सा की बारीकियों का अनूठा वर्णन .... में मिलता हो।

(घ) प्राचीन भारत के चिकित्सकों को .... विज्ञान के बारे में जानकारी थी।

(ङ) यूनानी पद्धति के बृहत सिद्धांत .... चिकित्सकों के विचारों पर ही आधारित है।

EDUTONE INTERNATIONAL

4. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) प्रस्तुत अध्याय में कौन-सी कला की चर्चा की गई है?

☐ शल्य क्रिया ☐ द्युत क्रिया ☐ क्रीड़ा ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) आचार्य सुश्रुत को किस गुरु से शिक्षा अधिग्रहीत हुई?

☐ विश्वामित्र ☐ कालिदास ☐ दिवोदास ☐ वाग्भट्ट

(ग) प्रसिद्ध ग्रंथ सुश्रुत संहिता को कितने अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है?

☐ 130 ☐ 110 ☐ 120 ☐ 140

(घ) शल्य क्रिया के दौरान रोगी के ऊतकों, लताओं को किससे अलग कर दिया जाता था?

☐ लकड़ी से ☐ झाड़ू से ☐ कंघी से ☐ ब्रुश से

(ङ) आचार्य सुश्रुत किस क्षेत्र में निवासरत थे?

☐ वाराणसी ☐ उज्जयिनी ☐ पाटलिपुत्र ☐ इनमें से कोई नहीं

5. दिए गए वाक्यों में शुद्ध अशुद्ध का चयन करके लिखिए।

(क) आचार्य सुश्रुत की पाठशाला गंगा तट पर स्थित थी। ☐

(ख) सुश्रुत संहिता में शल्य-चिकित्सा की जानकारी मिलती है। ☐

(ग) महर्षि सुश्रुत ने कैंसर उपचार की औषधियों का भी निर्माण किया था। ☐

(घ) अधूरे प्रशिक्षण के उपरांत ही सुश्रुत अपने शिष्य रख लेते थे। ☐

(ङ) आचार्य सुश्रुत के पास विद्यार्थी दूर-दूर से प्रशिक्षण के लिए आते थे। ☐

6. दिए गए शब्दों का उचित रूप से मिलान कीजिए।

(क) दिवोदास	गंगातट के समीप
(ख) पाठशाला	चिकित्सा शास्त्री
(ग) सुश्रुत	वाराणसी
(घ) प्राचीन नगरी	शल्य चिकित्सा

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

7. वर्तमान समय में शल्य चिकित्सा सेवा न होकर पेशा बन गया है। इस कथन की पुष्टि संवाद द्वारा कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

8. दिए गए कृर्तवाच्य वाक्यों को कर्मवाच्य वाक्यों में परिवर्तित कीजिए।

(क) ''झाड़ियों और लताओं से बने ब्रुश ऊतकों को शरीर से अलग करते हैं।''

....

(ख) ''सुश्रुत ने हर महत्वपूर्ण पहले पर विस्तृत जानकारी दी है।''

....

(ग) ''आचार्य सुश्रुत ने बहुत सी जड़ी-बूटियों की खोज़ की थी।''

....

9. दिए गए शब्दों का विच्छेदन करके लिखिए।

(क) आयुर्वेद – ....

(ख) चिकित्सक – ....

(ग) विश्वामित्र – ....

(घ) परिपक्वता – ....

(ङ) महत्वपूर्ण – ....

10. दिए गए शब्दों से दो-दो अर्थ लिखकर वाक्य निर्माण कीजिए।

(क) गंगा – ....

– ....

(ख) काशी – ....

– ....

(ग) किनारा – ....

– ....

11. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) चिकित्सक – ....

(ख) भगवान – ....

(ग) वैभव – ....

(घ) हिंसक – ....

(ङ) दुर्घटना – ....

EDITONE INTERNATIONAL

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

12. पाठ में प्रस्तुत शल्य चिकित्सा के दौरान उपयोग में लाए जाने वाले शल्य-यंत्रों के चित्र बनाइए एवं उनके नाम भी लिखिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

13. ऐसे प्रमुख चिकित्सकों के बारे में जानकारी एकत्रित कर कक्षा में चर्चा करें जिन्होंने चिकित्सा के क्षेत्र को अपने योगदान से प्रकाशमय किया।

....

....

....

....

14. चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरुस्कार पाने वाले व्यक्ति के नाम लिखिए।

....

....

....

....

15. दिए गए शास्त्रों के लेखकों के बारे में जानकारी एकत्रित करके लिखिए।

अष्टांग हृदयम – ....

भाव प्रकाश – ....

माधव निदान – ....

शारंगहार संहिता – ....

योगदर्शन – ....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

16. प्राणी मात्रा की पीड़ा को कम करना ही सच्ची सेवा है। आप संसार के प्राणी-जगत में किस प्रकार की सच्ची सेवा भाव रखना चाहेंगे?

अध्याय 7

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
(साक्षात्कार)

अध्ययन से पूर्व

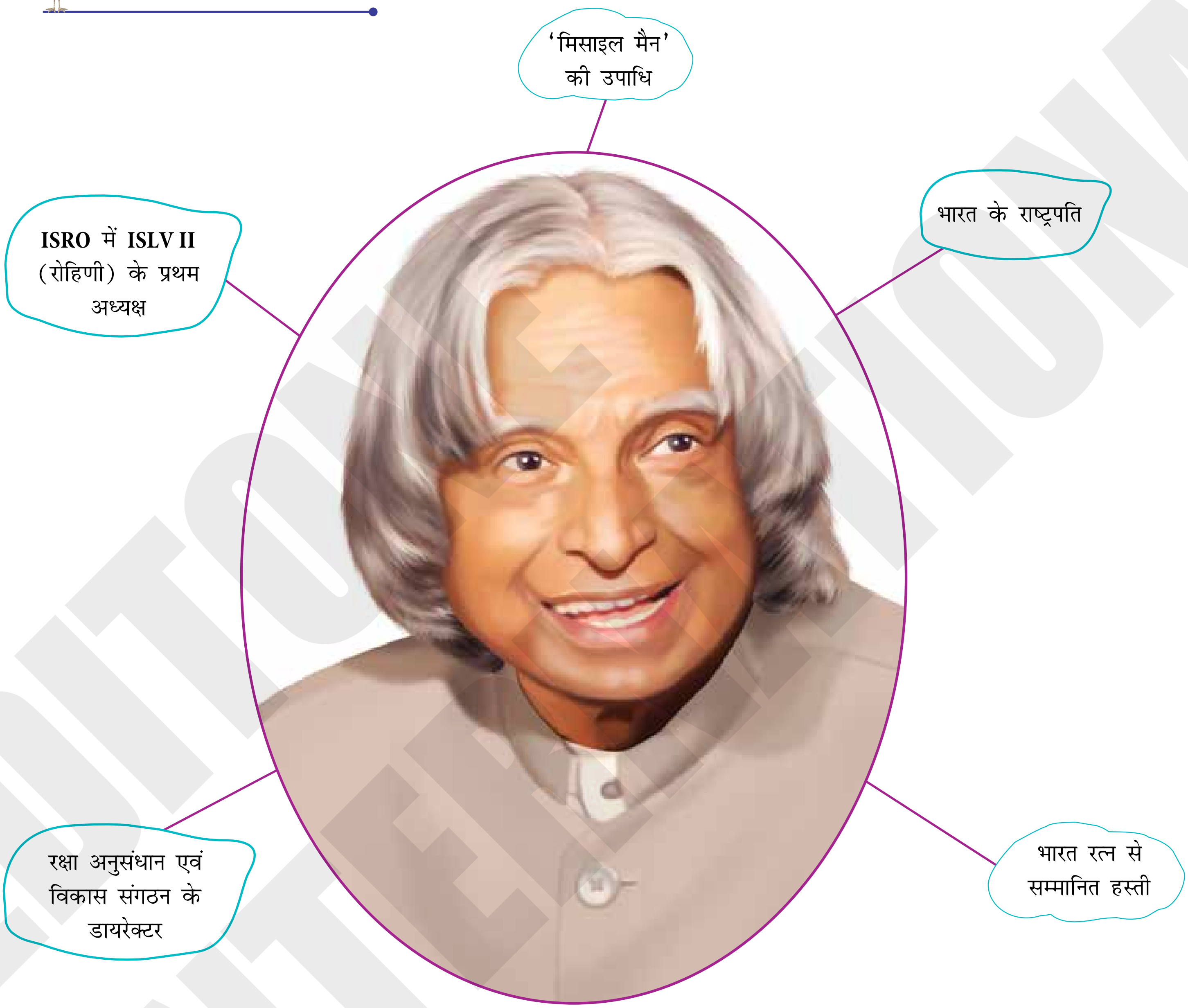

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

साक्षात्कार का मूल तत्व

''आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।'' कृत्रिम सुख की बजाय ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये।

रामेश्वरम् (तमिलनाडु) के एक अल्प शिक्षित परिवार में सन् 1931 में जन्मे प्रो. अव्वल फ़कीर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम ने रक्षा वैज्ञानिक के रूप में ख्याति अर्जित की। उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। कलाम का व्यक्तिगत जीवन तपस्या भरा रहा है। दिन में अट्ठारह घंटे काम करने के बीच वे वीणा बजाने का अभ्यास भी करते हैं। वे बच्चों और युवाओं की आँखों में विकसित भारत की तस्वीर देखते हैं। ऐसे महान व्यक्ति ने हमारे अनुरोध पर बच्चों के लिए समय निकालकर साक्षात्कार दिया।

चिंतन पूँजी है, उद्यम ज़रिया है और
कड़ी मेहनत समाधान है। —डॉ. कलाम

प्रश्न : वह कौन-सी घटना थी, जिसने आपके जीवन को एक नई दिशा दी? आपको एक महान इंजीनियर और वैज्ञानिक बनने का मार्ग दिखाया?

डॉ. कलाम : यह घटना उस समय की है, जब मैं दस वर्ष का था और पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। मेरे अध्यापक श्री शिवसुब्रहमण्यम अय्यर हमें चिड़िया के उड़ने का सिद्धांत समझा रहे थे। उन्होंने श्यामपट्ट (ब्लैक-बोर्ड) पर चित्र बनाकर हमें लगभग बीस मिनट तक समझाया कि चिड़िया कैसे उड़ती है। पंख फड़फड़ाने और संतुलन बनाने के लिए उसकी पूँछ कैसे काम करती है। पूरा समझाकर उन्होंने हमसे पूछा कि 'समझ में आया?' मैंने और कई अन्य बच्चों ने कहा कि हमें समझ में नहीं आया। इस पर क्रोधित होने के बदले वे हमें समुद्र तट पर ले गए। वहाँ हमने अनेक पक्षियों को उड़ते हुए देखा। वहाँ पक्षियों की उड़ान भरने की प्रक्रिया मुझे अच्छी तरह समझ में आ गई। पैरों की मरोड़, पंखों की गति, पूँछ से संतुलन, सभी क्रियाओं का सामंजस्य, सब स्पष्ट हो गया। अंत में उन्होंने बताया कि पक्षी आंतरिक प्रेरणा और जीने की इच्छाशक्ति से उड़ता है। इस अध्याय से पक्षियों की उड़ान की तकनीक के साथ-साथ हमें जीवन की एक गहरी शिक्षा भी मिली। सैद्धांतिक ज्ञान को उदाहरण द्वारा ही पूर्ण शिक्षा का रूप मिलता है।

रामेश्वरम् के तट पर पक्षियों की उड़ान मेरे मन की गहराइयों तक उतर गई। यह मेरे जीवन

का महत्त्वपूर्ण अध्याय था। इसके बाद ही मैंने उड़ान विज्ञान को अपना विषय बनाने का निश्चय किया था। मैं उनका आभारी हूँ जिन अध्यापकों के पढ़ाने की विधि ने मेरा भविष्य तय कर दिया। इससे मैंने अपने जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य निर्धारित कर लिया। मैंने भौतिक विज्ञान का अध्ययन किया, आगे चलकर मद्रास (चेन्नई) इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग में पढ़ाई की और रॉकेट इंजीनियर, ऐरोप्लेन इंजीनियर और तकनीकी विशेषज्ञ बना।

प्रश्न : विज्ञान विषय पढ़ने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ आवश्यक हैं?

डॉ. कलाम : सबसे आवश्यक है शिक्षक और विद्यार्थी के मन में विषय के प्रति लगाव, विद्यार्थी के मन में प्रबल जिज्ञासा। विज्ञान हमें एक विशेष दृष्टि प्रदान करता है जिससे हमारी मानसिक अनिश्चिंतता समाप्त हो जाती है। यह दृष्टिकोण हमें समस्याओं को सुलझाने की शक्ति प्रदान करता है। हम यह चाहने लगते हैं कि उस समस्या को सुलझाएँ जिसे किसी ने अब तक न सुलझाया हो। इसलिए न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांतों की खोज, आइंस्टाइन की रिलेटीविटी थ्योरी, स्टीफन हॉकिंस की स्ट्रींग थ्योरी, सी. वी. रमण जिन्हें नोबल पुरस्कार मिला, उनके बारे में पढ़ना हमें अच्छा लगता है। चंद्रशेखर सुब्रह्मण्यम् जो चंद्रशेखर लिमिट और ब्लैक होल के लिए जाने जाते हैं, श्रीनिवास रामानुजन जो अंकगणित सिद्धांतों के जन्मदाता हैं,

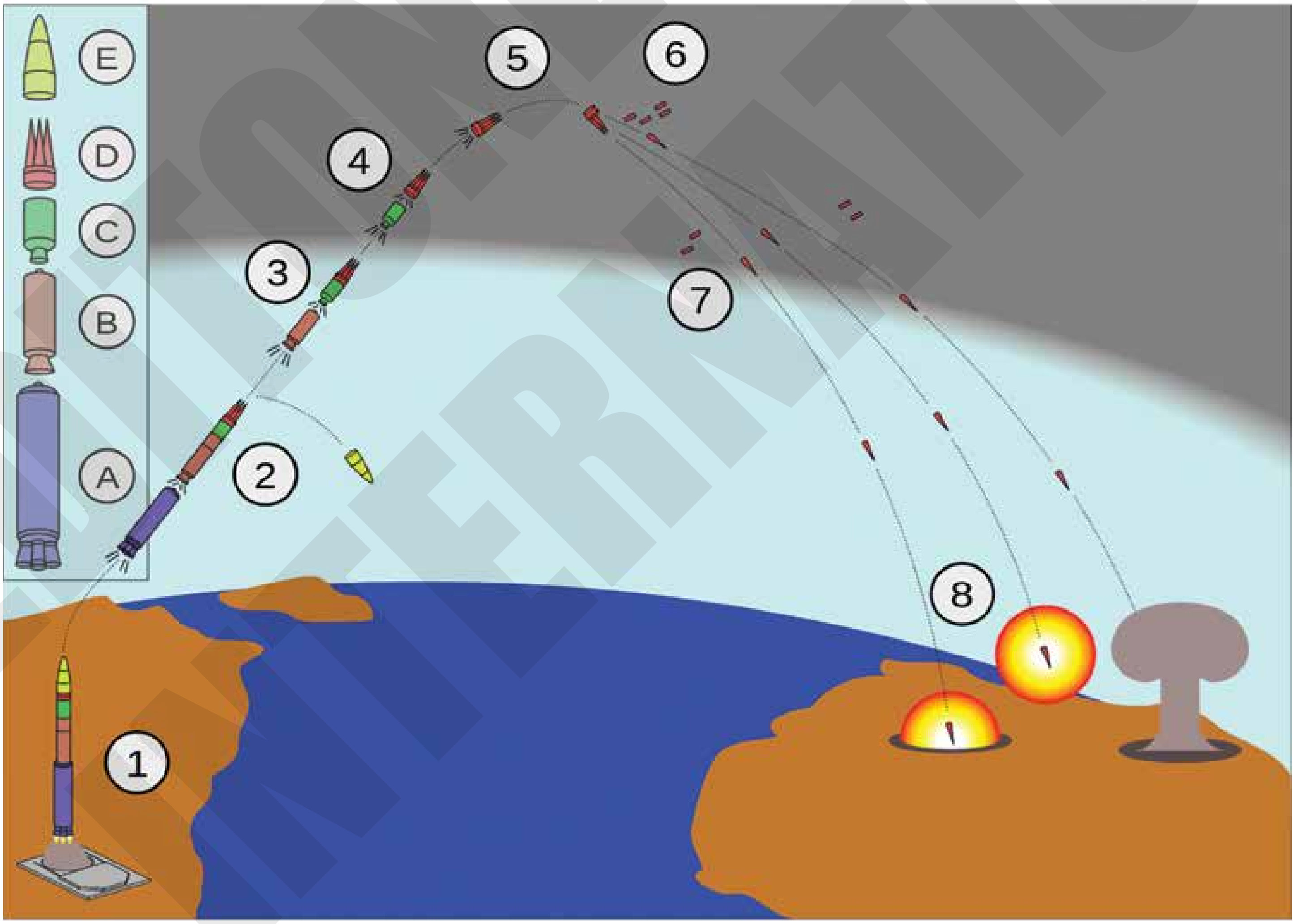

इन्हें पढ़ना हमें अच्छा सैद्धांतिक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। हम आविष्कार और खोज के महत्त्व को उपयोगिता के साथ समझ पाते हैं।

प्रश्न : आपको भारतीय समेकित प्रक्षेपण विकास कार्यक्रम का अविवादित जनक (अनडिस्प्यूटिड फादर ऑफ इंडियन मिसाइल प्रोग्राम) कहा गया है। कृपया हमें IGMDP (इंटिग्रेटेड मिसाइल डिवेलपमेंट प्रोग्राम) की पाँच मुख्य परियोजनाओं के विषय में संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

डॉ. कलाम : सन् 1983 में **IGMDP** के अंतर्गत पाँच प्रक्षेपास्त्रों को विकसित करने का विचार किया–

1. पृथ्वी : सतह से सतह पर प्रक्षेपण के लिए (क्षमता 150 कि.मी.)
2. आकाश : मध्यम दूरी की प्रक्षेपण सतह से हवा में (क्षमता 24 कि.मी.)
3. त्रिशूल : त्वरित प्रतिक्रिया की सतह से हवा में, एक छोटी दूरी का प्रक्षेपास्त्र (क्षमता 8–10 कि.मी.)
4. नाग : टैंक विरोधी निर्देशित प्रक्षेपास्त्र (क्षमता 4 कि.मी.)
5. अग्नि : तकनीकी प्रमाणक प्रक्षेपण प्रणाली (वैलस्तिक मिसाइल)

पिछले 25 वर्षों के दौरान दो प्रक्षेपास्त्र प्रणालियाँ विकसित हुईं, इनका प्रयोग भी किया गया। आकाश को हमारी वायु सेना ने आपूर्ति के लिए मँगवाया और पृथ्वी व अग्नि के अनेक रूप विकसित किए गए। इनके प्रसारण की पूर्ण तैयारी है।

प्रश्न : शिक्षा व्यवस्था के विकास में सूचना और संचार की क्या भूमिका हो सकती है?

डॉ. कलाम : दूरस्थ शैक्षिक कार्यक्रमों को देश के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता से व्यावहारिक बनाने के लिए तीन तरह के कार्यक्रम आवश्यक हैं–संपर्क, प्रसारण और उत्पादन एवं उसका प्रसार, जो संपर्क को डेढ़ लाख टर्मिनल्स के साथ जोड़ने की क्षमता रखता है। देश के दूसरे भाग में ब्रॉड बैंड और बेतार के तार (वायरलैस) संचार माध्यम से जुड़े हैं। ये सभी माध्यम उत्तम साधन हैं।

जब हम सारे देश को संचार माध्यम से जोड़ने में सफल हो जाएँगे तो शिक्षण संस्थाओं से विद्यार्थी और शिक्षकों का प्रत्यक्ष और परोक्ष, दोनों तरह से संपर्क साधा जा सकेगा। इस संपर्क में व्यापक शिक्षक अभियान चलाए जा सकेंगे। इससे हर क्षेत्र के लोग लाभान्वित हो सकेंगे।

प्रश्न : परमाणु शक्ति का संबंध अधिकतर विनाशक बम के रूप में ही होता है, इसके सकारात्मक या रचनात्मक प्रयोग के बारे में बताएँ।

डॉ. कलाम : परमाणु शक्ति का प्रयोग ऊर्जा उत्पादन और उत्तम कृषि के बीज प्रदीपन हेतु भी किया जाता है।

प्रश्न : आपको कर्नाटक संगीत का अच्छा ज्ञान है। एक वैज्ञानिक होते हुए इस दिशा में आपका रुझान कब और कैसे हुआ?

डॉ. कलाम : जब मैं संट जोसेफ़ कॉलेज में पढ़ता था, उसी समय संगीत में मेरा रुझान बढ़ने लगा। मुझे एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी और सी. भादुड़ी श्रीनिवास अय्यर का संगीत अच्छा लगता था। मैं अपने मित्र सांथम के साथ तिरुवर त्यागराजा उत्सव में संगीत सुनने जाता था। हॉस्टल लौटकर हम इसी संगीत के विषय में बहुत-सी बातें करते थे।

प्रश्न : भारत के भावी कर्णधारों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

डॉ. कलाम : मैं भारत के कर्णधारों से यही कहना चाहता हूँ कि किसी भी युवक को भविष्य से घबराने की आवश्यकता नहीं है, अगर उसने अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया है।

समय बहुत मूल्यवान है। सदाचारी बनो! आत्मविश्वास रखो कि तुम्हारे पास हर समस्या का सामना करने की क्षमता है। ऐसा करके तुम अपने लक्ष्य को सरलता से प्राप्त कर लोगे।

जय हिंद!!

शब्दार्थ

रूझान	= झुकाव	दृष्टिकोण	= सोचने का तरीका
वर्णधार	= भावी धारक	प्रक्षेपास्त्र	= दूरी में फेंककर वार करने वाला
सामंजस्य	= तालमेल	श्रेय	= सराहना का पात्र
प्रत्यक्ष	= जो दिखाई दे	प्रोक्ष	= अनुपस्थित

उच्चारण करें

ख्याति	अर्जित	साक्षात्कार	आंतरिक	इच्छाशक्ति
सैद्धांतिक	विशेषज्ञ	विरुद्ध	सर्वोत्तम	गुणवत्तापूर्ण

अध्यापन संकेत–

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को डॉ. कलाम के बारे में विस्तारपूर्वक बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) डॉ. कलाम का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(ख) IGMDP के अंतर्गत कितनी तरह के प्रक्षेपास्त्रों को विकसित करने का विचार किया गया?

(ग) परमाणु शक्ति का सकारात्मक रुप मे किस तरह किया जा सकता है?

(घ) डॉ. कलाम की विज्ञान के अलावा किस विषय में रुचि थी?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) शिक्षा के विकास में सूचना एवं संचार की क्या भूमिका है?

....

(ख) 'अंकगणित सिद्धांतों के जन्मदाता' कौन है?

....

(ग) भारत के भावी कर्णधारों के लिए डॉ. कलाम ने क्या संदेश दिया?

....

(घ) परमाणु शक्ति का प्रयोग किस रूप में हो सकता है?

....

3. सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए।

सैद्धांतिक उद्देश्य दृष्टि रूझान

(क) विज्ञान हमें एक विशेष .... प्रदान करता है।

(ख) मैंने अपने जीवन का लक्ष्य और .... निर्धारित कर लिया।

(ग) .... ज्ञान को उदाहरण द्वारा ही पूर्ण शिक्षा का रूप मिलता है।

(घ) संगीत में मेरा .... बढ़ने लगा।

4. सही मिलान कीजिए।

(क) टैंक विरोधी निर्देशित प्रक्षेपास्त्र	अग्नि
(ख) बैलस्टिक मिसाइल	पृथ्वी
(ग) सतह से सतह पर प्रक्षेपास्त्र	त्रिशुल
(घ) छोटी दूरी का प्रक्षेपास्त्र	नाग

5. सही वचन पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) पक्षी अपना संतुलन स्थापित करते हैं?

☐ पंख ☐ चोंच ☐ पूँछ ☐ सभी

(ख) चिड़िया के उड़ने का सिद्धांत समझने बच्चे गए–

☐ समुद्र पार ☐ समुद्र तट पर ☐ पुस्तकालय में ☐ मैदान में

(ग) डॉ. कलाम का जन्म हुआ था–

☐ केरल में ☐ तमिलनाडु में ☐ कर्नाटक में ☐ बैंग्लुरु में

6. सही कथन पर (✓) अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) हम आविष्कार और खोज़ के महत्व को उपयोगिता के साथ समझ पाते हैं। ☐

(ख) रामानुजन अंकगणित सिद्धांत के जन्मदाता थे। ☐

(ग) डॉ. कलाम की चित्रकारी में रुचि थी। ☐

(घ) समय बहुत मूल्यवान है। ☐

7. दिए गए शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) आत्मविश्वास – ....

(ख) सदाचारी – ....

(ग) मूल्यवान – ....

(घ) उपयोगिता – ....

(ङ) उद्देश्य – ....

8. 'डॉ. कलाम' जी का परिचय दस पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

9. डॉ. कलाम को 'मिसाइल मैन के नाम से क्यों जाना जाता है? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

10. जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए लक्ष्य की आवश्यकता क्यों होती है? अपने शब्दो में स्पष्ट कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

11. दिए गए शब्दों का विशेषण रूप लिखिए।

(क) मूल्य –

(ख) इतिहास –

(ग) आविष्कार –

(घ) राष्ट्र –

12. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) आकाश –

(ख) पृथ्वी –

(ग) त्रिशुल –

(घ) पक्षी –

13. दिए गए शब्दों में अनुस्वार (ं) पंचम वर्ण से लिखिए।

(क) संबंध – ....

(ख) संगीत – ....

(ग) श्रृंगार – ....

(घ) स्वतंत्र – ....

14. दिए गए संयुक्त व्यंजन के तीन-तीन शब्द लिखिए।

(क) श्व – ....

(ख) त्य – ....

(ग) द्‌ध – ....

(घ) द्‌य – ....

15. दिए गए मूल शब्दों में प्रत्यय जोड़ते हुए नया शब्द बनाइए।

मूल शब्द		प्रत्यय	नया शब्द
(क) उच्च	+	तम	....
(ख) उद्‌देश्य	+	पूर्ण	....
(ग) कठिन	+	तम	....
(घ) महत्व	+	पूर्ण	....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

15. उन प्रश्नों को लिखिए जिन्हें आप किसी महान वैज्ञानिक का नाम लेते समय पूछना चाहेंगे?

17. डॉ. कलाम ने ISRO (इसरो) में भारत के लिए किस प्रोजेक्ट पर कार्य किया? उनका वह योगदान भारत के लिए कैसे उपयोगी सिद्‌ध हुआ? लिखिए।

18. डॉ. कलाम ने भारत की किन-किन संस्थाओं में अपना योगदान दिया? कार्यकाल सहित सूची तैयार कीजिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

17. "लक्ष्य की प्राप्ति परिश्रम द्‌वारा ही संभव है।" आप किस प्रकार अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना चाहेंगे?

अध्याय 8

भीष्म
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

- भीष्म पितामह कौरवों और पाण्डवों के पितामह थे। शिक्षक/शिक्षिका बच्चों से कक्षा में यह टिप्पणी करवाएँ कि भीष्म पितामह व्यावहारिक रूप से कौरवों एवं अन्तर्मन से पाण्डवों के पक्ष में कैसे हुए?

कहानी का मूल तत्व

वचनों का दृढ़तापूर्वक और निष्ठावादी के रूप में पालन करना चाहिए।

प्रस्तुत अध्याय में महाभारत कालीन महापुरुष भीष्म के चरित्र की दृढ़ता के विषय में बताया गया है। लेखक का कहना है कि यदि भीष्म जैसे चरित्र वाले व्यक्ति देश में हो जाएँ तो देश का कल्याण हो जाए।

वर्तमान काल के लोग त्याग और तपस्या को अनावश्यक समझते हैं, किंतु यदि इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें तो पता चलता है कि संसार में उसी को महान माना गया है जिसने दूसरों के लिए अपने स्वार्थ का बलिदान किया। इन्हीं में एक महान पुरुष भीष्म थे।

महाभारत की लड़ाई से पहले एक राजा थे, जिनका नाम था शांतनु। वे उत्तरी भारत में राज करते थे। उनकी राजधानी हस्तिनापुर थी। उनकी पत्नी का नाम गंगा और पुत्र का नाम भीष्म था। भीष्म के जन्म के कुछ ही दिनों बाद गंगा राजा शांतनु को छोड़कर गंगा में समा गई थी। शांतनु एक दिन शिकार के लिए जा रहे थे। राह में इन्हें एक नदी पार करनी थी। जब वे नदी के तट पर पहुँचे, उन्होंने किनारे पर एक युवती को देखा। वह ध्यान से चंचल लहरों की गति निरख रही थी। वह अद्‌वितीय सुंदरी थी। शांतनु ने उसे देखा और आखेट भूल गए। फिर वे अपने साथियों के पास लौट आए और उन्होंने उस युवती से विवाह करने की इच्छा प्रकट की।

युवती मल्लाह की कन्या थी। उसका नाम सत्यवती था। जब शांतनु के मंत्री उसके पिता के पास पहुँचे तो वह इस संबंध को धन्य मानते हुए उनसे बोला, "मैं एक शर्त पर अपनी कन्या का विवाह कर सकता हूँ कि राजा की मृत्यु के पश्चात् मेरी कन्या का पुत्र गद्‌दी पर बैठेगा, भीष्म नहीं।" शांतनु इस पर सहमत नहीं हुए और उन्होंने सत्यवती के पिता से यह बात कह दी और हस्तिनापुर लौट आए।

लौट तो आए, किंतु वह सत्यवती को नहीं भूल पाए और बीमार पड़ गए। धीरे-धीरे बीमारी बढ़ती गई। यह देखकर सब लोग दुःखी हो गए। भीष्म ने अनेक उपचार किए। मंत्रियों से शांतनु के रोग के कारण का पता लगने पर भीष्म ने किसी से कुछ नहीं कहा, सीधे मल्लाह के पास गए और उससे कहा, "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं हस्तिनापुर का सिंहासन छोड़ दूँगा। इतना ही नहीं, मैं सदैव सत्यवती के पुत्र की सहायता करूँगा।" मल्लाह ने कहा– "मैं आपका विश्वास करता हूँ, लेकिन आपकी जो संतान होगी उसके संबंध में कौन क्या कह सकता है? इसलिए यदि आप यह भी वचन दें कि मैं कभी विवाह नहीं करूँगा, तब मैं सत्यवती का विवाह आपके पिता से कर दूँगा।" भीष्म ने एक क्षण के लिए विचार किया और फिर उन्होंने कहा, "मैं धरती, आकाश, वायु, जल सभी को साक्षी मानकर यह कसम खाता हूँ कि कभी विवाह नहीं करूँगा।" तब उस मल्लाह ने अपनी कन्या का विवाह शांतनु से कर दिया।

विवाह के पश्चात् शांतनु सुखपूर्वक राज-काज करने लगे। सत्यवती के पुत्र हुए। शांतनु की मृत्यु के पश्चात् सत्यवती का बड़ा पुत्र हस्तिनापुर का राजा बना, किंतु शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गयी। इसके पश्चात् दूसरा पुत्र सिंहासन पर बैठा। दुर्भाग्यवश वह भी अल्पकाल में ही काल-कवलित हो गया। अब कौन सिंहासन पर बैठे?

शांतनु का भी कोई दूसरा उत्तराधिकारी नहीं था। तब सब लोगों ने भीष्म से उत्तराधिकारी बनने के लिए कहा, भीष्म ने स्पष्टतः अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा, "मनुष्य की प्रतिज्ञा सींक नहीं है, जो झटके से टूट जाया करती है। जो बात एक बार कह दी गई उससे लौटना मनुष्य की दुर्बलता है, चरित्र की हीनता है।" उन्होंने सिंहासन नहीं स्वीकार किया। आज जब हम देखते हैं कि एक-एक धूर-धरती के लिए लोग नाना प्रकार से पाप करते हैं, तब हमें भीष्म के कथन की महत्ता समझ में आती है।

भीष्म के चरित्र की यही विशेषता थी कि जो प्रतिज्ञा कर लेते थे, उससे नहीं हटते थे। एक नहीं, उनके जीवन में इस प्रकार के अनेक उदाहरण हैं। उनके जीवन में ही महाभारत का युद्ध आरंभ हो गया। भीष्म कौरवों की ओर से लड़ रहे थे। कृष्ण पांडवों की ओर थे। कृष्ण ने कहा था कि– "मैं अर्जुन के रथ का सारथी बनूँगा, लड़ूँगा नहीं।" भीष्म ने प्रतिज्ञा की, "मैंने ठान ली है कि मैं कृष्ण को शस्त्र उठाने को विवश करूँगा।" महाकवि सूरदास ने इस पर एक सुंदर गीत भी लिखा है। उसकी आरंभ की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

"आजु जो न हरि को शस्त्र गहाऊँ।
हौ लाजों गंगा जननी को शांतनु-सुत न कहाऊँ।।"

भीष्म ने बाणों का प्रहार आरंभ किया। उनके बाणों के प्रहार से पांडवों की सेना का ऐसा संहार होने लगा कि कृष्ण को विवश होकर चक्र उठाना ही पड़ा। बस इतनी ही बात थी। उन्होंने कृष्ण से कहा– "मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई। आगे कुछ नहीं चाहता।" इसी से भीष्म की प्रतिज्ञा का महत्त्व समझा जाता है। "भीष्म-प्रतिज्ञा" कहावत हो गई है। जब कोई कठिन प्रतिज्ञा करता है तब लोग उसे "भीष्म प्रतिज्ञा" कहते हैं।

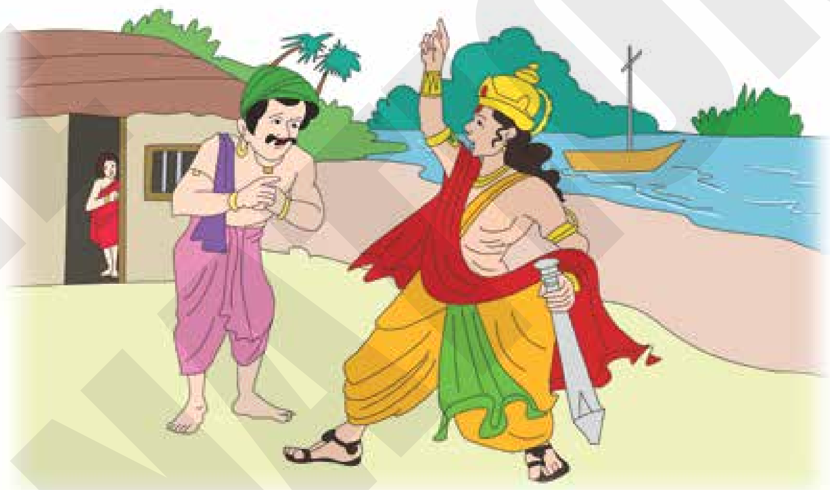

भीष्म का सब लोग आदर करते थे। उनके मित्र भी और उनके विरोधी भी। भीष्म ने बहुत चेष्टा की कि महाभारत का युद्ध न हो, किंतु उनकी एक न चली। यद्यपि अंत में युद्ध होने पर वह भी योद्धा की तरह लड़े तथापि उन्हें यह बात अच्छी न लगी। वह लड़ तो रहे थे कौरवों की ओर से, पर पांडवों से उनकी मित्रता सदैव बनी रही। अर्जुन के लिए उनके हृदय में बहुत स्नेह था। पाँचों पांडव उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे।

उनकी प्रतिज्ञा की एक और कथा है। युद्ध में वे अर्जुन के बाणों से घायल हुए। उनके शरीर के चारों ओर बाण बिंध गए। उनके शरीर में इतने बाण बिंध गए थे कि शरीर तो दिखाई ही नहीं देता था। वह रणभूमि में गिर गए। बचने की कोई आशा नहीं रह गई। यह देखकर उन्होंने प्रण किया कि जब तक सूर्य उत्तरायण में नहीं आ जाएँगे, मैं नहीं मरूँगा। जब पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है तब सूर्य भूमध्यरेखा के उत्तर में छः मास रहता है और छः मास भूमध्य-रेखा के दक्षिण में। जब सूर्य दक्षिण में रहता है, उसे दक्षिणायन कहते हैं और जब भूमध्य रेखा के उत्तर में रहता है, तब उत्तरायण कहते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि जिस समय सूर्य दक्षिणायन में रहता है, उस समय किसी का मरना ठीक नहीं है। इसी कारण से भीष्म सूर्य के

दक्षिणायन में रहते हुए मरना नहीं चाहते थे। सब लोग ऐसी प्रतिज्ञा नहीं कर सकते। बड़े आत्म–विश्वास की आवश्यकता है। इतना आत्म–विश्वास विरले लोगों को ही नसीब होता है। इतना आत्म–विश्वास उसी को हो सकता है जिसका चरित्र महान और उज्ज्वल हो। केवल भीष्म के समान लोग ही मृत्यु को ललकार सकते हैं।

लगभग छः मास तक वह इसी प्रकार तीरों की शैय्या पर पड़े रहे। लोग उनकी सेवा करते रहे और उन्होंने मृत्यु को अपने पास फटकने नहीं दिया। इसी समय की एक और घटना है जब एक बार उन्हें प्यास लगी। सब लोग पानी लाए, किंतु उन्होंने ग्रहण न किया। उन्होंने अर्जुन से जल लाने को कहा। अर्जुन ने पृथ्वी पर एक बाण चलाया और बाण गहराई तक पृथ्वी के अंदर चला गया। पृथ्वी के अंदर बाण धँसते ही उस जगह से एक जल की धारा फूट निकली तब भीष्म ने वही जल ग्रहण किया और उन्हें शांति मिली।

जब उनकी मृत्यु का समय निकट आ गया, कौरव तथा पांडव उन्हें देखने आए। युधिष्ठिर ने भाइयों की ओर से भीष्म से क्षमा माँगी। उनसे शासन के संबंध में परामर्श माँगा। भीष्म ने ऐसी बहुत–सी बातें उन्हें बताईं जो महाभारत की पुस्तक में ब्यौरे से लिखी गई हैं। ये बातें बड़ी अनुभव तथा महत्त्व की हैं, जो हर पीढ़ी के व्यक्ति के काम आ सकती हैं।

भीष्म का बल असाधारण था, किंतु उनका चरित्र उससे भी असाधारण था। यदि भीष्म के समान वचन के पक्के व्यक्ति हमारे देश में हो जाएँ तो हमारा देश अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त कर संसार का सिरमौर हो जाए।

—संकलित

शब्दार्थ

आखेट	= शिकार करना	पश्चात्	= बाद में
अल्पकाल	= कम समय में	प्रतिज्ञा	= दृढ़ संकल्प, वादा
श्रृद्धा	= विश्वास, भरोसा	रणभूमि	= युद्ध स्थल
काल–कवलित	= खत्म, मरा हुआ, जो काल का ग्रास बन चुका हो	परिक्रमा	= चारों ओर घूमना

उच्चारण करें

हस्तिनापुर   शांतनु   मल्लाह   दुबर्लता   युधिष्ठिर

उत्तरायण   दक्षिणायन   उत्तराधिकारी

अध्यापन संकेत–

शिक्षक/शिक्षिका पौराणिक कथाओं तथा प्राचीन ग्रंथों में प्रस्तुत सीख को अनुसरित करने की सीख दें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) संसार में महान किसे माना गया है?

(ख) शांतनु ने वैवाहिक संबंध जोड़ने के लिए किससे आग्रह किया?

(ग) राजा शांतनु के राज-सिंहासन पर कितने लोग आसीन हुए?

(घ) अपनी मृत्यु को नज़दीक आने के लिए भीष्म ने किसका इंजतार किया?

(ङ) भीष्म के नज़दीक आकर युधिष्ठिर ने किसके लिए आग्रह किया?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) सत्यवती के पिता ने विवाह के संबंध में क्या शर्त रखी?

....

(ख) भीष्म के जीवन की किन घटनाओं से पता चलता है? कि वे दृढ़ निश्चयी थे?

....

(ग) मल्लाह के सामने भीष्म द्वारा प्रतिज्ञा लेने का क्या कारण था?

....

(घ) शस्त्र उठाने के लिए भीष्म ने किस प्रकार कृष्ण को उत्तेजित किया?

....

(ङ) भीष्म के चरित्र की महानता का उल्लेख कीजिए।

....

3. उचित विकल्प का चयन करके (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) राणा शांतनु की राजधानी कहाँ स्थित थी?

☐ वैशाली ☐ पाटलिपुत्र ☐ अयोध्या ☐ हस्तिनापुर

(ख) युद्ध मे भीष्म के घायल होने का क्या कारण था?

☐ युधिष्ठिर के बाण ☐ दुर्योधन के बाण ☐ अर्जुन के बाण ☐ शांतनु के बाण

(ग) "मैं अर्जुन के रथ का सारथी बनूँगा, लड़ूँगा नहीं" यह कथन किसका था?

☐ कृष्ण का ☐ युधिष्ठिर ☐ भीष्म ☐ अर्जुन

(घ) कृष्ण को शस्त्र उठाने के लिए किसने विवश किया?

☐ अर्जुन ☐ भीष्म ☐ दुर्योधन ☐ युधिष्ठिर

(ङ) भीष्म के प्रति पांडवों का स्वभाव किस प्रकार का था?

☐ श्रद्धा से हीन ☐ निष्कपट ☐ श्रद्धा से युक्त ☐ छलकारिता

4. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) वर्तमान काल के लोग त्याग और तपस्या को .... समझते हैं।

(ख) भीष्म जैसे चरित्र वाले व्यक्ति देश में जो हो जाएँ तो देश का हो .... जाए।

(ग) विवाह के पश्चात शांतनु .... राज-काज करने लगे।

(घ) जब कोई कठिन प्रतिज्ञा करता है तो उसे .... कहते हैं।

(ङ) भीष्म ने बहुत .... की कि महाभारत का युद्ध न हो किंतु उनकी एक न चली।

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

5. जब कोई कठिन प्रतिज्ञा करता है तो लोग उसे 'भीष्म प्रतिज्ञा' क्यों कहते हैं? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

6. दिए गए वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्दों के उचित भेद के सामने (✓) का निशान लगाइए।

(क) मैं सदैव सत्यवती के पुत्र की सहायता करूँगा।

☐ जातिवाचक ☐ व्यक्तिवाचक ☐ भाववाचक ☐ गुणवाचक

(ख) पांडवों से उनकी मित्रता सदैव बनी रही।

☐ व्यक्तिवाचक ☐ भाववाचक ☐ जातिवाचक ☐ द्रव्यवाचक

(ग) राह में इन्हें एक नदी पार करनी थी।

☐ भाववाचक ☐ जातिवाचक ☐ गुणवाचक ☐ व्यक्तिवाचक

7. दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए।

(क) स्वार्थ – .... (ख) स्वीकार – ....

(ग) जन्म – .... (घ) आदर – ....

(ङ) विश्वास – .... (च) स्नेह – ....

8. दिए गए वाक्यों का शुद्धीकरण करके पुनर्लेखन करें।

(क) मैं एक शर्त पर अपनी कन्या के विवाह कर सकता हूँ।

....

(ख) भीष्म के जन्म के कुछ दिनों बाद गंगा राजा शांतनु को छोड़कर गंगा में समा गई।

....

(ग) मल्लाह ने अपनी कन्या का विवाह शांतनु से कर दिया।

....

9. दिए गए शब्दों के लिंग लिखिए।

(क) लोभ – .... (ख) सड़क – ....

(ग) मुलाकात – .... (घ) अंधेरा – ....

(ङ) मौका – .... (च) संस्कृति – ....

10. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद लिखिए।

(क) हस्तिनापुर – .... + ...

(ख) सत्यवती – .... + ...

(ग) उत्तराधिकारी – .... + ...

(घ) यद्यपि – .... + ...

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. महाभारत के जिस पात्र ने आपको प्रभावित किया उसका चित्र अपनी पाठ्य-पुस्तिका में चिपाकर उनके विषय में एक अनुच्छेद लेखन कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

12. महाभारत युद्ध पश्चात् युधिष्ठिर को भीष्म ने शासन संबंधित बहुत से परामर्श दिए। पता करके लिखिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. "प्राण जाएँ पर वचन न जाएँ।" क्या आप इस मूल्य को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहेंगे?

अध्याय 9

'कृतयुगी विनोबा'
(जीवनी)

अध्ययन से पूर्व

जीवनी का मूल तत्व

अपने जीवन को मानवीय हितों के लिए समर्पित कर देना चाहिए।

''तुम्हारे लिए कौन-सा विशेषण काम में लाऊँ, मुझे नहीं सूझता। तुम्हारा प्रेम और चरित्र मुझे मोह में डुबो देता है। सच्चा पुत्र वह है जो पिता ने जो कुछ किया हो, उसमें वृद्धि करे। पिता सत्यवादी, दयामय, दृढ़ हो तो स्वयं अपने में वह गुण विशेष रूप से धारण करे। यह तुमने किया है, ऐसा दिखता है। तुमने यह मेरे प्रयत्नों से किया है, ऐसा मुझे नहीं मालूम होता। इस कारण तुमने जो पिता का पद दिया है, उसे मैं तुम्हारे प्रेम की भेंट के रूप में स्वीकार करता हूँ। उस पद के योग्य बनने का प्रयत्न करूँगा और जब मैं हिरण्यकश्यप होऊँ तो प्रह्लाद भक्त के समान मेरा सादर निरादर करना।''

सन् 1918 में महात्मा गांधी ने ये उद्गार उस विभूति के लिए प्रकट किए थे, जिसके महान व्यक्तित्व तथा अपूर्व कृतित्व ने भारत को ही नहीं, विश्व के अनेक देशों को भी चमत्कृत कर दिया। विनोबा जी की उम्र उस समय तेईस वर्ष के लगभग थी। अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर वह काशी चले गए थे। वहाँ से गांधी जी के विचारों से अभिभूत होकर अहमदाबाद आए और कुछ समय बाद गांधी जी से एक वर्ष की छुट्टी लेकर आश्रम से चले गए। इस एक वर्ष की अवधि में अपने अध्ययन, मनन, स्वास्थ्य संबंधी प्रयोग, शिक्षा-कार्य तथा व्रत-पालन आदि के विस्तृत विवरण से युक्त 10 फरवरी, 1918 को उन्होंने गांधी जी को एक पत्र लिखा।

विनोबा जी ने लिखा था, ''........ जब मैं दस वर्ष का था, तब मैंने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने हेतु देश-सेवा करने का व्रत लिया था। उसके बाद हाईस्कूल में दाखिला हुआ, उस समय मुझे गीता पढ़ने का शौक लगा पर मेरे पिता जी ने दूसरी भाषा के तौर पर फ्रैंच लेने की आज्ञा दी, तो भी गीता का प्रेम कम नहीं हुआ था। तभी से मैंने घर पर ही स्वयं संस्कृत का अभ्यास आरंभ कर दिया था। मेरा निश्चय था कि तत्त्व ज्ञान का भी अभ्यास करूँ। मैं आपकी आज्ञा लेकर आश्रम में दाखिल हुआ, पर उसी समय वेदांत का अभ्यास करने का अच्छा अवसर हाथ लगा। बांई में नारायण शास्त्री मराठी नामक एक आजन्म ब्रह्मचारी विद्वान विद्यार्थियों को वेदांत तथा दूसरे शास्त्र सिखाने का काम करते थे। उनके पास उपनिषदों के अध्ययन करने का लाभ हुआ।''

''........ स्वास्थ्य-सुधार के निमित्त पहले तो मैंने दस-बारह मील घूमना शुरू किया, बाद में छह से आठ सेर तक अनाज पीसना चालू किया। आज 300 सूर्य-नमस्कार और घूमना, यह मेरा व्यायाम है। इससे मेरा स्वास्थ्य ठीक हो गया।''

''आहार के विषय में पहले छह महीने तो नमक खाया। बाद में उसे छोड़ दिया। मसाले आदि बिल्कुल नहीं खाए और आजन्म मसाले और नमक न खाने का व्रत लिया। दूध शुरू किया। बहुत प्रयोग करने के बाद यह सिद्ध हुआ कि दूध बिना बराबर चल नहीं सकता। फिर भी इसे छोड़ा जा सके तो छोड़ देने की मेरी इच्छा है। एक महीना केवल केले, दूध और नींबू पर बिताया, इससे ताकत आ गई।''

इस प्रकार छोटी-सी अवस्था से ही विनोबा जी की कठोर साधना आरंभ हो गई थी, जो अंत तक अखंड गति से चली। वस्तुतः आरंभ से ही उनकी दृष्टि अंतर्मुखी थी, इसी से उन्हें दुनिया के आडंबर में कभी रस नहीं आया। कॉलेज में पहुँचते-पहुँचते उन्हें वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की निरर्थकता दिखाई दे गई, झट पढ़ाई छोड़ दी और स्कूली पढ़ाई का मोह मन से सदा के लिए निकाल दिया। मार्गदर्शक की खोज की। गांधी जी मिल गए। उनके निकट जाकर एकांत साधना में लीन हो गए। पिता अत्यंत निस्पृही व्यक्ति थे। उनसे विरासत में वैराग्य की भावना मिली। माँ ईश्वर-भक्त, दयालु तथा करुणामयी थीं। उनसे ये गुण लिए।

विनोबा जी का जन्म 11 सितंबर, 1895 में महाराष्ट्र के गागोदा नामक ग्राम में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा बड़ौदा में हुई। वहीं से उन्होंने सन् 1913 में हाईस्कूल की परीक्षा पास की। वह मेधावी छात्र थे। गणित उनका प्रिय विषय था। मराठी में कई बार सौ में से निन्यानवे अंक प्राप्त किए। इंटर की परीक्षा देने मुंबई जा रहे थे कि देशभक्ति और वैराग्य की भावना ने उनका मुँह दूसरी ओर मोड़ दिया। वह काशी गए। उन्हीं दिनों हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह के अवसर पर गांधी जी वहाँ आए। जैसा मैं जानता हूँ, थोड़े पत्र-व्यवहार के उपरांत वह गांधी जी के निकट पहुँच गए।

साबरमती, वर्धा, नालवाड़ी तथा परमधाम में उन्होंने जो प्रयोग किए, उनकी विस्तार से चर्चा करना असंभव है। अपने मौलिक चिंतन से उन्होंने कताई, सफ़ाई तथा बुनियादी शिक्षा में असामान्य क्रांति की।

उनकी कताई की योग्यता के विषय में गांधी जी का कहना था कि इसमें विनोबा जी इतने निष्पात हो गए हैं कि बहुत ही कम लोग उनकी तुलना में रखे जा सकते हैं।

सन् 1951 में उनके जीवन में एक नया मोड़ आया। सर्वोदय सम्मेलन में भाग लेने के लिए उन्होंने वर्धा से शिवरामपल्ली (हैदराबाद) की पैदल यात्रा की। वहाँ से कुछ साथियों के अनुरोध पर वह तेलंगाना क्षेत्र में गए, जहाँ साम्यवादियों की हिंसात्मक प्रवृत्तियों के कारण भारी आतंक छाया हुआ था।

10 अप्रैल को नलगुंडा जिले के पोचमपल्ली गाँव में रुके। वहाँ की तीन हज़ार आबादी में से दो हज़ार व्यक्ति भूमिहीन थे। कुछ हरिजन आकर विनोबा जी से मिले और उन्होंने अपने हाथ से खेती करने के लिए 80 एकड़ भूमि की माँग की। विनोबा जी ने प्रार्थना-सभा में यह माँग वहाँ उपस्थित लोगों के सामने रखी। तत्काल एक भाई उठ खड़े हुए और उन्होंने 100 एकड़ भूमि दे दी। यह था भूदान-गंगा का उद्गम। विनोबा जी को इसके पीछे ईश्वरीय संकेत दिखाई दिया और वह भाईचारे की दीक्षा देने के लिए सारे देश की पदयात्रा पर निकल पड़े। विनोबा जी को लाखों एकड़ भूमि मिली, हज़ारों गाँव मिले, जीवनदानियों की उनके पास सेना खड़ी हो गई, शांति-सैनिकों की टोलियाँ तैयार हो गईं। गाँव ही नहीं, प्रखंड मिले। लगभग पूरा बिहार उन्हें समर्पित कर दिया गया।

विनोबा जी का कहना था कि एक शक्ति हिंसा की है पर हिंसा से हिंसा उत्पन्न होती है। दूसरी शक्ति कानून की है, पर कानून का रास्ता बहुत लंबा है और जब तक उपयुक्त भूमिका न हो तब तक कानून कारगर नहीं हो सकता।

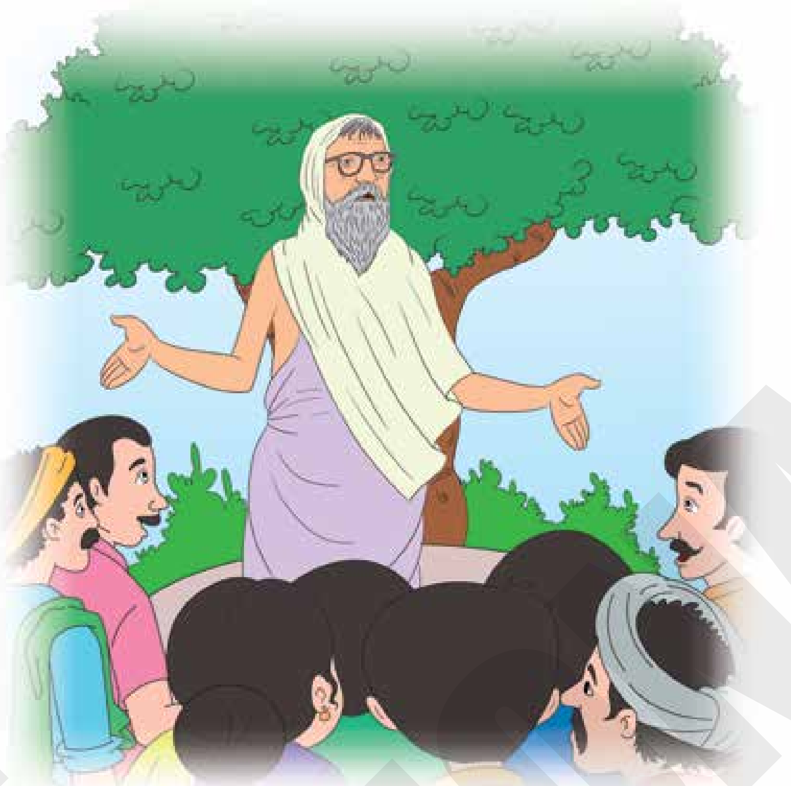

तीसरी शक्ति हृदय-परिवर्तन की शक्ति है अर्थात् प्रेम की शक्ति है। वही देश को एक सूत्र में बाँध सकती है, अनेकता में एकता स्थापित कर सकती है, दलों को मिला सकती है। विनोबा जी देश में दंडविहीन शासन-मुक्त समाज की स्थापना करना चाहते थे। उनका एक ही मार्ग था, वह था– लोकशक्ति का उदय। 15 नवंबर, 1982 को उन्होंने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया। एक ऐसी महान् विभूति उठ गई, जिसमें पुरातनता और आधुनिकता का दुर्लभ समन्वय था और जिसके जीवन का प्रत्येक क्षण मानव-हित के लिए समर्पित रहा था।

–यशपाल जैन

शब्दार्थ

विभूति	=	दिव्य, अलौकिक शक्ति	अभिभूत	=	वशीभूत, चकित
वेदांत	=	उपनिषद, शास्त्र	निरर्थकता	=	अनुपयोगी होना
वैराग्य	=	संसारिकता में मन न लगना	निष्पात	=	निपुण, प्रवीण, कुशलकारी
समन्वय	=	सामंजस्य मिलाप	अंतर्मुखी	=	गुण-अवगुण के आधार पर विचार करने वाला

उच्चारण करें

कृतित्व	ब्रहमचर्य	विद्यार्थयों	मार्गदर्शक	निस्पृही
निष्पात	साम्यवादी	पोचमपल्ली		

अध्यापन संकेत–

शिक्षक/शिक्षिका विद्यार्थियों को विभिन्न महापुरुषों के जीवन चरित्र से अवगत कराएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) महात्मा गांधी जी ने विनोबा को कब उद्‌गार विभूति से विभूषि किया?

(ख) विनोबा जी की दिनचर्या में व्यायाम का क्या महत्व है?

(ग) भारत के किस राज्य में और कब विनोबा जी का जन्म हुआ?

(घ) तेलंगाना की यात्रा के लिए विनोबा जी ने कब रुख किया?

(ङ) विनोबा जी किस मार्ग का अनुसरण करते थे?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विनोबा जी की रुचि किस प्रकार की पुस्तकों में थी?

....

(ख) आश्रम के निवासी के रूप में विनोबा भावे का आचरण कैसा था?

....

(ग) भू-दान यज्ञ का शुभारंभ विनोबा भावे जी ने कैसे किया?

....

(घ) देश की एकता व अखंडता के लिए विनोबा जी ने क्या सूत्र दिए?

....

(ङ) महात्मा गाँधी जी ने आचार्य विनोबा भावे के बारे में क्या कहा था?

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) विनोबा जी ने .... व्रत का पालन करते हुए देश-सेवा करने का व्रत लिया।

(ख) .... मराठी के पास उपनिषदों के अध्ययन करने का लाभ हुआ था।

(ग) .... और .... की भावना विनोबा का मुँह दूसरी ओर मोड़ दिया।

(घ) .... को नलगुंडा जिले के पोचमपल्ली गाँव में रुके।

(ङ) एक शक्ति हिंसा की है और दूसरी शक्ति .... की है।

4. उचित विकल्प का चयन करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) विनोबा जी का जन्म कहाँ हुआ था?

☐ महाराष्ट्र में ☐ पंजाब में ☐ गोवा में ☐ तेलंगाना में

(ख) विनोबा जी के अनुसार कौन-सी शक्ति देश को एक सूत्र में बाँध सकती है?

☐ कानून ☐ हृदय-परिवर्तन ☐ हिंसा ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) विनोबा जी का देहावसान कब हुआ?

☐ 30 जनवरी 1948 ☐ 02 अक्टूबर 1920 ☐ 15 नवंबर 182

(घ) आचार्य विनोबा भावे जी ने पैदल यात्रा की शुरूआत कहाँ से की?

☐ पोचमपल्ली ☐ शिवराम पल्ली ☐ राखीगढ़ी ☐ इनमें से कोई नहीं

(ङ) किस वर्ष विनोबा जी ने हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की?

☐ 1914 ☐ 1912 ☐ 1911 ☐ 1931

5. सही कथन पर (✓) अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) विनोबा भावे जी एक अहिंसावादी स्वभाव के व्यक्ति थे। ☐

(ख) नारायण शास्त्री मराठी एक ब्रहमचारी विद्वान थे। ☐

(ग) महात्मा गाँधी जी, विनोबा भावे के कठोर निंदक थे। ☐

(घ) विनोबा भावे जी पंजाब राज्य से संबंधित थे। ☐

(ङ) भू-दान आंदोलन की शुरूआत विनोबा भावे जी ने की। ☐

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

6. महात्मा गाँधी जी ने विनोबा भावे को महान व्यक्तित्व क्यों कहा? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए शब्दों का प्रयोग करके वाक्य निर्मित कीजिए।

(क) समन्वय – ....

(ख) वृद्धि – ....

(ग) निस्पृही – ....

(घ) निष्पात – ....

(ङ) विस्तृत – ....

8. **दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करके उनके भेदों को लिखिए।**

(क) तुम्हारे लिए कौन-सा विशेषण काम में लाऊँ, मुझे नहीं सूझता। ....

(ख) वह एक महान व्यक्तित्व के स्वामी थे। ....

(ग) मेरे लोभ को तुमने लगभग पूरा ही किया। ....

(घ) उसे मैं तुम्हारी प्रेम की भेंट के रूप में स्वीकार करता हूँ। ....

(ङ) विनोबा जी ने उनसे ये गुण लिए। ....

9. **दिए गए शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द को अलग करके लिखिए।**

	उपसर्ग	मूल शब्द
(क) आचरण –	....	....
(ख) संगति –	....	....
(ग) कुमार्ग –	....	....
(घ) संकल्प –	....	....

10. **दिए गए क्रिया शब्दों के माध्यम से भाववाचक संज्ञा बनाकर लिखिए।**

(क) मुस्कुराना – .... (ख) कमाना – ....

(ग) हँसना – .... (घ) मँगाना – ....

(ङ) मिलना – .... (च) बचना – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. **भारत की स्वतंत्रता में विनोबा भावे जी का क्या योगदान था? लिखिए।**

12. **विनोबा भावे जी की छवि एक अहिंसा वादी व्यक्तित्व की थी। इस विषय के बारे में कक्षा में चर्चा करें।**

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

13. **विनोबा भावे जी के द्वारा किए गए भू-दान आंदोलन से जुड़े कुछ तथ्य बताइए।**

14. **महात्मा गाँधी जी से जुड़े कुछ तथ्य बताइए।**

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. **"मानव सेवा ही माधव सेवा है।" आप इस वाक्य का किस प्रकार अनुसरण करना चाहेंगे?**

अध्याय 10

भिक्षुक
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कहानी का मूल तत्व

गरीबों एवं भिक्षुओं के प्रति दया-दृष्टि रखना।

वह आता,
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक।
मुट्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता।
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।

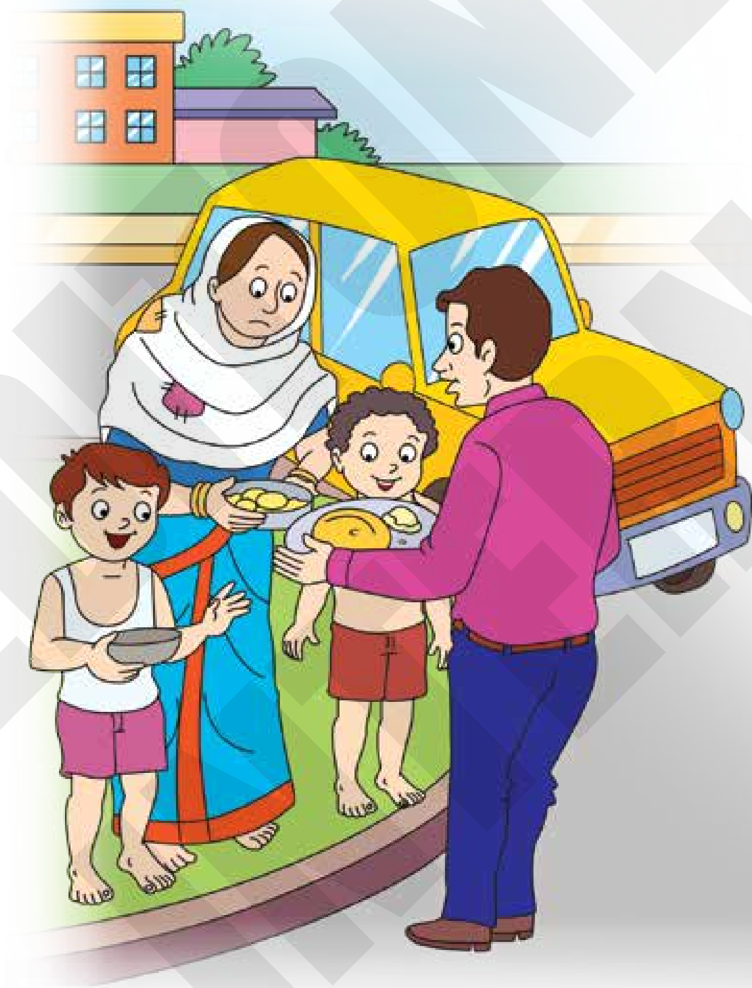

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते।
और दाहिने दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए
भूख से सूख ओंठ जब जाते।
दाता भाग्य-विधाता से क्या पाते?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।
ठहरो, अहा! मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा,
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम,
तुम्हारे दु:ख मैं अपने में खींच लूँगा।
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

शब्दार्थ

भाग्य-विधाता	= ईश्वर	दया दृष्टि	= दया भरी दृष्टि
लकुटिया	= लाठी	टेक	= सहारा
टूक	= टुकड़े	पथ	= मार्ग

उच्चारण करें

हृदय आँसुओं कलेजे अभिन्य अमृत पत्तल

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कविता के माध्यम से बच्चों को घटनाओं व हादसों में विपरीत परिसिति के वातावरण को विस्तारपूर्वक समझाएं।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भिक्षुक द्वारे-द्वारे क्या माँगता है?

(ख) कवि के अनुसार भिक्षुक की दशा कैसी है?

(ग) कवि ने किसको अपनी कविता का पात्र बनाया है?

(घ) कविता किस कवि द्वारा रचित है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) कवि ने भिक्षुक को अपनी कविता का पात्र क्यों बनाया?

....

(ख) बच्चे अपनी भूख मिटाने के लिए क्या-क्या प्रयत्न करते हैं?

....

(ग) भिक्षुक के बच्चों की दशा भूख के कारण कैसी हो गई है?

....

(घ) प्रस्तुत कविता में 'दो टूक कलेजे से करता' से कवि का क्या अभिप्राय है?

....

3. नीचे दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

चाट रहे ....

.... अड़े हुए।

ठहरो, अहा! ....

.... सकोगे तुम,

तुम्हारे दुख ....

दो टूक ....

.... पथ पर आता।

....

....

....

....

....

....

....

....

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भिक्षुक क्या फैलाता है?

☐ पुरानी डोली ☐ फटा बस्ता ☐ फटी चादर ☐ कोई नहीं

(ख) सड़क पर कौन अड़े खड़े है?

☐ भिक्षुक ☐ कुत्ते ☐ लोग ☐ सभी

(ग) भिक्षुक क्या पीकर रह जाते हैं?

☐ पानी ☐ खून ☐ आँसू ☐ शरबत

5. सही मिलान कीजिए।

(क) मुट्ठी भर	कलेजा
(ख) फटी पुरानी	ओंठ
(ग) भूख से सूख	दाने
(घ) दो टूक	झोली

6. कविता के अधूरे गद्य को पूरा कीजिए।

(क) साथ दो ....

....

....

....

....

....

....

.... पर आता।

(ख) पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक

....

....

....

....

....

....

.... पर आता।

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

7. एक सफल तथा अच्छा मनुष्य बनने के लिए हमारे व्यक्तित्व में किन गुणों का होना आवश्यक है? लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी के पाँच काव्यों के नाम सोचकर लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

8. दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

(क) भिखारी – .... (ख) मक्खी – ....

(ग) ओंठ – .... (घ) नाम – ....

9. दिए गए शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए।

(क) पततल – .... (ख) हर्दय – ....

(ग) मुट्ठी – .... (घ) आसू – ....

EDITONE INTERNATIONAL

10. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) दया दृष्टि – ....

(ख) भाग्य विधाता – ....

(ग) हृदय – ....

(घ) लकुटिया – ....

11. दिए गए शब्दों में अनुस्वार के स्थान पर पंचम वर्ण लगाकर लिखिए।

(क) पंख – ....

(ख) तुरंत – ....

(ग) कुंठा – ....

(घ) कंधा – ....

12. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए।

(क) समाज – ....

(ख) सेवक – ....

(ग) अपना – ....

(घ) सुंदर – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

13. भिक्षुक की दयनीय अवस्था को अपने शब्दों में अभिवयक्त कीजिए।

14. भिक्षुक के अधिकारों का हनन किस-किस तरह से किया जाता है? कक्षा में विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए लिखिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. व्यक्ति की पहचान पद, वर्ण, जाति आधार पर नहीं अपितु व्यक्तित्व आधार पर होती है। आप किन के प्रति अपनी दया-दृष्टि दिखाना चाहेंगे?

अध्याय 11

मास्टर जी
(एकांकी)

अध्ययन से पूर्व

एकांकी का मूल तत्व

प्रेम के माध्यम से किसी भी समस्या का समाधान किया जा सकता है।

इस एकांकी के रचनाकार गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर हैं। इसमें उन्होंने बड़े ही रोचक तरीके से एक बालक के मन और उसमें छुपी बातों का चित्रण किया है। छात्र का नाम है, मधुसूदन। उसे मथुरानंद नाम के मास्टरजी ट्यूशन पढ़ा रहे हैं। कमरे में मधुसूदन के पिता अजय बाबू का प्रवेश।

अजय बाबू : कहिए, मथुरानंद बाबू! मधुसूदन की पढ़ाई कैसी चल रही है?

मथुरानंद : मधुसूदन शरारती तो बहुत है पर पढ़ाई-लिखाई में काफी तेज़ है। कोई बात बार-बार बतानी नहीं पड़ती। बस एक बार पढ़ा दो, वह भूलता नहीं।

अजय बाबू : अच्छा! मैं भी ज़रा देखूँ कि वह कितना होशियार है?

मथुरानंद : देखिए। खुशी से देखिए।

मधुसूदन : (मन ही मन में) कल मास्टरजी ने वह धुनाई की थी कि हड्डियाँ आज भी दुःख रही हैं। आज लेता हूँ बदला। इनकी भी छुट्टी न करवा दी तो मेरा भी नाम नहीं।

अजय बाबू : क्यों मधु, याद है सब?

मधुसूदन : जो कुछ मास्टरजी ने पढ़ाया, सब याद है।

अजय बाबू : अच्छा तो बता कि उद्‌भिज किसे कहते हैं?

मधुसूदन : जो उगे, यानी मिट्टी को फोड़कर जो उसमें से ऊपर निकले।

अजय बाबू : कोई उदाहरण इसका?

मधुसूदन : केंचुआ।

मथुरानंद : (गुस्से में आँखें तरेरकर) क्यों रे? क्या कहा?

अजय बाबू : जरा ठहरिए, मास्टरजी, अभी आप कुछ न बोलिए। (मधुसूदन से) तुमने कविता पढ़ी है। यह बताओ कि वन में क्या खिलता है?

मधुसूदन : काँटा।

(मथुरानंद बेंत उठाते हैं।)

मधुसूदन : क्यों गुरुजी, मारते क्यों हैं ? मैं कोई झूठ कहता हूँ?

अजय बाबू : अच्छा, सिराजुद्दौला को किसने मिटाया? इतिहास क्या कहता है?

मधुसूदन : कीड़ों ने।

(मथुरानंद दो-तीन बेंत मारते हैं।)

मधुसूदन : जी, खामखा्वाह मार खानी पड़ती है। सिर्फ सिराजुद्दौला को ही क्यों सारे इतिहास को ही कीड़े चाट गए हैं। यह देखिए।

(पुस्तक दिखाता है। मथुरानंद मास्टर सिर खुजाते हैं)

अजय बाबू : व्याकरण याद है?

मधुसूदन : जी, है।

अजय बाबू : कर्त्ता क्या है ? ज़रा उदाहरण के साथ समझाओ।

मधुसूदन : जी, कर्त्ता तो उस टीले के जयलाल मुंशी हैं।

अजय बाबू : वो कैसे ?

मधुसूदन : वह हमेशा क्रिया-कर्म को ही लिए रहते हैं।

मथुरानंद : (गुस्से में) तुम्हारा सिर। (पीठ पर बेंत जमाते हैं।)

मधुसूदन : जी सिर नहीं, वह तो पीठ है।

मथुरानंद : षष्ठी-तत्पुरुष किसे कहते हैं?

मधुसूदन : पता नहीं।

(मथुरानंद बेंत दिखाकर धमकाते हैं।) इसको तो अच्छी तरह जानता हूँ तो यह है षष्ठी तत्पुरुष।

(अजय बाबू का हँसना और मथुरानंद का कुढ़कर रह जाना।)

अजय बाबू : अंकगणित सीखा है?

मधुसूदन : जी हाँ।

अजय बाबू : अच्छा, अगर तुम्हें साढ़े छः पेड़े देकर यह कहा जाए कि पाँच मिनट तक पेड़े खाने के बाद जो पेड़े बचें, उन्हें तुम अपने छोटे भाई को दे दो। एक पेड़ा खाने में दो मिनट लगते हैं। बताओ, तुम अपने भाई को कितने पेड़े दोगे?

मधुसूदन : एक भी नहीं।

मथुरानंद : वह क्यों?

मधुसूदन : सब खा डालूँगा। एक भी नहीं दूँगा।

अजय बाबू : बड़ का एक पेड़ रोज एक सेंटीमीटर बढ़ता है। इस मई की पहली तारीख़ को वह एक मीटर का था, तो अगले साल की पहली तारीख़ को वह कितना ऊँचा होगा?

मधुसूदन : पेड़ टेढ़ा हो जाए, तब तो कहना मुश्किल है। हाँ, अगर सीधा ऊपर की ओर बढ़ता रहा तो नापकर देखने पर उसकी ऊँचाई का पक्का पता लग सकेगा और अगर इसी बीच सूख गया, तब तो कोई बात ही नहीं।

मथुरानंद : मार खाए बिना तुम्हारी अक़्ल के दरवाजे नहीं खुलते। कमबख़्त, मार-मारकर कमर टेढ़ी कर दूँगा।

अजय बाबू : मथुरानंद बाबू, यह आपका वहम है। मारपीट से शायद ही कोई काम बन पाता है। कहा है कि गधे को पीटकर घोड़ा नहीं बनाया जा सकता, पर अक्सर घोड़ा पिटते-पिटते गधा हो जाता है। आप अपनी बेंत समेत यहाँ से तशरीफ ले जाएँ, कुछ दिन मधुसूदन की पीठ सुस्ता ले तो मैं खुद ही इसे पढ़ाऊँगा।

मधुसूदन : (मन ही मन) आह! जान बची।

मथुरानंद : जान बची, साहब। इस लड़के को पढ़ाना तो मज़दूरों जैसा काम है, सोलह आने मैनुअल लेबर। तीस दिन एक लड़के को पीटकर सिर्फ पाँच रुपए मिलते हैं, उतनी ही मेहनत से कहीं छत-वत पीटूँ तो कम से कम दस रुपए तो मिल ही जाएँगे।

शब्दार्थ

उद्‌भिज	= एक प्रकार का पौधा या लताएँ	धुनाई	= पिटाई
बेंत	= एक मज़बूत तने वाली लकड़ी	मीटर	= मापने की एक इकाई
मैनुअल	= हस्त संबंधी	ख्वामख़्वाह	= बिना वज़ह के

उच्चारण करें

रवींद्रनाथ	ट्यूशन	हड्‌डियाँ	सिराजुद्‌दौला	ख्वामख़्वाह
कमबख़्त	व्याकरण	मुश्किल		

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को पाठ से मिलने वाली सीख का अपने जीवन में उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करें एवं इस प्रकार के अन्य गुणों को अपनाने हेतु उचित मार्गदर्शन प्रदान करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मधुसुदन के द्वारा केंचुआ का उदाहरण किस शब्द के लिए दिया गया है?

(ख) प्रस्तुत पाठ में इतिहास के किस पात्र की चर्चा की गई है?

(ग) एकांकी के अंतर्गत व्याकरण में शामिल किन-किन तत्वों का उल्लेख किया गया है?

(घ) प्रस्तुत एकांकी 'मास्टर जी' किसके द्वारा रचित है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) मधुसुदन के द्वारा प्रश्नों का गलत उत्तर देने के पीछे का क्या कारण था?

....

(ख) मास्टर जी ने अजय बाबू को तशरीफ़ ले जाने को क्या कहा?

....

(ग) एकांकी के अंत में मथुरानंद जी ने क्या विचार किया?

....

(घ) अजय बाबू के द्वारा क्रोधित होने पर मथुरानंद ने क्या कहा?

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) इस .... के रचनाकार गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर है।

(ख) मधुसूदन को .... नाम के मास्टर जी ट्यूशन पढ़ा रहे हैं।

(ग) .... शरारती तो बहुत है पर पढ़ाई लिखाई में काफी तेज़ है।

(घ) कल मास्टर जी ने वह धुनाई की थी कि .... आज भी दु:ख रही है।

(ङ) मास्टर जी यह आपका वहम है .... से शायद ही कोई काम बन पाता है।

4. दिए गए संकेतों के अनुसार उत्तर बताइए।

किसने कहा, किससे कहा?

(क) क्यों मधु, याद है सब?

....

(ख) अंकगणित सीखा है?

....

(ग) सब खा डालूँगा। एक भी नहीं दूँगा।

....

(घ) मार खाए बिना तुम्हारी अक्ल के दरवाज़े नहीं खुलते।

....

5. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन करके सही (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) प्रस्तुत एकांकी में मास्टर जी की भूमिका किसने निभाई है?

☐ मथुरानंद ☐ मधुसूनद ☐ अजय बाबू ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) अच्छा! तो मैं भी ज़रा देखूँ कि वह है-

☐ कितना मूर्ख ☐ कितना होशियार ☐ कितना बेवकूफ ☐ कितना पागल

(ग) एकांकी में अजय बाबू की भूमिका में कौन है?

☐ मधुसूदन के पिता जी ☐ मधुसूदन के शिक्षक

☐ मधुसूदन के चाचा जी ☐ मधुसूदन के दादा जी

(घ) टैगोर द्वारा रचित एकांकी में प्रमुख पात्र की भूमिका में कौन नज़र आता है?

☐ मधुसूदन ☐ मथुरानंद ☐ अजय बाबू ☐ इनमें से कोई नहीं

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

6. मधुसूदन 'नटखटी' स्वभाव के साथ शिक्षक के समक्ष उपस्थित हुआ। उसकी ज़गह यदि आप होते तो क्या करते? सोच-विचार करके बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(क) होशियार – ....

(ख) मिट्टी – ....

(ग) अंकगणित – ....

(घ) ख्वामख़्वाह – ....

(ङ) टोला – ....

8. दिए गए तत्सम शब्दों के द्वारा तद्भव शब्द बनाइए।

(क)	तृण	–	(ख)	घट	– ....
(ग)	प्रस्तर	–	(घ)	आश्चर्य	– ....
(ङ)	पत्र	–	(च)	शत	– ....
(छ)	मूढ़	–	(ज)	अक्ष	– ....
(झ)	शून्य	–	(ञ)	क्षेत्र	– ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए
Creative Skills

9. किसी दूसरे का उपहास उड़ाने से उसकी आंतरिक भावना को ठेस पहुँचती हे। क्या आप इससे सहमत है? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए
Brain Storming Activity

10. निम्नलिखित रचनाओं में से रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित रचनाओं को पहचान करके नीचे लिखिए।

वनवाणी	चोखेरबाली	पुनश्च	अनाथ	पाषाणी
महुआ	काबुलीवाला	गतिमाल्य	कणिका	क्षणिका

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न
Life Skills & Value Based Question

11. प्रेम के द्वारा हम किसी को भी अपना बना सकते हैं। आप इसका अनुसरण किस पकार करना चाहेंगे?

अध्याय 12

हिरोशिमा की आग
(सत्यकथा-कहानी)

अध्ययन से पूर्व

- बच्चों से उपरोक्त चित्रण के आधार पर टिप्पणी करवाएँ कि आपदाएँ कितनी तरह की होती हैं एवं सबसे अधिक प्रभावशाली कौन-सी आपदा होती है जिसका परिणाम आने वाली कई पीढ़ियाँ झेलती है।

कहानी का मूल तत्व

बच्चों में संवेदनशीलता व मानवता का विकास करना।

उस दिन जापान के हिरोशिमा शहर का आसमान नीला और साफ़ था। सूरज चमक रहा था। लोग बसों और ट्राम-कारों में बैठकर काम पर जा रहे थे। हिरोशिमा की सातों नदियाँ धीरे-धीरे बह रही थीं। गर्मी का मौसम था। सूरज की किरणें पानी की सतह पर थिरक रही थीं।

जापान के कई बड़े शहरों–टोक्यो, ओसाका और नगायो पर हवाई हमले हो चुके थे। हिरोशिमा अभी इन हमलों से बचा था। हिरोशिमा के लोग इस बात से खुश थे। वैसे उन्होंने हवाई हमलों से बचने के लिए जो कुछ संभव था, वे तैयारियाँ की थीं। आग न फैले, इसलिए पुरानी इमारतों को गिरा दिया गया था। सड़कों को भी चौड़ा कर दिया गया था। ज़गह-ज़गह पर आग बुझाने के लिए पानी का प्रबंध किया गया था। बमबारी की स्थिति में, लोगों के छिपने के लिए सुरक्षित स्थान बनाए गए थे। हरेक नागरिक अपने साथ हमेशा दवाइयों की एक छोटी थैली रखता था। घर से बाहर निकलते समय लोग बमबारी से बचने के लिए खास प्रकार के कवच और हेलमेट पहनते थे।

माई सात साल की थी और वह हिरोशिमा में अपने माता-पिता के साथ रहती थी। कल ही उसका चचेरा भाई गाँव से आया था। वह अपने साथ खेत की कुछ ताज़ी शकरकंदियाँ लाया था। माई अपने माता-पिता के साथ सुबह-सुबह शकरकंदियों का नाश्ता कर रही थी। माई को बड़ी भूख लग रही थी और शकरकंदियाँ उसे बहुत पसंद थीं।

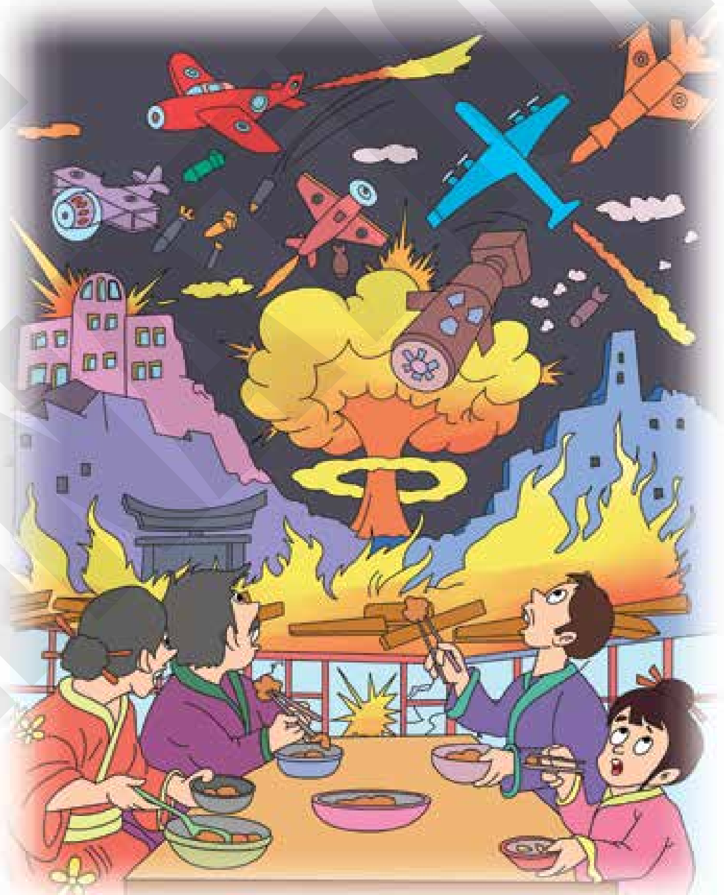

तभी अचानक एक भयंकर हादसा हुआ। चारों ओर आँखों को चौंधा देने वाली बिजली कड़की। बिजली पहले नारंगी और फिर सफेद रंग की हो गई। ऐसा लगा, जैसे हज़ारों बादलों से एक साथ बिजली गिरी हो। इस भयानक धक्के के प्रभाव से ऊँची-ऊँची इमारतें काँपने लगीं और ढहने लगीं।

इस प्रलय से कुछ क्षण पहले ही अमेरिकी वायुसेना के विमान इनोलागे ने हिरोशिमा के ऊपर उड़ान भरी थी। उसने ही इस विस्फोटक बम को गिराया था। यह कोई साधारण बम नहीं था। यह एटम बम था। बम का नाम, बी-29 विमान के चालकों ने, 'लिटिल बॉय' रखा था। 'लिटिल बॉय' हिरोशिमा शहर पर 6 अगस्त, 1945 को, सुबह आठ बजकर पंद्रह मिनट पर गिरा।

बम के विस्फोटक के धक्के से माई तुरंत बेहोश होकर गिर गई। कुछ घंटों बाद जब उसे होश आया, तब चारों तरफ एकदम सन्नाटा था और आसमान का रंग काला स्याह हो गया था। शुरू में तो वह हिल भी नहीं पाई। वह सब ओर चीज़ों को जलता देखकर डर गई। फिर अंधेरे में, कुछ दूरी पर, उसे एक लाल रोशनी दिखाई पड़ी। कुछ देर बाद उसे माँ की आवाज़ सुनाई पड़ी। माँ उसे बुला रही थी।

माई ने बड़ी मुश्किल से अपने ऊपर पड़े हुए लकड़ी के तख़्ते को हटाया। तब तक माँ उसके पास दौड़ी हुई आई और उसे अपने गले से लगा लिया। "हमें जल्दी करनी चाहिए," माँ ने कहा। "देखो तुम्हारे पिता आग में कितनी बुरी तरह से फँसे हैं।"

कुछ देर तक तो माई और माँ आग का भयानक तांडव देखती रहीं और प्रार्थना करती रहीं। फिर माँ तेज़ी से लपटों में घुसी और पिता को सुरक्षित बाहर लाई। अच्छी तरह से पिता की हालत का मुआयना करके माँ ने कहा, "बहुत बुरी तरह से जल गए हैं।" फिर उन्होंने अपने किमोनो के कमरबंद को खोला और उससे अपने पति के शरीर पर पट्टी बाँधी। उसके बाद उन्होंने पति को पीठ पर उठाया और माई का हाथ पकड़कर दौड़ने लगीं। "नदी की तरफ चलो। हमें जल्दी-से-जल्दी नदी पर पहुँचना है।" माँ ने आदेश दिया। तीनों तेज़ी से नदी के अंदर कूद पड़े। कूदते समय माँ को माई का हाथ छोड़ना पड़ा।

"माई-चान! मुझे कस कर पकड़े रहो," माँ चिल्लाई।

आग से बचने के लिए भागने वालों की लंबी भीड़ थी। माई ने देखा कि बहुत से बच्चों के पूरे कपड़े जल गए थे और उनके होंठ और आँखों की पलकें फूल गई थीं। वे इधर-उधर भटकते और चिल्लाते हुए भूतों जैसे लग रहे थे। कुछ लोग इतने कमज़ोर हो गए थे कि वे सीधे, मुँह के बल, ज़मीन पर गिर पड़े। बाकी लोग उनके ऊपर गिर गए। हर तरफ लोगों के ढेर थे।

माई और उसके माता-पिता ने पलायन जारी रखा। जल्दी ही उन्होंने एक दूसरी नदी को पार किया। नदी के किनारे पर पहुँचते ही माँ ने पति के शरीर को तट पर रखा और वह खुद उसके पास लुढ़क गई। माई को अपने पैरों के पास कोई चीज़ चलती हुई महसूस हुई। टप .... टप .... वह एक चिड़िया थी– एक नन्ही-सी अबाबील। उसके पंख जल गए थे और वह उड़ नहीं पा रही थी। लड़खड़ाते हुए टप .... टप .... करके चल रही थी।

एक आदमी का शरीर धीरे-धीरे नदी पर तैरता हुआ जा रहा था। उसके पीछे एक बिल्ली भी थी। जब माई ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे एक कम उम्र की औरत दिखाई दी। वह एक बच्चे को पकड़े थी और रो रही थी। "हम किसी तरह यहाँ तक तो बच कर आए और फिर मैंने इसे दूध पिलाना बंद कर दिया" उसने कहा। "पर अब वह दूध नहीं पी रहा है। वह मर गया है।" वह औरत अपने बच्चे को कलेजे में चिपटाए

हुए नदी में घुसी। धीरे–धीरे करके वह गहरे और गहरे पानी में गई और अंत में माई की आँखों से ओझल हो गई।

इस बीच में आसमान काला स्याह हो गया और बादल गरजने लगे। फिर बारिश होने लगी। वैसे तो गर्मी का मौसम था, परंतु फिर भी हवा काफी ठंडी थी। ऊपर से गिर रही बारिश चिपचिपी थी और उसका रंग भी काला था।

फिर आसमान में एक इंद्रधनुष निकला। उससे आसमान की कालिख कुछ कम हुई। इस मंद रोशनी में, मरे हुए और ज़ख़्मी हुए लोग साफ दिखाई देने लगे।

9 अगस्त, 1945 के दिन, जिस समय माई और माँ, अपने ध्वस्त शहर को देख रही थीं, उसी वक़्त जापान के एक अन्य शहर, नागासाकी पर भी एटम बम गिराया गया। वहाँ भी, हिरोशिमा की तरह ही, हज़ारों की संख्या में लोग मरे और जो बचे, उनका सारा घर–बार तबाह हो गया। मरने वालों में केवल जापानी ही नहीं थे। इनमें अन्य देशों– कोरिया, चीन, रूस, इंडोनेशिया और अमेरिका के लोग भी शामिल थे।

एटम बम जैसा प्रलयंकारी विस्फोटक दुनिया में पहले कभी भी इस्तेमाल नहीं किया गया था। इसकी तबाही की क्षमता एक हज़ार साधारण बमों के, एक–साथ फटने से अधिक थी। इससे निकलने वाली विषैली रेडियोधर्मी किरणें सालों तक लोगों की बीमारी और मौत का कारण बनेंगी।

हरेक साल, 6 अगस्त वाले दिन, हिरोशिमा के लोग एटम बम से मरने वालों के नामों को कागज़ की लालटेनों पर लिखते हैं। इन लालटेनों को जलाकर हिरोशिमा में बहने वाली सात नदियों में छोड़ा जाता है। धीरे–धीरे ये नदियाँ अपने साथ, मरने वालों की याद में बनी लालटेनें लेकर समुद्र में विलीन हो जाती हैं।

– तोशी मारूकी

शब्दार्थ

ध्वस्त	= नष्ट	विलीन	= खो जाना, लुप्त होना
मुआयना	= अच्छी तरह से देखना	प्रलयकारी	= विनाशकरी
तांडव	= भगवान शिव का रौद्र नृत्य	पलायन	= भाग जाना

उच्चारण करें

सुरक्षित   भयानक   रेडियोधर्मी   सन्नाटा   विस्फोटक

अध्यापन संकेत–

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को द्वितीय विश्व युद्ध होने के कारण समझाएँ। जिसके परिणामस्वरूप जापान का हिरोशिमा और नागासाकी इतिहास बन कर रह गया।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) हिरोशिमा नागासाकी से पहले जापान के किन शहरों पर हवाई हमले हुए?

(ख) हिरोशिमा पर गिराए जाने वाले बम का क्या नाम था?

(ग) 'लिटिल बाय' नामक परमाणु बम हिरोशिमा पर किस समय गिराया गया?

(घ) नागासाकी पर किस दिन एटम बम गिराया गया था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) बमबारी से बचने के लिए हिरोशिमा के लोग क्या करते थे?

(ख) हवाई हमलों से बचने के लिए जापान ने पहले से क्या-क्या तैयाररियाँ कर ली थी?

(ग) प्रत्येक वर्ष 6 अगस्त के दिन हिरोशिमा के लोग क्या करते है?

(घ) बमबारी से पहले हिरोशिमा शहर का माहौल कैसा था?

3. सही कथन पर (✓) का अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) हिरोशिमा में आठ नदियाँ बहती है।

(ख) नागासाकी और हिरोशिमा पर परमाणु हमला एक ही दिन व समय हुआ।

(ग) हिरोशिमा में रहने वाली सात वर्षीय लड़की का नाम 'माई-पान' था।

(घ) परमाणु हमले में अन्य देशों के लोगों की भी मृत्यु हुई।

EDUTONE INTERNATIONAL

4. **दिए गए रिक्त स्थानों को भरिए।**

पलायन   शकरकंदियाँ   प्रलयकारी   इन्द्रधनुष

(क) फिर आसमान में एक .... निकला।

(ख) माई को .... बहुत पसंद थी।

(ग) एटम बम एक .... विस्फोटक है, जिसे जापान पर पहली बार छोड़ा गया।

(घ) माई के माता-पिता ने .... ज़ारी रखा।

5. **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।**

(क) माई का चचेरा भाई गाँव से क्या लाया था?

☐ सब्जी   ☐ फल   ☐ शकरकंदियाँ   ☐ फूल

(ख) आग में कौन फँसा था?

☐ स्वयं माई   ☐ माई की माँ   ☐ माई के पिता   ☐ माई का चचेरा भाई

(ग) नागासाकी पर एटम बम किस दिन गिराया गया?

☐ 9 अगस्त 1945   ☐ 6 अगस्त 1965   ☐ 15 अगस्त 1945   ☐ 10 अगस्त 1945

6. **सही मिलान कीजिए।**

(क) एटम बम	किरणें
(ख) आसमान	काली और चिपचिपी
(ग) बारिश	लिटिल बाय
(घ) रेडियोधर्मी	काला स्याह

7. **दिए गए शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।**

(क) प्रलयकारी – ....

(ख) सुरक्षित – ....

(ग) पलायन – ....

(घ) मानवता – ....

(ङ) विलीन – ....

(च) कालिख – ....

(छ) इंद्रधनुष – ....

(ज) सन्नाटा – ....

(झ) विस्फोटक – ....

(ञ) इस्तेमाल – ....

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

8. एटम बम का हिरोशिमा-नागासाकी पर क्या प्रभाव पड़ा? क्या आज भी एटम बम का प्रभाव वहाँ देखने को मिलता होगा? सोचकर लिखिए।

9. अमेरिका ने जापान पर एटम बम क्यों गिराया होगा? अमेरिका और जापान के किन अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों ने प्रलय का तांडव किया? कक्षा में चर्चा करते हुए कारणों सहित उत्तर लिखिए।

10. वर्तमान युग में अभी भी कुछ राष्ट्र परमाणु हमले की तैयारी में लगे हुए हैं। यदि कलांतर में दो राष्ट्रों के बीच परमाणु हमला हुआ तो सोचकर बताइए कि उसका कितना और कैसा प्रभाव मानवता का विनाश करेगा?

11. आपदाओं से निपटने के लिए जापान ने अपने नागरिकों को किस प्रकार का प्रशिक्षण दिया होगा ताकि जान-माल की क्षति न होने पाए? कक्षा में संवाद स्थापित कर लिखिए।

EDITIONE INTERNATIONAL

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

12. दिए गए शब्दों में से उपसर्ग अलग कर सार्थक शब्द पुनः लिखिए।

शब्द	उपसर्ग	सार्थक शब्द
(क) सुरक्षित –	....	....
(ख) बमबारी –	....	....
(ग) प्रभाव –	....	....
(घ) एकदम –	....	....

13. उचित स्थान पर अनुस्वार-अनुनासिक लगाकर वर्तनी शुद्ध कीजिए।

(क) शकरकदिया – .... (ख) प्रबध – ....

(ग) तैयारिया – .... (घ) गाव – ....

(ङ) मुह – .... (च) पौधा – ....

(छ) इडोनेशिया – .... (ज) इन्द्रधनुष – ....

14. दिए गए शब्दों में गलत 'र' चिह्न लगे हुए हैं, उन्हें ठीक कर पुनः लिखिए।

(क) ग्रमी – ....

(ख) पृकार – ....

(ग) पर्रलय – ....

(घ) पर्राथना – ....

15. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए।

(क) तांडव – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ख) चिल्लाते – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ग) रेडियोधर्मी – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(घ) चिपचिपी – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

16. परमाणु हमले से जापान ने क्या सीख ली, जिसके परिणामस्वरूप वह विकसित और समृद्ध राष्ट्र के तौर पर उभर कर सामने आया? बताइए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

17. अमेरिका, जापान से भले जीत गया परन्तु मानवता से हार गया। कैसे? लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

18. अपना विकास और देश का विनाश मानवता की पहचान नहीं होती। अतः हमें सबके हित और विकास की विचारधारा को अपनाना चाहिए। आप अपने राष्ट्र के प्रति किस प्रकार की विचारधारा अपनाऐंगे?

EDITONE INTERNATIONAL

अध्याय 13

'बाघा जतिन'
(जीवनी)

अध्ययन से पूर्व

बीना दास

कल्पना दत्ता

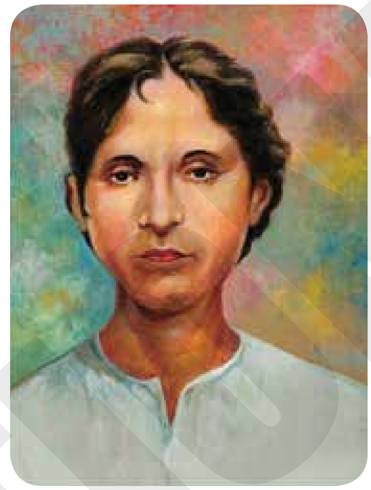

खुदी राम बोस

रासबिहारी बोस

सुहासिनी गांगुली

सूर्य सेन

- उपरोक्त चित्रों को पहचानकर इनके बारे में जानकारी एकत्रित करें।
- इन सभी के बारे में पता कीजिए कि स्वंत्रता के आंदोलन में इनका क्या योगदान था?

कविता का मूल तत्व

राष्ट्र सेवा ही सच्ची सेवा है।

'यतींद्रनाथ मुखर्जी उन प्रमुख क्रातिकारियों में से एक थे। जिन्हें बाघा जतिन के नाम से जाना जाता था। यह नाम उन्हें एक खुँखार बाघ को मारने से मिला। वह बचपन से ही बडे साहसी और निर्भीक स्वभाव के थे। जिसका पता इसी बात से चलता है कि मात्र ग्यारह वर्ष की छोटी सी आयु में ही उन्होंने एक बिगडैल घोड़े को आसानी से वश में कर लिया था।

यतींद्रनाथ 'बाघा जतिन' के नाम से कैसे प्रसिद्ध हुए, इसके पीछे एक बड़ी रोमांचक घटना है। 1906 ई. की बात है। बंगाल के नदिया जिले के कोया गाँव के आसपास एक बाघ ने बड़ा आतंक मचा रखा था।

जब मौका मिलता, वह पशुओं को उठा ले जाता। कभी-कभी गाँव वालों पर भी आक्रमण कर देता था। इससे चारों ओर भय का वातावरण व्याप्त था।

युवा यतींद्र को लोगों की इस परेशानी का पता चला। उसने आव देखा न ताव, एक लंबा चाकू हाथ में लेकर बाघ से भिड़ने के लिए निकल पड़ा। उसे गाँव के निकट ही अकस्मात् एक झाड़ी में बाघ दिखाई दिया। यतींद्र को देखते ही बाघ गुर्राया और उसकी ओर झपटा। बाघ की गुर्राहट और यतींद्र की चीख सुनकर गाँव के लोग भी उस ओर दौड़ पड़े। बाघ और यतींद्र की गुत्थम-गुत्था देखकर वे स्तब्ध रह गए लेकिन उन्हें उस समय और भी आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने देखा कि घायल यतींद्र तो उठ खड़ा हुआ और बाघ उसके सामने ज़मीन पर पड़ा हुआ तड़प रहा है और अपनी अंतिम साँसें गिन रहा है। आमने-सामने की इस भिड़ंत में बाघ को मार डालने की इस असाधारण घटना के बाद से यतींद्रनाथ 'बाघा जतिन' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

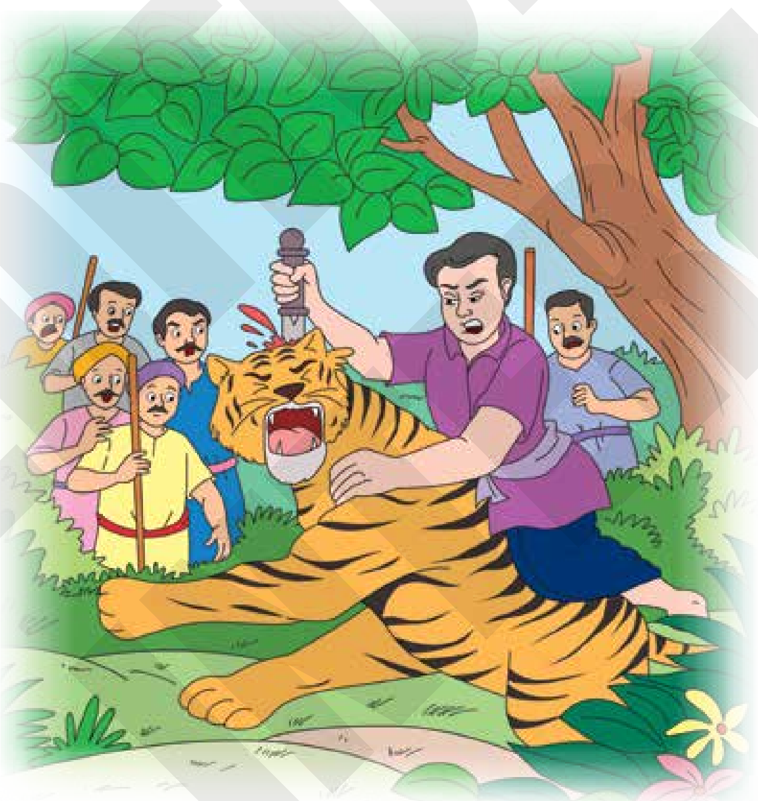

जीवन के शुरूआती दिनों से ही यतींद्रनाथ जी अंग्रजी सत्ता के प्रति आकोशित भावना से परिपूर्ण थे। वे अंग्रेज़ों से बदला लेने का कोई अवसर नही चूकते थे। जब भी वह किसी भारतीय पर अंग्रेज़ को अत्याचार करते हुए देखते तो वह मानसिक रूप से उत्तेजित होकर बदला लेने के लिए उतारू हो जाते थे।

अपनी राजसत्ता के मद में अंग्रेज़ भारतीयों को हीनता की दृष्टि से देखते थे और उन्हें अपमानित

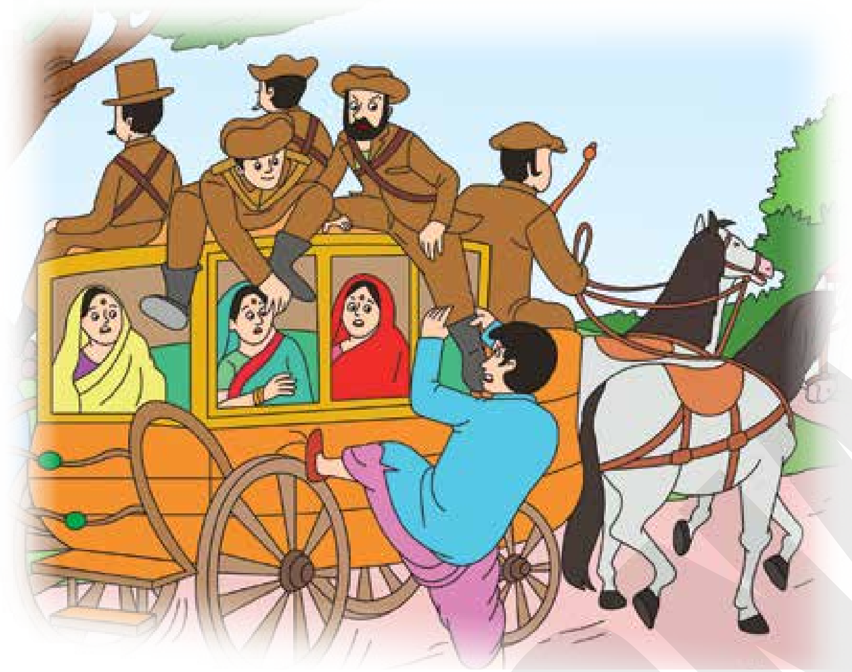

करने पर तुले रहते थे। एक दिन की बात है, वेल्स के राजकुमार की सवारी कोलकाता की एक सड़क से निकल रही थी। सड़क के दोनों ओर सैकड़ों स्त्री-पुरुषों की भीड़ खड़ी थी। वहीं एक बग्घी में कुछ भारतीय महिलाएँ भी बैठी थीं। जतिन ने देखा कि कुछ अंग्रेज़ उस बग्घी की छत पर जा बैठे और नीचे पैर लटकाकर महिलाओं के साथ अभद्रता करने लगे। यह दृश्य देखकर जतिन अपने को रोक नहीं सके। वे झपटकर छत पर बैठे अंग्रेज़ों पर टूट पड़े और लोगों ने देखा कि वे अंग्रेज़ मुँह के बल धरती पर गिरे पड़े हैं। बाद में वे उठकर भाग खड़े हुए। एक भारतीय के हाथ मार खाने के कारण वे इतने लज्जित थे कि इस घटना की उन्होंने किसी से चर्चा तक नहीं की।

ये कुछ घटनाएँ जतिन के साहसपूर्ण जीवन की उदाहरण मात्र हैं। उनका तो पूरा जीवन ही ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। इस कारण ही उस समय के क्रांतिकारियों के नेता महर्षि अरविंद ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उनका कहना था कि जतिन का स्थान मानवता की सर्वोच्च श्रेणी में बना रहेगा।

राष्ट्रभक्त क्रांतिकारी यतींद्रनाथ मुखर्जी का जन्म 8 दिसंबर, 1879 ई. को बंगाल में नदिया जिले के कोया नामक गाँव में अपनी ननिहाल में हुआ था। वे पाँच वर्ष के थे, तभी पिता उमेशचंद्र का साया उनके सिर पर से उठ गया। माँ शरत शशि ने बड़ी सावधानी से बालक का पालन-पोषण किया और उसके चरित्र-निर्माण और नैतिक गुणों के विकास पर विशेष ध्यान दिया। मामा ने जतिन की शिक्षा की व्यवस्था की। एम.ए. की परीक्षा पास करने के बाद वे बंगाल सरकार के वित्त सचिव ह्वीलर के अधीन क्लर्क के पद पर नियुक्त हुए।

आजीविका के लिए विदेशी सरकार की नौकरी स्वीकार करने पर भी जतिन के अंदर देशभक्ति की भावना भरी हुई थी। बंगाल में जो क्रांतिकारी आंदोलन आरंभ हुआ था, उसका पूरा प्रभाव उन पर पड़ रहा था। बंकिमचंद्र का प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंद मठ' से जतिन बहुत प्रभावित थे।

समाज सेवा के कामों में भी जतिन की बड़ी रुचि थी। जहाँ भी किसी को संकट में देखते, सहायता के लिए पहुँच जाते थे। उनकी इस सेवा-भावना से भगिनी निवेदिता बड़ी प्रभावित हुईं और उन्होंने जतिन की भेंट स्वामी विवेकानंद से कराई। जतिन के ऊपर संन्यासी भोलानाथ गिरि का भी प्रभाव पड़ा। जतिन ने उनसे दीक्षा ले ली थी।

सन् 1905 के 'बंगभंग' विरोधी आंदोलन से प्रेरित होकर बंगाल में अनेक ग्रुप क्रांतिकारी संगठन बने। उनका उद्देश्य विदेशी सरकार के विरुद्ध अपनी समानांतर सरकार स्थापित करना था। इस आंदोलन में अरविंद घोष की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने अपने विचारों के प्रचार के लिए 'युगांतर' नाम की पत्रिका प्रकाशित की और इसी नाम का एक बड़ा क्रांतिकारी संगठन बनाया। इन सब कार्यों में जतिन अरविंद के प्रमुख सहयोगी

थे। उनके उत्साह, लगन और राष्ट्रसेवा की भावना से प्रभावित होकर अरविंद उन्हें अपना दाहिना हाथ कहते थे। जतिन यह सब कार्य सरकारी सेवा में रहते हुए कर रहे थे। उनकी सरकार विरोधी इन गतिविधियों की किसी को भनक भी नहीं लगती थी। अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण वे युवकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। वे उनसे कहते – "इंसान बनो, गीता पढ़ो और मृत्यु से कभी मत डरो।" सन् 1910 की बात है। कोलकाता हाईकोर्ट के भीड़ भरे आँगन में एक क्रांतिकारी ने सरकारी वकील की हत्या कर दी थी। इस मामले में अपने अनेक साथियों के साथ जतिन भी गिरफ्तार हुए। उन पर 'हावड़ा षड्यंत्र केस' के नाम से मुकदमा चला, पर साक्ष्य के अभाव में सब लोग छूट गए परंतु जतिन सरकार की आँखों में तो खटक ही रहे थे।

जतिन ने अपनी पूरी शक्ति क्रांतिकारी आंदोलन को संगठित करने में लगाई। उन्होंने अनेक छोटे-छोटे दलों को एक में मिलाया और उनके प्रयत्न से 'युगांतर पार्टी' और भी सुदृढ़ हुई। क्रांतिकारियों को अपना कार्य जारी रखने के लिए धन की बड़ी आवश्यकता थी। इसी से वे शस्त्र खरीद सकते थे। गुप्त संगठन होने के कारण किसी से खुलेआम चंदा माँगना संभव नहीं था। इसलिए धनी व्यक्तियों और व्यावसायिक संस्थाओं से बलपूर्वक धन वसूलना पड़ता था। जतिन के दल को भी ऐसे अनेक कार्य करने पड़े। इनमें 'गार्डनरीच' और 'बलियाघाट' की घटनाएँ विशेष प्रसिद्ध हुईं। इनमें क्रांतिकारियों के हाथ पर्याप्त धन लगा था। जतिन और उनके साथियों का देश के बाहर चल रहे क्रांतिकारी आंदोलन से भी संबंध था परंतु बाहर से हथियार मँगाने में उन्हें सफलता नहीं मिली। सरकार के खुफ़िया विभाग को यह पता चल गया कि जतिन का पथरियाघाट का घर क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र है और वहीं सारी योजनाएँ बनती हैं। एक दिन पुलिस ने अपना एक मुखबिर उनके घर भेजा। क्रांतिकारियों को ज्यों ही उसकी असलियत का पता चला, वह जीवित नहीं लौट पाया।

उसी दिन से ब्रिटिश सरकार की पूरी शक्ति जतिन के पीछे लग गई वे और उनके साथी स्थान बदलते रहे पर अंत में पुलिस को उनके छिपने के एक अड्डे का पता चल गया। पुलिस दलबल के साथ उस अड्डे को जब तक घेरती, जतिन और साथी वहाँ से भी निकल गए। वे भूखे-प्यासे, कँटीली झाड़ियों और दलदल को पार करते हुए 20 किलोमीटर दूर बालासोर के जंगल में जा पहुँचे लेकिन पुलिस को उस स्थान का भी पता लग गया। उसने एक चाल और चली आसपास के गाँवों में यह झूठा प्रचार करा दिया कि जंगल में चार-पाँच डाकू छिपे हुए हैं। इस मिथ्या प्रचार के कारण गाँव वाले धोखे में आ गए और वे भी पुलिस के साथ हो लिए।

9 सितंबर, 1915 ई. को पुलिस दल ने उस स्थान को चारों ओर से घेर लिया लेकिन इस प्रकार घिर जाने पर भी जतिन घबराए नहीं। उनके साथ चार क्रांतिकारी युवक और थे–चित्तप्रिय, मनोरंजन, नीरेन और ज्योतिष। एक ओर इन क्रांतिकारियों के पास केवल माउज़र पिस्तौलें थीं और दूसरी ओर आधुनिक हथियारों से लैस सैकड़ों की संख्या में अंग्रेज़ों की पुलिस और गुमराह गाँव वाले थे। पुलिस ने चारों ओर ऐसा जाल बिछाया था कि उससे

बचकर निकलना असंभव था। फिर भी क्रांतिकारियों के बलिदान भावना को जानते हुए पुलिस आगे बढ़ने में हिचकिचा रही थी। उसने रेंगते हुए आगे जाने का निश्चय किया। क्रांतिकारियों ने ज्यों ही देखा कि पुलिस वाले उनकी पिस्तौलों की मार के अंदर पहुँच चुके हैं, वे गोलियाँ चलाने लगे। पुलिस दल ने भी गोली-बारी शुरू कर दी, क्रांतिकारियों की गोलियों से अनेक पुलिसकर्मी दम तोड़ चुके थे लेकिन उनकी संख्या बहुत अधिक थी। वे गोली चलाते हुए आगे बढ़ते गए। पुलिस की गोली से पहले शहीद होने वाले क्रांतिकारी थे–चित्तप्रिय। जतिन को भी कई गोलियाँ लग चुकी थीं। फिर भी वे लोग आख़िरी गोली तक पुलिस का सामना करते रहे। दोनों ओर से 75 मिनट तक गोलियाँ चलती रहीं। ज्यों ही क्रांतिकारियों की ओर से गोलियाँ चलनी बंद हुईं, पुलिस ने इन घायल युवकों को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें अस्पताल ले जाया गया। जतिन का ऑपरेशन हुआ पर उसके बाद ही भारत माँ का यह सपूत सदा के लिए चल बसा। शेष युवकों पर मुकदमा चला। नीरेन और मनोरंजन को फाँसी की सज़ा हुई और ज्योतिष को आजीवन कारावास की सज़ा भोगने के लिए जेल में डाल दिया गया। मुकदमे की कार्यवाही के समय न्यायाधीश ने बचाव पक्ष के वकील से जतिन का एक लेख पढ़कर सुनाने के लिए कहा। लेख सुनकर न्यायाधीश के मुँह से अकस्मात् निकल पड़ा–"यदि यह वीर जीवित होता तो विश्व का नेता होता।" जतिन महान क्रांतिकारी तो थे ही, वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी भी थे। अंग्रेज़ी और बंग्ला भाषा पर उनका अच्छा अधिकार था। वे दोनों भाषाओं में लिखते थे। उनके लेख 'युगांतर' पत्रिका में प्रकाशित होते थे। उनके विचार बड़े प्रगतिशील थे और वे रूढ़ियों तथा विकृत परंपराओं का खुलकर विरोध करते थे। इस कारण साहित्यकारों में उनकी बड़ी प्रसिद्धि थी। क्रांतिकारी साथी तो उनके प्रति भक्तिभाव रखते ही थे, अपनी असाधारण निर्भीकता, उच्च मानवीय गुणों, बौद्धिक क्षमता और आध्यात्मिक रुचि के कारण वे विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर और प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता चित्तरंजन दास की प्रशंसा के पात्र बन गए थे।

देश के लिए संघर्ष करते हुए अपना जीवन न्योछावर करने वाले लोग निराले ही होते हैं। उनका बलिदान आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता है और इतिहास के पृष्ठों में उनका नाम सदा के लिए अंकित हो जाता है। बाघा जतिन एक ऐसे ही अमर बलिदानी थे।

शब्दार्थ

- निर्भीक = निडर, बिना भय के
- गुथम -गुत्था = लड़ना, झगड़ा करना, हाथापाई
- बिगडैल = पागल
- हीनता = क्षुद्रता
- लज्जित = बेइज्ज़त
- सन्यासी = साधु, तपस्वी
- मिथ्या = झूठा, बेबुनियाद
- क्रांतिकारी = आंदोलन करने वाले, विरोध करने वाले

उच्चारण करें

यतींद्रनाथ स्वभाव निर्भीकता राष्ट्रसेवा अकस्मात् स्तब्ध

अध्यापन संकेत–

विद्यार्थियों को देश सेवा के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) यतींद्रनाथ मुखर्जी को किस नाम से उद्घोषित किया जाता था?

(ख) गाँव को बाघ से मुक्त करवाने के लिए यतींद्रनाथ ने क्या कदम उठाया?

(ग) बाघा जतिन का जन्म कब हुआ था?

(घ) बंग–भंग आंदोलन किस सन् में हुआ था?

(ङ) यतींद्रनाथ मुखर्जी की मृत्यु कौन–से सन् में हुई?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) यतींद्रनाथ जी ने किन कारणों से विदेशी सरकार की नौकरी स्वीकार की?

....

(ख) मुखर्जी को किन–किन महापुरुषों ने प्रभावित किया?

....

(ग) आंदोलन संगठित करने के लिए यतींद्र द्वारा किए गए कार्य बताइए।

....

(घ) स्त्रियों के साथ घटित किस घटना ने जतिन के स्वाभिमान को चुनौती दी? वर्णित करें

....

(ङ) जतिन के अलावा और किन युवाओं के साथ पुलिस की मुठभेड़ हुई?

....

3. दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) जतिन बड़े साहसी तथा निर्भीक .... के थे।

(ख) अपनी .... के मद में अंग्रेज भारतीयों को .... की दृष्टि से देखते थे।

(ग) यतींद्रनाथ झपटकर छत पर बैठे .... पर टूट पड़े।

(घ) जतिन बंकिमचंद्र चटर्जी के उपन्यास .... से बहुत प्रभावित थे।

(ङ) इंसान बनो, पढ़ो और .... से कभी मत डरो।

4. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) यतींद्रनाथ का बाघा जतिन नाम किस कारण से पड़ा?

बाघ को बचाने के कारण ☐ बाघ को भगाने के कारण ☐

बाघ को मारने के कारण ☐ इनमें से कोई नहीं ☐

(ख) बाघ के द्वारा कौन-सा क्षेत्र अधिक प्रभावित था–

कोलकाता ☐ चट गाँव ☐ कोया गाँव ☐ गया ☐

(ग) किस सरकार के शासन काल में जतिन ने 'युगांतर पार्टी' को सुदृढ़ किया?

अमेरिकी सरकार ☐ अंग्रेज़ सरकार ☐

अफ्रीकी सरकार ☐ ऑस्ट्रेलिया सरकार ☐

(घ) जतिन के साथ अंग्रेजो से मुठभेड़ करने वाले अन्य कितने और क्रांतिकारी थे?

10 ☐ 4 ☐ 5 ☐ अनगिनत ☐

(ङ) अंग्रेज़ी सरकार से क्रांतिकारियों की मुठभेड़ कब तक चली?

55 मिनट ☐ 65 मिनट ☐ 75 मिनट ☐ 85 मिनट ☐

5. सही कथन पर (✓) अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) बाघा जतिन एक लंबा चाकू लेकर बाघ से भिड़ गए। ☐

(ख) यतींद्रनाथ मुखर्जी का जन्म 8 दिसंबर 1879 ई. को हुआ। ☐

(ग) 'आनंद मठ' से जतिन को कोई प्रभाव नहीं पड़ा। ☐

(घ) 1905 के बंग-भंग आंदोलन से कई क्रांतिकारी प्रेरित हुए। ☐

(ङ) यतींद्रनाथ बहुत डरे हुए और कमज़ोर प्रवृति वाले व्यक्ति थे। ☐

6. दिए गए शब्दों का मिलान कीजिए।

भगिनी निवेदिता	फाँसी की सज़ा
बंकिमचंद्र चटर्जी	1905
बंग भंग आंदोलन	स्वामी विवेकानंद की अनुयायी
मनोरंजन	पत्रिका
युगांतर	आनंद मठ

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

7. न्यायधीश के द्वारा यतींद्रनाथ के लेख पर की गई टिप्पणी से आप क्या समझते है।? सोच-विचार करके लिखिए।

....

....

....

....

....

....

8. दिए गए शब्दों को विविध भाषाओं से हिंदी में स्वीकृत किया गया है। इनके अर्थ लिखिए।

फायदेमंद	–	यकीन	– ....
दरम्यान	–	बावजूद	– ....
आइडिया	–	परचम	– ....
बेहतरीन	–	कन्फ्यूजन	– ....

9. दिए गए संज्ञा शब्दों को विशेषण शब्द में लिखिए।

परिश्रम	–	स्वभाव	– ....
मधुरता	–	वर्ष	– ....
आवश्यकता	–	साहित्यकार	– ....
मोटापा	–	विरोध	– ....
क्रांतिकारी	–	धनी	– ....

10. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

शहरी	–	व्यवस्थित	– ....
कृत्रिम	–	प्राकृतिक	– ....
समाधान	–	आदमीयत	– ....
असहृय	–	मानवता	– ....
विश्वास	–	तिरस्कार	– ....

11. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेदन करके लिखिए।

यतींद्रनाथ – ....

लज्जित – ....

सर्वोच्च – ....

क्रांतिकारी – ....

गार्डनरीज – ....

12. दिए गए शब्दों से वाक्य निर्माण कीजिए।

निर्भीक – ....

हीनता – ....

बग्घी – ....

आकर्षक – ....

मुखबिर – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

13. यतींद्रनाथ जी अन्य क्रांतिकारियों से किस प्रकार भिन्न थे? कक्षा में चर्चा करें।

....

....

....

....

14. यतींद्रनाथ के ऐसे कौन-से गुण थे जिनके कारण चित्तरंजन दास ने उनकी प्रशंसा की? अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. मानव सेवा करके भी राष्ट्र की सेवा की जा सकती है। आप राष्ट्र की सेवा में किस तरह अपना सहयोग देना चाहेंगे?

अध्याय 14

भारत की सांस्कृतिक एकता
(निबंध)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

अनेकता में एकता द्वारा राष्ट्र प्रगति संभव है।

देश राष्ट्रीयता का एक आवश्यक उपकरण है। भारत-भूमि की नदियों के प्रवाह को प्राकृतिक विभाजन-रेखाएँ बतलाकर तथा भाषाओं, धर्मों एवं रीति-रिवाज़ों के भेद को आधार बनाकर हमारी राष्ट्रीयता के विचार को खंडित करने के उद्देश्य से हमारे कुछ हितचिंतक इस देश को देश न कहकर एक उपमहाद्वीप कहते हैं। हमारी राष्ट्रीयता को चुनौती देने के निमित्त उत्तर-दक्षिण, अवर्ण-सवर्ण, हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन के भेद करके हमारी संगठित इकाई को क्षति पहुँचाई गई। भाषा का बवंडर उठाया गया, ताकि आपसी झगड़ा और भेदभाव में हमारी शक्ति का ह्रास हो और विदेशी शासकों का राज्य अटल बना रहे।

पहले तो प्राय: सभी देशों में जाति, भाषा और धर्मगत भेद हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में ही कई जातियाँ हैं। वहाँ

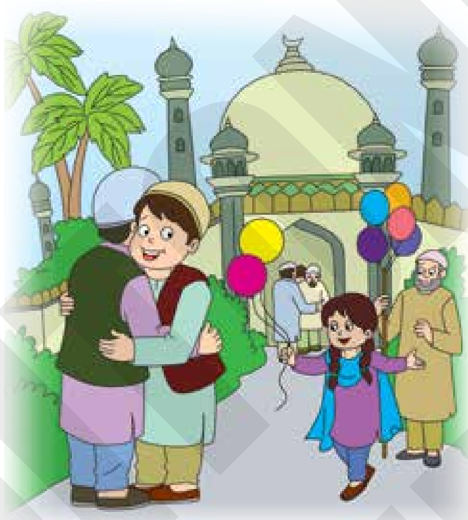

कई भाषाएँ बोली जाती हैं, किंतु एक केंद्रीय भाषा सबको मिलाए हुए है। स्विट्ज़रलैंड में जर्मन, फ्रांसीसी तथा इतालवी तीन भाषाएँ बोली जाती हैं। फिर भी वह एक सुसंगठित राष्ट्र है। इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया एक भाषाभाषी होते हुए भी भिन्न-भिन्न राष्ट्र हैं। जिस देश में भेद नहीं, उसकी इकाई शून्य या गणितशास्त्र की इकाई की भाँति दरिद्र इकाई है। संपन्नता भेदों में ही है, किंतु भेद इतने न होने चाहिए कि उनमें सामंजस्य न रहे।

वैसे तो केंचुआ भी एक इकाई है, उसमें आँख, कान, नाक और हाथ-पैर का भेद नहीं, केवल एक ही स्पर्शेन्द्रिय सारी ज्ञानेंद्रियों का प्रतिनिधित्व करती है, किंतु क्या उसका जीवन संपन्न कहा जाएगा? मनुष्य अपने अवयवों के बाहुल्य और उनके समायोजन और संगठन के कारण जीवधारियों में सबसे अधिक विकसित और श्रेष्ठ गिना जाता है।

भेदों के अस्तित्व से इंकार करना मूर्खता होगी और उनकी उपेक्षा करना अपने को धोखा देना होगा।

हमारे समाज में भेद और अभेद दोनों ही हैं। हमारे देश में शासकों ने अपने स्वार्थवश हमारे भेदों को अधिक विस्तार दिया जिससे हमारे देश में फूट की बेल पनपे और इस भेद–नीति से उनका उल्लू सीधा हो। हमारे अभेदों की उपेक्षा की गई या उनको नगण्य समझा गया। हममें हीनता की मनोवृत्ति पैदा हो गई। देश की नदियाँ, जिनको विभाजन–रेखाएँ कहा जाता है, हमारी भूमि को उर्वरा, शस्य–श्यामला बनाती हैं। हमारी भौगोलिक इकाई हिमालय पर्वत और सागर से है उसे छिन्न–भिन्न किया गया है। इसमें कुछ राजनीतिक स्वार्थ भी सहायक हुए। प्राचीन काल में राष्ट्रीयता की धारा अबाधित तो नहीं रही है, आंतरिक द्वेष कभी–कभी प्रबल हो उठे हैं, किंतु भारतवासी एकछत्र सार्वभौम से अपरिचित न थे। राजसूय, अश्वमेध आदि यज्ञ ऐसे ही राज्य की स्थापना के ध्येय से किए जाते थे। इसके द्वारा टूटी हुई राष्ट्रीय एकता जुड़कर अविरल धारा का रूप धारण कर लेती है।

राजनीति की अपेक्षा धर्म और संस्कृति मनुष्य के हृदय के अधिक निकट हैं। यद्यपि राजनीति का संबंध भौतिक सुख–सुविधाओं से है फिर भी जनसाधारण जितना धर्म से प्रभावित होता है, उतना राजनीति से नहीं। हमारे भारतीय धर्मों में भेद होते हुए भी उनमें एक सांस्कृतिक एकता है, जो उनके अविरोध की परिचायक है। वही त्याग और तप एवं मध्यम मार्ग की संयममयी भावना हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख संप्रदायों में समान रूप से विद्यमान है। एक धर्म के आराध्य दूसरे धर्म के महापुरुष के रूप में स्वीकार किए गये हैं। भगवान बुद्ध तो अवतार ही माने जाते हैं। 'कलियुगे कलिप्रथम–चरणे बुद्धावतारे' कहकर प्रत्येक धार्मिक संकल्प में हम उनका पुण्य स्मरण कर लेते हैं। भगवान ऋषभदेव का श्रीमद्भागवत् में परम आदर के साथ उल्लेख हुआ है। जैन धर्म ग्रंथों में भगवान राम और कृष्ण को तीर्थंकर नहीं बल्कि उनसे एक श्रेणी नीचे का स्थान मिला है। अन्य देवी–देवताओं को भी उनके देवमंडल में स्थान मिला है। भारत में उद्भूत प्रायः सभी धर्म आवागमन में विश्वास करते हैं। मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा की शिक्षा हिंदू जैन और बौद्ध धर्मों में समान रूप से प्रतिष्ठित है– स्वास्तिक चिह्न और ओंकार मंत्र हिंदुओं और जैनों में समान रूप से मान्य है। कमल और हाथी तथा अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) बौद्धों और हिंदुओं में समान रूप से पूज्यनीय माने जाते हैं। जैनों के अणुक्षत हिंदू–धर्म के योगशास्त्र में 'यम' और बौद्धों के पंचशील प्रायः एक ही हैं। पारसियों और हिंदुओं में अग्नि की पूजा समान रूप से होती है। जेंदावेस्ता की गाथाओं और वैदिक ऋचाओं में भाषागत समानता है। पारसी लोग गोमांस नहीं खाते।

सिख गुरुओं ने हिंदू–धर्म की रक्षा में योग ही नहीं दिया वरन् उसके लिए कष्ट और अत्याचार भी सहे। उन्होंने, विशेषकर गुरु नानक और गुरु गोविंद सिंह ने, हिंदी में कविता की है। उनके धर्मों में राम–नाम की महिमा गाई गई है। गुरु गोविंद सिंह ने चंडी (दुर्गा देवी) का भी स्तवन किया है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में कबीर आदि महात्माओं की वाणी आदर के साथ सुरक्षित है, उनका नित्य पाठ होता है। सिखों के गुरु लोग हमारे संतों में अग्रगण्य समझे जाते हैं और उनका आदर के साथ स्मरण किया जाता है।

मुसलमान और ईसाई धर्म एशियाई धर्म होने के कारण भारतीय धर्मों से बहुत समानता रखते हैं। यूरोप से भी पहले ईसाई धर्म को दक्षिण भारत में स्थान मिला है।

कुछ लोगों का तो कहना है कि स्वयं ईसा ने भारत में ही शिक्षा पाई थी। 'दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो जैसा कि तुम दूसरों से अपने प्रति चाहते हो'–ईसा मसीह का यह कथन महाभारत के 'आत्मनः प्रतिकूलनि परेषां न समाचरेत्' का ही पर्याय है। ईसाई की क्षमा और दया बौद्ध धर्म से मिलती–जुलती है। मैं यह नहीं

कहता कि किसने किससे लिया, परंतु इन मौखिक सिद्धांतों में हिंदू, बौद्ध और ईसाई धर्मों में समानता है। रोमन कैथौलिकों की पूजा- अर्चना, धूप-दीप, व्रत-उपवास आदि हिंदुओं से मिलते हैं।

मुसलमानों और ईसाइयों ने यहाँ की संस्कृति को प्रभावित किया है और वे भी यहाँ की संस्कृति से प्रभावित हुए हैं। भारतीय सूफी कवियों ने वेदांत की भावभूमि को अपनाया है और उनके ग्रंथों में हिंदू परंपराओं, कथाओं, विचारों, देवी-देवताओं और प्रतीकों के समावेश हुए हैं। तानसेन और ताज पर हिंदू-मुसलमान समान रूप से गर्व करते हैं। जायसी, रहीम, रसखान, रसलीन आदि अनेक मुसलमान कवियों ने अपनी वाणी से हिंदी की रसमयता बढ़ाई है। रसखान के सवैये तो सचमुच रस की खान हैं।

प्राचीन काल से भारतीय धर्म और साहित्य ने राष्ट्रीय एकता का पाठ पढ़ाया है। सभी काव्य-ग्रंथ, चाहे वे उत्तर के हों चाहे दक्षिण के, रामायण और महाभारत को अपना प्रेरणा स्रोत बनाते रहे हैं। कालिदास के 'रघुवंश' और भवभूति के 'रामचरित' में उत्तर और दक्षिण के प्राकृतिक दृश्यों का बड़ी रसमयता के साथ वर्णन आया है।

हिंदू तीर्थाटन में धार्मिक भावनाओं के साथ राष्ट्रीय भावना भी निहित है। शिवभक्त ठेठ उत्तर की गंगोत्री से जाह्नवी-जल लाकर दक्षिणी सीमा के रामेश्वरम् महादेव का अभिषेक करते हैं। उत्तर में बदरी-केदार, दक्षिण में रामेश्वरम्, पूर्व में जगन्नाथ और पश्चिम में द्वारकापुरी के तीर्थाटन में भारत की चारों दिशाओं की पूजा हो जाती है।

भारत की सात पुरियाँ पवित्र और मोक्षप्रद मानी गई हैं। इनकी भी यात्रा की जाती है और प्रातः स्मरण भी किया जाता है। इनके नाम हैं – अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी), द्वारावती (द्वारका)।

पूरा श्लोक इस प्रकार है-

"अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका।
पूरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका:।।"

स्वामी शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में अपने मठ स्थापित किए थे। उत्तर में ज्योर्तिमठ, दक्षिण में श्रृंगेरी मठ, पूर्व में गोवर्धन मठ और पश्चिम में शारदा मठ। ये भगवान शंकराचार्य की दिग्विजय के कीर्ति स्तंभ ही नहीं वरन् भारत की एकता के भी परिचायक चिह्न हैं। दक्षिण के अन्य आचार्यों के संप्रदाय अविरोध भाव से उत्तर में फले-फूले और विकसित हुए। बंगाल के चैतन्य महाप्रभु के संप्रदाय ने भी मथुरा-वं ृदावन में अपनी शिष्य परंपरा स्थापित की। इन संप्रदायों के मंदिर बने और इनकी पूजा-अर्चना ने उत्तर-प्रदेश के जीवन और साहित्य को प्रभावित किया। हिंदू-साहित्य गगन के सूर्य और शशि-स्वरूप सूर और तुलसी दक्षिण के ही संप्रदायों से प्रभावित थे।

अब भाषा का प्रश्न आता है। उत्तर भारत की प्रायः सभी भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं और उन सभी के शब्दों में पारिवारिक समानता है। दक्षिण की भाषाएँ सभी संस्कृत से प्रभावित हुई हैं। उन्होंने भी थोड़ी-बहुत मात्रा में संस्कृत की शब्दावली ग्रहण की, किसी ने थोड़ा तो किसी ने बहुत। उर्दू को छोड़कर प्रायः सभी भाषाओं की वर्णमाला एक नहीं तो एक-सी है। केवल लिपि का भेद है। मराठी और देवनागरी की लिपि भी समान है। संस्कृत की परिनिष्ठित लिपि होने के कारण देवनागरी प्रायः सभी प्रांतों में पहचानी जाती है। उर्दू की लिपि भेद होते हुए भी हिंदी के साथ भाषा में साम्य है। भाषा की ज़मीन और व्याकरण प्रायः एक से

हैं। बेल-बूटे फारसी-अरबी के हैं। प्रेमचंद, अश्क, सुदर्शन, कृष्ण चंद्र ने हिंदी में भी लिखा और उर्दू में भी। भारत की प्राय: सभी भाषाओं का साहित्य भगवान राम और कृष्ण की पावन गाथाओं से आप्लावित रहा है, सभी ने संतों और वीरों का स्तवन किया है, सभी भाषाआं` के साहित्य ने स्वतत्रंता कीलड़ाई में यागे दान किया हो भाषाआं` का भदे होते हएु भी विचारों की एकध्ययें ता रही है।

भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य का धूमिल इतिहास घुला-मिला-सा प्रतीत होता है। उनके बीच कोई अभेद्य दीवार न थी। मीरा गुजराती और हिंदी में समान रूप से कवयित्री मानी जाती है। मीरा के गीतों से बंगाल भी प्रभावित हुआ है। भूषण की वाणी का महाराष्ट्र में आदर हुआ था। संत तुकाराम आदि महाराष्ट्र-संतों ने अपनी कविता में हिंदी को भी अपनाया था। विद्यापति समान रूप से हिंदी, मैथिली और बंगला के कवि माने जाते हैं। कबीर, दादू आदि संतों का व्यापक प्रभाव रहा है। उन्होंने अपने एकतारे की तान में सारे भारत को बाँध दिया। तुलसीकृत रामायण का मराठी और बंगला में भी अनुवाद हुआ। सूरदास के भजनों को प्राय: सभी प्रांतों के गवैयों ने अपनाया। बँगला के 'वंदेमातरम्' और 'जन-गण-मन' राष्ट्रीय गीत बने। वेश-भूषा, रहन-सहन और शक्ल-सूरत में भेद होते हुए भी भारतवासी अपने जातीय व्यक्तित्व से पहचान लिए जाते हैं।

हमारा एक जातीय व्यक्तित्व है। यह हमारी जातीय मनोवृत्ति, जीवन-मीमांसा, रहन-सहन, रीति-रिवाज़, उठने-बैठने के ढंग, चाल-ढाल, वेश-भूषा, साहित्य, संगीत और कला में अभिव्यक्त होता है। विदेशी प्रभाव पड़ने पर भी बहुत अंशों में अक्षुण बना हुआ है। वही हमारी एकता का मूल सूत्र है।

शब्दार्थ

निमित्त	= कारण	खंडित	= टुकड़े करना	अवयव	= अंग
उद्भूत	= उपजे हुए	अस्तित्व	= सत्ता	स्तवन	= स्तुति
धूमिल	= धुंधला	रसमयता	= सरसता	सवर्ण	= क्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण

उच्चारण करें

उपकरण	बवंडर	सामंजस्य	अग्रगण्य	मुदिया
हितचिंतक	नगण्य	मोक्षप्रद	हास	

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका निबंध के माध्यम से बच्चों को भारत की विभिन्न विविधताओं से परिचित करवाएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भारत देश में किस नीति के आधार पर राष्ट्र के टुकड़े किए गए?

(ख) भूमि को उर्वरा व श्यामला कौन बनाती है?

(ग) राज्य की स्थापना के लिए किस प्रकार के यज्ञ किए जाते थे?

(घ) मनुष्य के हृदय के अधिक निकट क्या है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) किसी देश की संस्कृति से क्या अभिप्राय है?

....

(ख) लेखक के अनुसार मनुष्य श्रेष्ठ प्राणी क्यों हैं?

....

(ग) उपमहाद्वीप का क्या अर्थ है कुछ लोग भारत देश को उपमहाद्वीप क्यों कहते हैं?

....

(घ) उत्तर भारत की सभी भाषाएँ किस भाषा से मिलती है?

....

3. सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए।

भाषा अस्तित्व सामंजस्य संस्कृत

(क) संपन्नता भेदों में ही है, किंतु भेद इतने न हो कि उनमे .... न रहे।

(ख) भारतवासी अपने जातीय .... से पहचान लिए जाते हैं।

(ग) दक्षिण की भाषाएँ .... से प्रभावित हुई है।

(घ) .... की ज़मीन और व्याकरण प्रायः एक से है।

4. सही कथन पर (✓) का तथा गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए।

(क) भारत की चारों दिशाओं में स्वामी शंकराचार्य के मठ स्थापित किए गए थे। ( )

(ख) मुसलमान और ईसाइयों ने भारत की संस्कृति को प्रभावित किया है। ( )

(ग) पारसियों और हिंदुओं में अग्नि की पूजा समान रूप से होती है। ( )

(घ) मीरा को गुजराती और हिंदी भाषा के समान रूप से कवयित्री माना जाता है। ( )

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

5. भारतीय की एकता का मूल स्त्रोत क्या है? अपने शब्द में स्पष्ट करें।

....

....

....

....

....

....

6. हिंदू, बौद्ध एवं जैन धर्म में क्या-क्या समानताएँ है और क्यों हैं? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

7. भारत में धर्मों में भेद होते हुए भी एक सांस्कृतिक एकता है, कैसे?

....

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

8. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए।

(क) राष्ट्र – ....

(ख) जाति – ....

EDUONE INTERNATIONAL

(ग) सम्पन्न – ....

(घ) श्रेष्ठ – ....

9. दिए गए समुच्चयबोधक अव्ययों से वाक्य बनाइए।

(क) यानी –

(ख) परंतु –

(ग) अन्यथा –

(घ) और –

10. दिए गए वाक्यों के भाव पहचानकर विस्मयादिबोधाक चिह्न लगाकर वाक्य को पुनः लिखिए।

(क) कितनी गंदगी फैली है चहुँओर ....

(ख) आगे रेलवे फाटक है ....

(ग) तुमने यह क्या कर डाला ....

(घ) अल्लाह से तो डरो ....

11. दिए गए वाक्यों को सरल, संयुक्त और मिश्र में रचनांतरण कीजिए।

(क) मेरे आँगन में हरी घास है। हरी घास पर बच्चे खेल रहे थे।

सरल – ....

संयुक्त – ....

मिश्र – ....

(ख) बादल गरज रहे थे। वर्षा तेज़ होने लगी।

सरल – ....

संयुक्त – ....

मिश्र – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

12. हमारे देश में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं व बोलियों की सूची तैयार कीजिए।

EDITONE INTERNATIONAL

भाषाएँ	बोलियाँ

13. 'विभिन्न मत-संप्रदान के लोग' विषय पर निबंध लिखिए।

दिए गए चित्र का वर्णन अपने शब्दो में कीजिए।

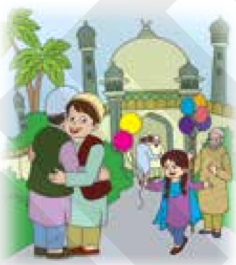

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

14. एक भारत श्रेष्ठ भारत ही हमारी संस्कृति है। आप इस संस्कृति को कैसे कायम रखना चाहेंगे?

अध्याय 15

हिंद महासागर का मोती 'मॉरिशस'

(यात्रा-वृतांत)

अध्ययन से पूर्व

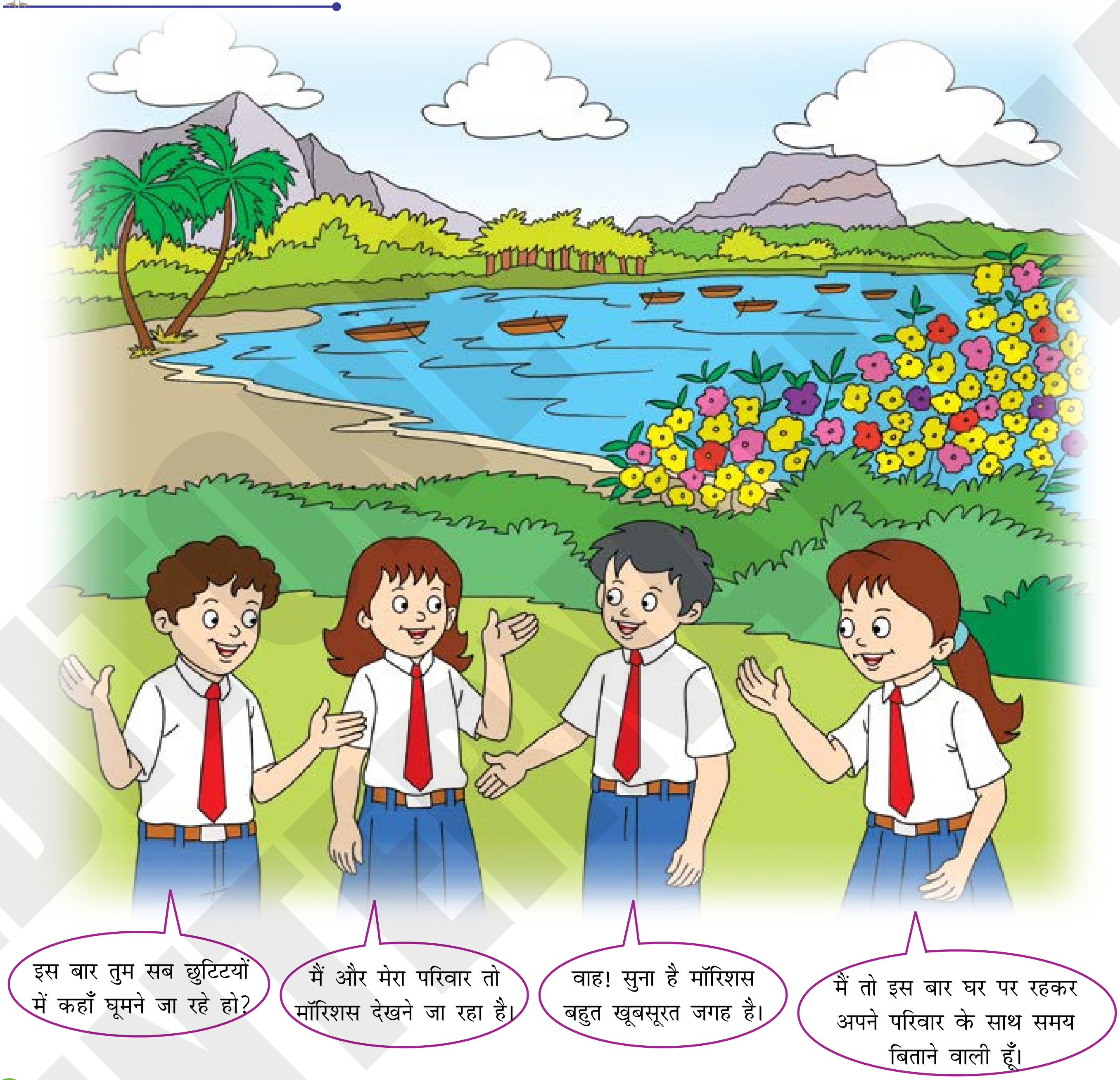

कहानी का मूल तत्व

यात्रा अनुभव द्वारा जानकारी एकत्रित करना।

मुंबई से ठीक छह घंटे की उड़ान पूरी करने के बाद हमारा विमान सर शिवसागर रामगुलाम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने लगा। पृथ्वी के निकट आते ही वनस्पतियाँ दिखने लगीं और जल के बीच उभरने लगा मॉरिशस द्वीप, जिसे हिंद महासागर का मोती कहा जाता है।

हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही एक नया परिदृश्य था। ऊपर उभरा हुआ-सा एक विस्तृत भूखंड। खूबसूरत सड़कें। नारियल के छोटे-छोटे पंक्तिबद्ध वृक्ष। हवाई अड्डे से पोरलुई (पोर्ट लुइस) बहुत दूर शायद दूसरे छोर पर है। रास्ते का दृश्य अपने सौंदर्य के खुलेपन और हरेपन से चकित कर रहा था। क्षितिज तक फैली हरियाली। गन्ने के खेत। ऊँची-ऊँची असम भूमि। कहीं-कहीं टीले। कहीं छोटी पहाड़ियाँ। छोटे-छोटे वृक्ष। केले के बगीचे।

तेज़ रफ़्तार से गाड़ी भाग रही है। जैसी सड़कें, वैसी ही कीमती कारें। ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ घूमती सड़कें और उन पर चलने वाला आदमी नाम का प्राणी कोई नहीं। इस देश में जनसंख्या का दबाव बहुत कम है। मॉरिशस की कुल आबादी बारह लाख है। इसमें आठ लाख भारतीय मूल के लोग हैं। शेष चार लाख में क्रियोल, फ्रेंच, चीनी और अन्य। यहाँ मुख्यतः हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्मावलंबी ही हैं। मॉरिशस में अफ्रीकी, चीनी, भारतीय, यूरोपीय, पुर्तगाली आदि संस्कृतियों का अद्भुत सामंजस्य देखा जा सकता है।

हमें हवाई अड्डे से लगभग 45 किलोमीटर दूर क्वात्रे बोर्नस के एक होटल ब्लू आर्किड में ठहराया गया। घनी हरियाली के बीच यह एक सुंदर-सा छोटा शहर है। सादा, शांत, स्वच्छ। मॉरिशस के शहरों, कस्बों और गाँवों में गन्ने के खेत इस तरह फैले हुए हैं कि पता ही नहीं चलता, खेतों में शहर हैं या कि शहरों में खेत। क्वात्रे बोर्नस भी एक ऐसा ही शहर है।

होटल से तैयार होकर हम लोग शहर का नजारा लेने निकले। ऐसा लग रहा था जैसे अपने देश के ही किसी कसबे में टहल रहे हों। हम सड़कों, मकानों, लोगों और वनस्पतियों को देखते हुए चल रहे थे। रास्ते में आम का एक वृक्ष था, जिसमें पकने के करीब सिंदूरी आम लटक रहे थे। छितवन, गूलर, पाकड़ के भी एक-दो पेड़ दिखे। दो-तीन पीपल के पुराने वृक्ष भी। बाद में नीम, इमली, चीड़, गुलमोहर आदि के वृक्ष भी दिखे।

मुझे बताया गया कि यहाँ जंगलों में चंदन के भी वृक्ष हैं, जिनकी लकड़ी का उपयोग हवन में किया जाता है। हम एक चर्च में गए। इसके सामने एक छोटी-सी पहाड़ी और पीछे एक विशाल कब्रगाह थी।

मेरे चश्मे का एक शीशा हवाई जहाज़ में ही निकल गया था, उसे लगाने के लिए सिर्फ़ एक कील की ज़रूरत थी। लेकिन महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, मोका के भारतीय हिंदी अध्यापक सुरेश ऋतुपर्ण ने मुझे सलाह दी कि मैं वहाँ किसी दुकान पर चश्मा ठीक करने को न दूँ, बहुत महँगा पड़ेगा। अंत में सदानंद शाही ने भारत की अप्रतिम टेक्नालॉजी अर्थात 'जुगाड़' से उसे काम चलाऊ कर दिया।

मॉरिशस में लगभग सारा सामान बाहर से ही आता है। मॉरिशस हिंद महासागर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक प्राकृतिक द्वीप माना जाता है क्योंकि यहाँ से निकटतम भूखंड मेडागास्कर 500 मील पश्चिम में है। अफ़्रीका का पूर्वी समुद्र तट 1265 मील, मुंबई का 2875 मील और आस्ट्रेलिया का समुद्र तट 3625 मील की दूरी पर है। यहाँ खाने-पीने का सामान भी भारत, अफ़्रीका और यूरोप से आता है।

यहाँ की 90 प्रतिशत ज़मीन पर गन्ना बोया जाता है। पूरे द्वीप में जहाँ तक दृष्टि जाती है, गन्ना ही गन्ना। आय का दूसरा साधन पर्यटन है। मॉरिशस का नैसर्गिक सौंदर्य है ही इतना आकर्षक कि उसे निहारने के लिए सारी दुनिया से पर्यटक आते रहते हैं। कभी यहाँ चीनी बनाने की 300 मिलें थीं। अब बड़ी क्षमतावाली 18 मिलें हैं। इधर वस्त्र और सिलाई उद्योग विकसित हुआ है। इंग्लैंड, फ्राँस, जर्मनी, जापान आदि के उद्योगपति यहाँ पूँजी लगा रहे हैं।

सरकार की ओर से प्रत्येक नागरिक के लिए दवाई और इंटरमीडिएट तक की शिक्षा का निःशुल्क प्रबंध है। उच्च शिक्षा भी सस्ती है। यहाँ सबसे गरीब हैं अफ़्रीकी मूल के क्रियोल। इनके पूर्वजों को डच और फ्रेंच लोग गुलामों के रूप में यहाँ लाए थे। फ्रेंच क्रियोल अपेक्षाकृत संपन्न है। खेती का अधिकांश भाग इनके और मुसलमानों के हाथ में है।

मैं मॉरिशस के कुछ गाँवों में भी गया। गाँवों तक जानेवाली सड़कें बहुत बेहतर हैं। गाँव के छोटे-छोटे घर साफ़-सुथरे और सुसज्जित हैं। उनमें टेलीफोन और कंप्यूटर की भी व्यवस्था है। 'बैठकों' की परंपरा यहाँ शरू से रही है। गिरमिटियों ने अपने को एकजटु करने और अपने सुख-दुख को बाँटने के लिए ऐसी बैठकों की शुरुआत की थी।

यहाँ के अधिकांश लोग अपनी खेती-किसानी या व्यापार करते हैं। जिनके पास ज़मीन अधिक है, वे वेतनभोगी मज़दूर भी रखते हैं। इन मजदूरों को बिना मुआवज़ा दिए नौकरी से हटाया नहीं जा सकता। खेती पर सीलिंग नहीं है। फसलों का बीमा होता है। गन्ने की फसल एक बार बो देने के बाद न्यूनतम सात वर्ष तक काटी जाती है। कहीं-कहीं तो बारह-चौदह वर्ष तक चलती है। एक एकड़ में लगभग चालीस टन गन्ना पैदा होता है।

मॉरिशस के भारतवंशियों में अपने नाम के साथ अपने उस पूर्वज का नाम लगाने की प्रथा है जो पहली बार इस द्वीप में आया था। नामों के साथ 'रामगुलाम' 'जोखू', 'गंगू', 'संतोखी', 'प्रयाग' आदि इसी प्रकार की संज्ञाएँ हैं। यहाँ आर्य समाज और सनातन धर्म की संस्थाएँ सक्रिय रही हैं। अधिकांश स्थानों के नाम भी भारतीय हैं। पिता की संपत्ति में कन्या का भी समान अधिकार होता है। लड़की भी परिवार के साथ लड़का देखने जाती है। संयुक्त परिवार अभी तो हैं पर बिखराव तेज़ी से शुरू हो गया है।

मॉरिशस का कुल क्षेत्रफल 720 वर्गमील है। पाँच शहर हैं—पोर्टलुई, बोवासाँ, क्वात्रे बोर्नस, बाक्वा और क्यूर्पिप और नब्बे गाँव हैं। शहरों में सबसे बड़ा है पोर्टलुई। चारों दिशाओं में मॉरिशस के समुद्र तट बहुत ही सुंदर हैं। उनका सफ़ेद बालू तथा नीला, काला और हरा जल पर्यटकों को आकर्षित करता है। समुद्र तटों पर झौवा वृक्ष और आसपास मनोरम वन हैं। इन वनों में हिंसक पशु नहीं पाए जाते।

यहाँ साँप-बिच्छू भी नहीं होते। ब्लू आर्किड होटल के कमरे का परदा हटाते ही शीशे की खिड़की से बाहर का अधिकांश हिस्सा दिखता है।

स्वच्छ, हरा-भरा, शांत। कोई भीड़-भाड़ नहीं। न सड़क पर, न दुकानों पर। लगता ही नहीं कि शहर हो। सादे, संतुलित, सौम्य मकान। एक या दो मंज़िले। केवल कांपलैक्स वाले भवन कुछ ऊँचे। एक-दो मकान ही पाँच-छह मंज़िलवाले। एक-दो पाम वृक्षों के अलावा वृक्ष भी ऊँचे नहीं। सभी मकानों के बराबर या उनसे छोटे।

थोड़ी-थोड़ी दूर पर ट्रैफ़िक कंट्रोल करने वाली बत्तियाँ, पैदल चलने के लिए फुटपाथ, जो सड़क के अनिवार्य हिस्से जैसे लगते हैं। यहाँ कोई हार्न नहीं बजाता। सड़क पर इतनी गाड़ियाँ

मगर इतना कम शोर। घरों के आसपास वनस्पतियाँ और चहार-दीवारियों की जगह कटी हुई हरी-हरी झाड़ियाँ, दूर क्षितिज पर छोटी नुकीली पहाड़ियाँ और तलहटी में हरे-भरे खेत। पहाड़ियों पर तैरते रुई के फाहे जैसे बादल।

मॉरिशस में मौसम दो ही प्रकार का होता है, नवंबर से अप्रैल तक गरमी और मई से अक्टूबर तक सरदी। इस छोटे से भूखंड में एक ही समय में भिन्न-भिन्न स्थानों पर मौसम का अलग-अलग रंग भी दिखता है।

शब्दार्थ

पंक्तिबद्ध = लाईन से
सामंजस्य = मेल
धर्मावलंबी = धर्म को मानने वाला
मुआवज़ा = हानि होने पर दिया जाने वाला धन
अधिकांश = ज़्यादातर
अनिवार्य = ज़रूरी
आकर्षित = जो आँखों का भाय

उच्चारण करें

कांपलैक्स पर्यटकों ट्रैफ़िक कंट्रोल संयुक्त संतुलित

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को 'मॉरिशस' की संस्कृति एवं प्राकृतिक सुंदरता को विस्तारपूर्वक समझाएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही लेखक ने क्या देखा?

(ख) लेखक ने मॉरिशस में कौन से पेड़ देखे?

(ग) लेखक ने गन्ने का उल्लेख बार-बार क्यों किया है?

(घ) मॉरिशस में सबसे ज़्यादा खेती किस-चीज़ की होती है?

(ङ) मॉरिशस के तटीय क्षेत्र में कौन-से तीन रंग का बालू आकर्षण का केंद्र होती है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) मॉरिशस की आमदनी के मुख्य स्त्रोत क्या है?

....

(ख) मॉरिशस को हिंदमहासागर का मोती क्यों कहा गया है?

....

(ग) मॉरिशस में मौसम कितने प्रकार का होता है एवं उसकी क्या विशेषता है?

....

(घ) मॉरिशस हिंद महासागर के किस छोर पर स्थित है?

....

(ङ) मॉरिशस में सड़क पर यातायात संबंधी क्या ख़ास बात है?

....

3. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए।

(क) मॉरिशस का कुल क्षेत्रफल है-

(i) 520 वर्गमील ☐ (ii) 620 वर्गमील ☐

(iii) 720 वर्गमील ☐ (iv) 110 वर्गमील ☐

(ख) लेखक को किस होटल में ठहराया गया था?

(i) ग्रीन विस्टा ☐ (ii) ब्लू आर्किड ☐

(iii) रेड पास ☐ (iv) सनशाईन ☐

(ग) मॉरिशस का सबसे बड़ा शहर है-

(i) बोवासाँ ☐ (ii) बोर्नस ☐

(iii) क्वात्रे ☐ (iv) पोर्टलुई ☐

(घ) मॉरिशस में सर्दी की अवधि रहती है-

(i) नवंबर से अप्रैल तक ☐ (ii) मई से अक्टूबर तक ☐

(iii) दिसंबर से जून तक ☐ (iv) मार्च से अगस्त तक ☐

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

दबाव तैरते हॉर्न गन्ने सौदा मनोरम

(क) मॉरिशस में कोई .... नहीं बजाता।

(ख) पहाड़ियों पर .... रुई के फाहे जैसे बादल।

(ग) समुद्र तटों पर .... वृक्ष और आसपास .... वन है।

(घ) इस देश में जनसंख्या का .... बहुत कम है।

(ङ) मॉरिशस में .... की पैदावार अधिक होती है।

5. सही मिलान कीजिए।

(क) हिंद महासागर का मोती	मॉरिशस सौंदर्य
(ख) खेती	डच और फ्रेंच लोग
(ग) नैसर्गिक	गन्ना
(घ) गुलाम	मॉरिशस

6. सही कथन पर (✓) का गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए।

(क) मॉरिशस में साँप-बिच्छू नहीं होते। ☐

(ख) मॉरिशस कानून के अनुसार पिता की संपत्ति पर कन्या का भी समान अधिकार होता है। ☐

(ग) चारों दिशाओं में मॉरिशस के समुद्री तट सुंदर है। ☐

(घ) समुद्र तट पर सफेद, नीला, काला बालू और हरा जल पर्यटकों का आकर्षित करता है। ☐

(ङ) समुद्र तट पर सफेद, नीला, काला बालू और हरा जल पर्यटकों का आकर्षित करता है। ☐

7. दिए गए शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) संपत्ति - ....

(ख) क्षेत्रफल - ....

(ग) संस्थाएँ – ....

(घ) न्यूनतम – ....

(ङ) निकटतम – ....

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

8. क्या मॉरिशस सचमुच 'हमवतन' सा है? कैसे और क्यों? लिखिए।

....

....

....

....

....

....

9. मॉरिशस में आने वाले प्रत्येक भारतीय को अपने पूर्वजों के नाम को अपने नाम के साथ लगाने की प्रथा है। क्या ये प्रथा मानवता और धर्मवाद को चिह्नित करती है? अपना सुझाव अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

....

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

10. शुद्ध वर्तनी पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) आर्शीवाद	☐	आशीरवाद	☐	आशीर्वाद	☐	आशीर्विद	☐
(ख) शृंख्ला	☐	श्रंखला	☐	शृँखला	☐	श्रृनख्ला	☐
(ग) दुर्गति	☐	दुरगति	☐	द्रुगति	☐	दुगर्ति	☐
(घ) अंतरराष्ट्रीय	☐	अतरर्राष्ट्रीय	☐	अंतर्राष्ट्रीय	☐	अंतर्र्राष्ट्रीय	☐

11. **दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(क) निर्दयता –
(ख) आकर्षण –
(ग) सहज –
(घ) विद्वता –

12. **दिए गए मुहावरों का अर्थ लिखते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए।**

(क) अंग- अंग मुस्काना – ....

(ख) छठी का दूध याद आना – ....

(ग) पाँचों उँगलियाँ घी में होना – ....

(घ) ईद का चाँद होना – ....

13. **दिए गए वाक्यों को कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए।**

	कर्मवाच्य
(क) मैंने यह दृश्य नहीं देखा।	....
(ख) माली ने फूलों का गुलदस्ता बनाया।	....
(ग) माँ ने पुत्र को पत्र लिखा।	....
(घ) सुरेश फ़िल्म देख रहा है।	....
(ङ) यह किताब हमने पढ़ी।	....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

14. **यात्रा वृतांत के आधार पर बताइए।**

(क) मॉरिशस की कुल जनसंख्या कितनी है? ....

(ख) कुल जनसंख्या में से भारतीय कितने हैं? ....

(ग) शेष लोग कहाँ-कहाँ के नागरिक हैं। ....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

17. **जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी पहचान होती है, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र की संस्कृति एवं सभ्यता उसकी आन होती है। आप अपने राष्ट्र की आन, बान और शान को कैसे बढ़ाना चाहेंगे?**

भारत की 15वीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू
(जीवनी)

केवल पठन हेतु

भारत ने अपनी 15वीं एवं वर्तमान राष्ट्रपति के तौर पर द्रौपदी मुर्मू को चुना है। मुर्मू, प्रतिभा पाटिल के बाद भारत की राष्ट्रपति के रूप में सेवा करने वाली दूसरी महिला है। यह भारत के राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने वाले जनजातीय समुदाय से संबंधित पहली व्यक्ति हैं । इसके साथ ही वह देश की सबसे कम उम्र में राष्ट्रपति बनने वाली पहली महिला भी है।

द्रौपदी मुर्मू का जन्म 20 जून 1958 को ओड़िशा के मयूरभंज जिले के बैदापोसी गांव में एक संथाल परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम बिरंचि नारायण टुडु था । द्रौपदी मुर्मू के दादा और पिता दोनों ही अपने गांव के प्रधान रहें हैं।

द्रौपदी मुर्मू ने अपना व्यवसायिक जीवन एक अध्यापिका के रूप में प्रारंभ किया और बाद में धीरे-धीरे राजनीति में आ गईं। उनका विवाह श्याम चरण मुर्मू से हुआ । उनके यहां दो बेटों और एक बेटी ने जन्म लिया मगर दुर्भाग्यवश दोनों बेटों और उनके पति तीनों की अकाल मुत्यु हो चुकी है। उनकी बेटी का नाम इतिश्री है, वह बैंक में काम करती है, दामाद का नाम गणेश हेम्ब्रम है जो कि एक रग्बी खिलाड़ी है।

साल 1997 में द्रौपदी मुर्मू का राजनीतिक जीवन तब आरंभ हुआ जब उन्होनें राइरंगपुर नगर पंचायत का पार्षद चुनाव लड़ा और जीता । भाजपा के अनुसूचित जनजाति मोर्चा के उपाघ्यक्ष के रूप में कार्य कर चुकी द्रौपदी मुर्मू भाजपा की आदिवासी मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारणी की सदस्य भी रही है।

द्रौपदी मुर्मू ओड़िशा के मयूरभंज ज़िले की रायरंग सीट से 2000 और 2009 में भाजपा के टिकट पर दो बार जीतीं और विधायक बनीं। वह 2000 और 2004 के बीच वाणिज्य, परिवहन और बाद में मत्स्य और पशु संसाधन मंत्री भी बनी ।

द्रौपदी मुर्मू मई 2015 में झारखंड की 9वीं राज्यपाल बनाई गई। झारखंड की पहली महिला राज्यपाल बनने का गौरव भी द्रौपदी मुर्मू के नाम रहा । इस के साथ ही वह किसी भी भारतीय राज्य की राज्यपाल बनने वाली पहली आदिवासी महिला भी हैं।

द्रौपदी मुर्मू ने 24 जून 2022 को अपना नामांकन राष्ट्रपति पद के लिए भरा । इस नामांकन में प्रधानमंत्री मोदी प्रस्तावक और राजनाथ सिंह अनुमोदक थे।

द्रौपदी मुर्मू को वर्ष 2007 में ओड़िशा विधान सभा द्वारा सर्वश्रेष्ठ विधायक के रूप में नीलकंठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। आदिवासी जनजाति से द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति चुने जाने से यह आशा जागी है कि देश में आदिवासियों के हालात पहले से बेहतर हो जाएगें ।

अभ्यास प्रश्न पत्र-1

नाम .... कक्षा .... अनुक्रमांक ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'लाइब्रेरियन' से आप क्या समझते हैं?

....

(ख) विमुद्रीकरण को उपयोग में क्यों लाया जाता है?

....

(ग) रामलाल के अनुसार उसकी सही दौलत क्या है?

....

(घ) सुश्रुत संहिता में क्या वर्णित है?

....

(ङ) डॉ. अब्दुल कलाम की उपलब्धियों को लिखिए।

....

2. नीचे दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ,

नए स्वरों में गाते हैं।

गुन-गुन, गुन-गुन, करते भौंरे,

मस्त उधर मँडराते हैं।

3. नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर (✓) और (×) का निशान लगाइए।

(क) पुस्तकालय दो प्रकार के होते हैं।? ☐

(ख) नोटबंदी के समय 200 रुपये के नोट बदलने पड़े। ☐

(ग) हेमराज लाजवंती का एकमात्र सहारा था। ☐

(घ) दुर्गावास वैद्य अनुभवी थे। ☐

(ङ) प्राचीन समय में वाराणसी एक शहर था। ☐

4. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्या में प्रयोग कीजिए।

(क) पुस्तकालय – ....

(ख) पावन – ....

(ग) सपूत – ....

(घ) लाजवंती – ....

(ङ) वैद्य – ....

5. कर्मधारय, बहुव्रीहि और अव्ययी भाव समास के पाँच-पाँच उदाहरण लिखिए।

	कर्मधारय समास	बहुव्रीहि समास	अव्ययीभाव समास
(क)	....	....	....
(ख)	....	....	....
(ग)	....	....	....
(घ)	....	....	....

6. नीचे दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) किरण – ....

(ख) पुस्तक – ....

(ग) इस्तेमाल – ....

(घ) पुत्र – ....

(ङ) हाथ – ....

7. नीचे दिए गए वाक्यों में से प्रेरणार्थक क्रिया को छाँटकर अलग लिखिए।

(क) रीमा गाय को घास खिलाती है। – ....

(ख) अनिल पक्षियों को दाना डालता है। – ....

(ग) माँ रोहन को जूस पिलाती है। – ....

EDITONE INTERNATIONAL

अभ्यास प्रश्न पत्र-2

नाम	कक्षा	अनुक्रमांक ....

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) राजा शांतनु के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें लिखिए।

....

(ख) आचार्य विनोबा भावे की कताई की योग्यता के संबंध में महात्मा गाँधी ने क्या कहा था?

....

(ग) मास्टर जी एकांकी में किन मूल बातों को बताया गया है?

....

(घ) हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम किसने और कब गिराया था?

....

(ङ) यतींद्रनाथ 'बाघा जतिन' के नाम से क्यों प्रसिद्ध हुए?

....

2. नीचे दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।
ठहरो, अहा! मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा,
तुम्हारे दु:ख मैं अपने में खींच लूँगा।

3. उचित शब्दों के साथ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) मैं .... के कुछ गाँवों में भी गया। (मॉरिशस/नेपाल)

(ख) कोलंबस और .... दो घुमक्कड़ थे, जिन्होंने पश्चिमी देशों के आगे बढ़ने का रास्ता खोजा। (जेम्स कुम/वास्को-डिगामा)

(ग) .... में जर्मन, फ्रांसीसी तथा इतालवी तीन भाषाएँ बोली जाती है। (फिनलैंड/स्विट्ज़रलैंड)

(घ) .... के राजकुमार की सवारी कोलकाता की सड़क पर निकल रही थी। (वेल्स/तुर्की)

4. नीचे दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए।

(क) जो मोक्ष चाहता हो - ....

(ख) जो भूमि उपजाऊ हो - ....

(ग) जो जन्म से अंधा हो - ....

(घ) जिसमें सहनशक्ति हो - ....

5. नीचे दिए गए शब्दों में से प्रत्यय छाँटकर लिखिए।

(क) लघुता - .... (ख) ठेला - ....

(ग) दिखावा - .... (घ) सुनार - ....

(ङ) कथाकार - .... (च) दैनिक - ....

6. नीचे दिए गए वाक्यों में विराम चिह्न का प्रयोग पुनः लिखिए।

(क) वाह कितना सुंदर दृश्य है

....

(ख) हम जल्दी आ जाते परंतु ट्रेन लेट हो गई

....

(ग) राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न भाई थे

....

(घ) हमारे विद्यालय की स्थापना 14 मई 1999 को हुई थी

....

7. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़कर विशेषण के भेद लिखिए।

(क) मेरे घर में तीन पेड़ है। ....

(ख) कुछ ग्राज काजू ले लो। ....

(ग) यह गाय उधर बाँध दो। ....

(घ) हमें स्वच्छ वातावरण में रहना चाहिए। ....

(ङ) अंजलि ने दो किलो अनार खरीदे। ....

EDUTONE INTERNATIONAL